



शिक्षक पात्रता परीक्षा



# बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

Important  
Points



म.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश



**GOUTAM IAS ACADEMY**

An ISO 9001:2015 Certified Institute **UPSC MPPSC SSC BANK VYAPAM**

| Chapter | Topic                                                                                                                                                               | Page No. |
|---------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| 1.      | बाल विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से सम्बन्ध                                                                                                                      | 1        |
| 2.      | विकास एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक                                                                                                                          | 4        |
| 3.      | बाल विकास के सिद्धांत                                                                                                                                               | 6        |
| 4.      | बालकों की मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ                                                                                                            | 8        |
| 5.      | वातावरण एवं वंशानुक्रम का प्रभाव                                                                                                                                    | 10       |
| 6.      | पियाजे, पावलोव, कोहलर और थॉर्नडाइक : रचना एवं आलोचनात्मक स्वरूप                                                                                                     | 16       |
| 7.      | बाल केन्द्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा                                                                                                                | 19       |
| 8.      | बुद्धि की रचना का आलोचनात्मक स्वरूप और उसका मापन, बहुआयामी बुद्धि                                                                                                   | 22       |
| 9.      | व्यक्तित्व और मापन                                                                                                                                                  | 27       |
| 10.     | भाषा एवं विचार                                                                                                                                                      | 33       |
| 11.     | सामाजिक निर्माण के रूप में जेन्डर – जेन्डर की भूमिका, लिंग-भेद और शैक्षिक प्रथाएँ                                                                                   | 36       |
| 12.     | अधिगमकर्ताओं में व्यक्तिगत भिन्नताएँ-भाषा, जाति, लिंग, सम्प्रदाय, धर्म आदि पर आधारित भिन्नताओं की समझ                                                               | 40       |
| 13.     | अधिगम के लिए आकलन और अधिगम के आकलन में अन्तर, भाषा आधारित आकलन, सतत् एवं समग्र आकलन: स्वरूप एवं प्रथाएँ (मान्यताएँ)                                                 | 46       |
| 14.     | अधिगम कर्ताओं की तैयारी के स्तर की आकलन हेतु उपर्युक्त प्रश्नों का निर्माण, कक्षा-कक्ष में अधिगम बढ़ाने आलोचनात्मक चिन्तन तथा अधिगम कर्ता की उपलब्धि के आकलन के लिए | 53       |
| 15.     | अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठ भूमियों के अधिगमकर्ताओं की पहचान                                                                                       | 57       |
| 16.     | अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान                                                                                                  | 60       |
| 17.     | प्रतिभावना सृजनात्मक एवं विशेष क्षमता वाले अधिगम कर्ताओं की पहचान                                                                                                   | 63       |
| 18.     | समस्या ग्रस्त बालक : पहचान एवं निदानात्मक पक्ष                                                                                                                      | 68       |
| 19.     | बाल अपराध कारण एवं प्रकार                                                                                                                                           | 74       |
| 20.     | बच्चे कैसे सोचते हैं एवं सीखते हैं, बच्चे शाला प्रदर्शन में क्यों और कैसे असफल होते हैं?                                                                            | 80       |
| 21.     | शिक्षण अधिगम की मूलभूत क्रियाएँ, बच्चों के अधिगम की रणनीतियाँ, अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में तथा अधिगम का सामाजिक संदर्भ                                    | 87       |
| 22.     | समस्या समाधान कर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बच्चा                                                                                                           | 92       |
| 23.     | बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ, बच्चों की त्रुटियों को अधिगम प्रक्रिया में सार्थक कड़ी के रूप में समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक अवधान एवं रुचि    | 98       |
| 24.     | संज्ञान एवं संवेग                                                                                                                                                   | 104      |
| 25.     | अभिप्रेरणा एवं अधिगम                                                                                                                                                | 110      |
| 26.     | अधिगम में योगदान देने वाले कारक : व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय                                                                                                          | 116      |
| 27.     | निर्देशन एवं परामर्श                                                                                                                                                | 122      |
| 28.     | अभिक्षमता एवं उसका मापन                                                                                                                                             | 129      |
| 29.     | स्मृति एवं विस्मृति                                                                                                                                                 | 131      |

## अध्याय 1

### बाल विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से सम्बन्ध

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

बाल विकास का स्वरूप एवं विशेषताएँ—

1. बाल विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक, सरल एवं स्वाभाविक रूप में सम्पन्न होती है,
2. बाल विकास को छात्रों के लिए, शिक्षक के लिए तथा अभिभावकों के लिए उपयोगी माना जाता है,
3. विकास की प्रक्रिया में आवश्यक परिवर्तन देखा जाता है ये परिवर्तन शारीरिक कार्य एवं व्यवहार आदि में देखा जाता है,
4. बाल विकास एक निश्चित प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि उसमें मानकों का निर्धारण करके विकास स्तर ज्ञात किया जाता है,
5. बाल विकास एक वर्गीकृत प्रक्रिया है क्योंकि इसमें विकास स्तरों का वर्गीकरण करके उनके स्वरूप को निर्धारित किया जाता है,
6. बाल विकास की प्रक्रिया में विविध का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों, नियमों एवं अनुसंधानों के निष्कर्षों का समावेश होता है अतः यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है,
7. बाल विकास में बालकों के विकास स्तर में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है, अतः यह व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. बाल विकास में प्रस्तुत नियम, सिद्धान्त एवं मानक पूर्णता वैधस एवं विश्वनीय होते हैं, अतः यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है,
9. बाल विकास आधुनिक एवं सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि इसमें छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रयोग किया जाता है

### बाल विकास एवं अधिगम का सम्बन्ध—

1. शारीरिक विकास के सर्वश्रेष्ठ होने पर अधिगम की प्रक्रिया तीव्र एवं स्थायी रूप में होती है, इसके विपरीत स्थिति में मन्द होती है,
2. संज्ञानात्मक विकास की उचित स्थिति ही अधिगम को उच्च एवं स्थायी बनाती है,
3. सामाजिक विकास की प्रभावशीलता ही प्रभावी अधिगम का मार्ग प्रशस्त करती हैं,
4. संवेगात्मक स्थिरता के माध्यम से ही बालक सन्तुलित कार्य व्यवहार सीखता है,
5. नैतिक विकास के आधार पर ही छात्र नैतिक कार्यों को एवं गतिविधियों को सीखता है,
6. मानसिक विकास के आधार पर ही छात्रों के द्वारा तर्क, चिन्तन एवं खोज सम्बन्धी गतिविधियाँ सीखी जाती हैं

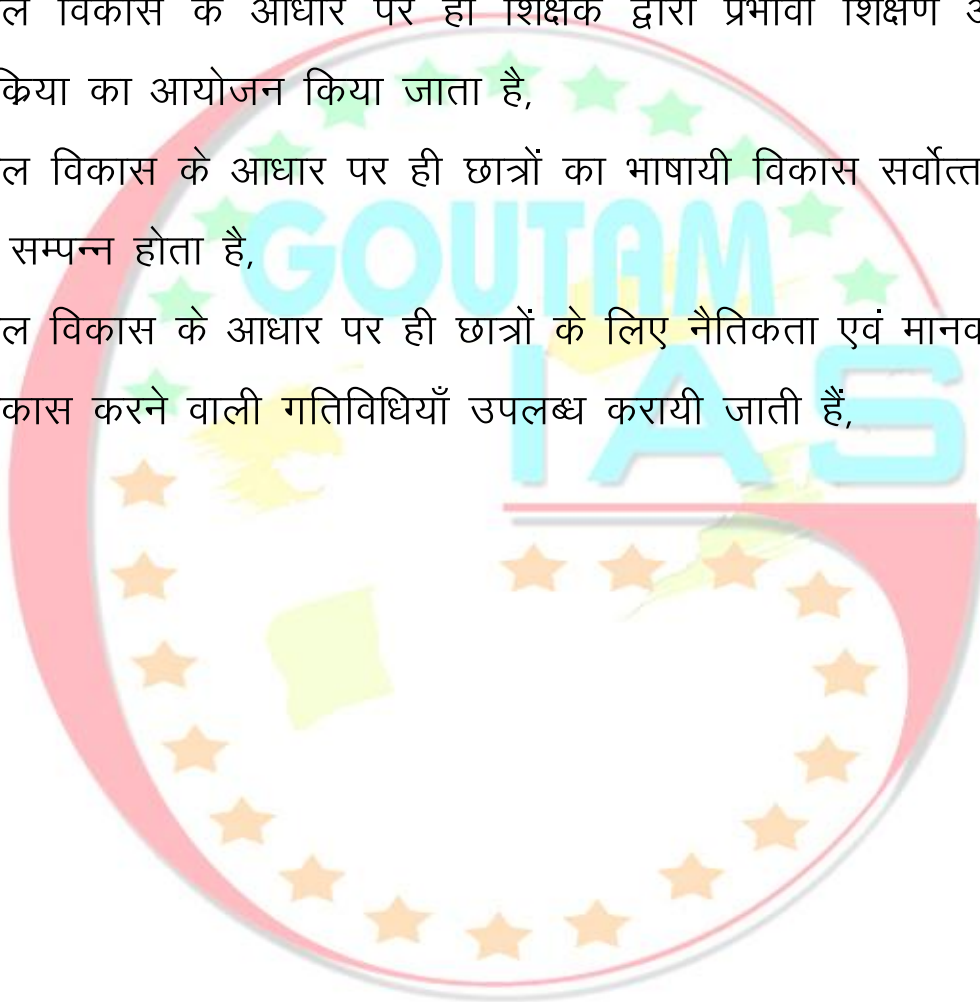
### बाल विकास के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व—

1. बाल विकास के आधार पर ही शिक्षक द्वारा एवं विद्यालयी व्यवस्था द्वारा छात्रों का उचित शारीरिक विकास किया जाता है,
2. बाल विकास के आधार पर ही छात्रों का मानसिक विकास उपलब्ध कराने वाली गतिविधियों का आयोजन विद्यालय में शिक्षक द्वारा किया जाता है,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. बाल विकास द्वारा छात्रों में शिक्षण के माध्यम से तथा विद्यालयी व्यवस्था के माध्यम से सृजनात्मक विकास किया जाता है,
4. बाल विकास द्वारा ही शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता उत्पन्न करने वाली गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती हैं,
5. बाल विकास के आधार पर छात्रों का सामाजिक विकास प्रभावी रूप में सम्पन्न होता है,
6. बाल विकास के आधार पर ही शिक्षक द्वारा प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आयोजन किया जाता है,
7. बाल विकास के आधार पर ही छात्रों का भाषायी विकास सर्वोत्तम रूप में सम्पन्न होता है,
8. बाल विकास के आधार पर ही छात्रों के लिए नैतिकता एवं मानवता का विकास करने वाली गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती हैं,



## अध्याय 2

### विकास एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक

इस अध्याय के प्रमुख बिन्दुओं का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है,

1. विकास एक व्यापक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है जिसका प्रमुख अंग बाल विकास एवं वृद्धि को माना जाता है,
2. विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो कि भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढावस्था तक चलती रहती है,
3. विकास एक प्रगतिशील प्रक्रिया है इसमें सदैव प्रगतिशील एवं सकारात्मक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है,
4. विकास एक सकारात्मक एवं सुधारात्मक प्रक्रिया है इसमें सदैव सकारात्मक उपायों से सुधार की ओर आगे बढ़ा जाता है,
5. विकास की प्रक्रियाओं का अनुसरण किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है, जैसे सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विविध क्षेत्रों का विकास करना,
6. विकास के अन्तर्गत नवीन तथ्यों, नियमों एवं विशेषताओं का विकास होता है, जैसे बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था एवं व्यवहार सम्बन्धी कौशलों का विकास आदि,
7. विकास में संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया का अनुकरण करके एक निश्चित तथ्य नियम एवं सिद्धान्त तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है,
8. विकास एक अनिवार्य प्रक्रिया है जो सरल एवं स्वाभाविक रूप में सम्पन्न होती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. विकास एक व्यावहारिक प्रक्रिया होती है जो संघर्ष, तर्क एवं चिन्तन के माध्यम से विविध व्यवहारों में प्रकट होती है,
10. विकास के अन्तर्गत विविध प्रकार की प्रक्रियाओं का समूह होता है जिसमें विविध क्षेत्रों के लिए पृथक, क्रियाओं का अनुसरण करना पड़ता है

### विकास को प्रभावित करने वाले कारक—

1. परिवार का वातावरण विकास की प्रक्रिया पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है,
  2. विद्यालयी व्यवस्था एवं विद्यालय की गतिविधियाँ विकास की प्रक्रिया पर प्रतिकूल एवं अनुकूल प्रभाव डालते हैं
  3. बालक की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति द्वारा भी बालक पर प्रतिकूल एवं अनुकूल प्रभाव विकास के रूप प्रदर्शित किया जाता है,
  4. आनुवंशिकता द्वारा भी विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया जाता है,
  5. शिक्षक की सामाजिक स्थिति भी अर्थात् शिक्षित एवं अशिक्षित समाज द्वारा भी विकास पर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित किया जाता है,
  6. सांस्कृतिक विकास एवं संस्कृति में समाहित तत्व, परम्पराओं एवं गतिविधियों द्वारा विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया जाता है,
- सामाजिक दर्शन एवं सामाजिक दृष्टिकोण भी विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

## अध्याय—3

### बाल विकास के सिद्धांत

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का वर्णन निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

1. बाल विकास में सदैव प्रगतिशील क्रियाओं का समावेश किया जाता है,
2. बाल विकास के सिद्धांतों में उपयोगी लक्ष्यों एवं क्रियाओं को प्रमुख स्थान दिया जाता है,
3. बाल विकास के सिद्धांत बालकों के विकास को समसामयिक एवं आधुनिक बनाने का प्रयास करके हैं,
4. विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक, सरल एवं स्वाभाविक विकास के सिद्धान्तों पर आधारित होती है,
5. विकास की प्रक्रिया किसी एक स्थान पर सम्पन्न न होकर सार्वभौमिक रूप से सम्पन्न होती है अतः इसमें सार्वभौमिकता के सिद्धान्त का अनुकरण किया जाता है,
6. बाल विकास की प्रक्रिया में व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त कार्य करता है क्योंकि प्रत्येक बालक में विकास गति भिन्न-भिन्न रूपों में होती है—
7. बाल विकास की प्रक्रिया में जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की प्रक्रिया निरन्तरता के सिद्धान्त का अनुकरण करती है,
8. बालक के विकास की प्रक्रिया सिर से पैर की ओर विकास कम के सिद्धांत का अनुसरण करती है,
9. बाल विकास प्रक्रिया में विकास का सम्बन्ध एक दूसरे विकासात्मक पक्षों से होता है, अतः सहसम्बन्ध का सिद्धांत कार्य करता है,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

10. बाल विकास की प्रक्रिया में सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं के सिद्धान्त, समान प्रतिमान के सिद्धान्त तथा वंशानुक्रम एवं वातावरण अनुक्रिया के सिद्धान्त का अनुकरण किया जाता है।

### बाल विकास के सिद्धान्त के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व—

1. बाल विकास की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा छात्रों के विकास में बाल विकास के सिद्धान्त का अनुसरण किया जाता है जिसके आधार पर यह सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रत्येक छात्र के लिए उपलब्ध कराता है,
  2. बाल विकास की प्रक्रिया में अभिभावकों द्वारा अपने बालक बालिकाओं के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया जाता है,
  3. प्रधानाध्यापक द्वारा बाल विकास के सिद्धान्तों के ज्ञान के आधार विद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के अनुरूप गतिविधियों की व्यवस्था की जाती है,
  4. बाल विकास के सिद्धान्तों का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है,
  5. बाल विकास के सिद्धान्तों के आधार पर ही अभिभावक अपने बालकों को उनके विकास में सहायता करने में सक्षम होते हैं,
- बाल विकास के सिद्धान्तों के आधार पर ही शिक्षक, अभिभावक, प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की संयुक्त भूमिका द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता है,

## अध्याय 4

### बालकों की मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### मानसिक स्वास्थ्य—

1. मानसिक स्वास्थ्य एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है,
2. मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर ही बालक समायोजन क्षमता प्राप्त करता है,
3. मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर ही संवेगात्मक विकास सम्भव होता है,
4. मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर बालक का व्यवहार समाजोपयागी, मर्यादित एवं अनुशासित बनता है,
5. मानसिक स्वास्थ्य मानसिक विकास की प्रक्रिया है,
6. मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर बालकों के व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव होता है,
7. मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर ही विविध गतिविधियों के मध्य समन्वयन स्थापित करते हुए कार्य व्यवहार को सर्वोत्तम बनाया जाता है,
8. मानसिक स्वास्थ्य तर्क, चिन्तन एवं विश्लेषण की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है,

9. मानसिक स्वास्थ्य मानव कल्याण की प्रक्रिया है,

#### मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक—

1. मानसिक स्वास्थ्य को प्रथम अवस्था में बालक के परिवार का वातावरण, परिवार की शिक्षा व्यवस्था एवं आर्थिक स्थिति आदि प्रभावित करते हैं,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. विद्यालय का वातावरण जितना अधिक उपयोगी एवं सर्वोत्तम रूप में होगा बालकों का मानसिक स्वास्थ्य भी सर्वोत्तम रूप में विकसित होगा,
3. सामाजिक वातावरण का शान्तिप्रिय, शिक्षित एवं सद्भावना से सम्पन्न स्वरूप मानसिक स्वास्थ्य का विकास करने में सहायक सिद्ध होता है,
4. वंशानुक्रम, सांस्कृतिक गतिविधियों, मनोरंजन के साधन एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी मानसिक स्वास्थ्य के विकास को प्रभावित करते हैं,

### मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ—

1. मानसिक अस्वस्थता के कारण बालकों का व्यक्तित्व सर्वोत्तम रूप में विकसित नहीं हो पाता है।
2. मानसिक अस्वस्थता के आधार पर समायोजन सम्बन्धी समस्या उत्पन्न होती है।
3. मानसिक अस्वस्थता के आधार पर अनुपयोगी एवं समस्यात्मक व्यवहार का प्रदर्शन बालकों द्वारा किया जाता है।
4. मानसिक अस्वस्थता के आधार पर बालकों द्वारा सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न की जाती हैं।

मानसिक अस्वस्थता बालक की प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पर तथा उसके प्रत्येक व्यवहार पर प्रश्न चिन्ह लगाती है।

## अध्याय 5

### वातावरण एवं वंशानुक्रम का प्रभाव

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### **वंशानुक्रम की विशेषताएँ—**

1. वंशानुक्रम माता—पिता से संतान को प्राप्त होने वाले गुणों को कहते हैं जोकि बालक में स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होते हैं।
2. वंशानुक्रम के आधार पर बालक शारीरिक संरचना सम्बन्धी एवं विविध प्रकार की योग्यता सम्बन्धी विशेषताएँ प्राप्त करता है।
3. वंशानुक्रम के आधार पर बालक के व्यक्तित्व एवं क्रियाशीलता एवं कार्य व्यवहार की संभावनाओं का संश्लेषण एवं विश्लेषण किया जाता है।
4. वंशानुक्रम में माता—पिता एवं दादा—दादी एवं नानी—नानी आदि के गुणों का प्रभाव बालक—बालिकाओं पर स्पष्ट रूप से देखा जाता है।
5. वंशानुक्रम के प्रभाव एवं बालक को पूर्वजों से प्राप्त होने वाली प्रक्रिया को वैध एवं विश्वसनीय रूप में मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

#### **वंशानुक्रम के नियम एवं सिद्धान्त—**

1. मूल जीवाणु की निरन्तरता के नियम के अनुसार बालक को माता—पिता से क्रमशः 50: गुणों का, दादा—दादी से एक निश्चित अनुपात में तथा वंश परम्परा से घटते हुए क्रम में गुणों को प्राप्त किया जाता है, गाल्टन ने इस नियम के माध्यम से मूल जीवाणु के निरन्तरता के नियम का प्रमाणीकरण किया,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. अर्जित गुणों के हस्तान्तरण के नियम के समर्थक लैमार्क, पावलोव एवं मैक्डूगल थे इनके अनुसार यह सिद्ध किया गया कि जिन गुणों को हम आवश्यकता के अनुरूप स्वीकार कर लेते हैं तथा निरन्तर प्रयोग करते हैं तो वे गुण वंशानुक्रमीय रूप धारण कर लेते हैं, जैसे चूहों द्वारा अंधकार के मार्ग के चयन में 23 पीढ़ियों के बाद त्रुटि कम करना तथा जिराफ की गर्दन का लम्बा होना आवश्यकता के अनुरूप था जिसे वंशानुक्रमी रूप प्राप्त हो गया अतः अर्जित गुण, वंशानुक्रम का रूप धारण करते हैं,
3. प्रत्यागमन के नियम में यह सिद्ध किया जाता है कि जब गुण सूत्रों को सही रूप से मिश्रण होता है तो उत्पन्न होने वाली संतान माता-पिता की विशेषताओं के अनुरूप होती हैं, जब गुण सूत्रों का मिश्रण अनुचित रूप में होता है तो विपरीत विशेषताओं वाली संतान उत्पन्न होती हैं, जाग्रत गुणसूत्र अपनी अभिव्यक्ति करता है जबकि सुषुप्त गुणसूत्र अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर पाता है,

### वंशानुक्रम सम्बन्धी मेण्डल का प्रयोग एवं निष्कर्ष—

1. वंशानुक्रम सम्बन्धी प्रयोग मेण्डल द्वारा मटर पर किए गए जिसके द्वारा प्रथम निष्कर्ष के रूप में उन्होंने बताया कि वंशानुक्रम का प्रत्यागमन सम्बन्धी नियम पूर्णतः प्रभावी रूप से कार्य करता है,
2. माता-पिता की ओर से बालक में एक-एक गुणसूत्र समावेशित होता है,
3. गुणसूत्र की अभिव्यक्ति संयोग पर निर्भर करती है, त्रुटिपूर्ण संयोग होने पर विपरीत विशेषताएँ प्रकट होती हैं तथा उत्तम संयोग पर समान विशेषताएँ प्रकट होती हैं,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. जाग्रत गुणसूत्र अपनी अभिव्यक्ति करते हैं, सुषुप्त गुणसूत्र अभिव्यक्ति नहीं करते हैं,

### बालक के विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव—

1. तन्त्रिका तन्त्र की संरचनाओं पर वंशानुक्रम का प्रभाव व्यापक रूप से देखा जाता है, इसके आधार पर बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ एवं ग्रन्धियाँ होती हैं सीखने की आदत भी प्रभावित होती है,
2. वंशानुक्रम के आधार पर सामान्य परिस्थितियों में यह पाया जाता है कि प्रतिभाशाली अभिभावकों की संतान प्रतिभाशाली होती हैं,
3. अभिभावकों में जिस प्रकार की मूल प्रवृत्तियाँ एवं संवेगात्मक स्थितियाँ पाई जाती हैं, बालकों में भी उसका प्रभाव व्यापक रूप से देखा जाता है,
4. जो अभिभावक संवेगात्मक रूप से विकसित एवं स्थिर होते हैं उनके बालकों में भी संवेगात्मक स्थिरता एवं संवेगात्मक विकास सर्वोत्तम रूप से पाया जाता है,
5. अभिभावकों का कार्य व्यवहार एवं स्वभाव भी संतान में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है इसे अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है,
6. शारीरिक गठन एवं विशेषताओं का प्रभाव भी बालकों में स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जैसे भूरी आँखों वाले अंग्रेज बालक बालिकाओं की भूरी आँखें वंशानुक्रम के आधार पर होती हैं,
7. अभिभावक जिस प्रकार की व्यावसायिक एवं शैक्षिक योग्यता रखते हैं उसका व्यापक प्रभाव बालक की व्यावसायिक एवं शैक्षिक योग्यता पर देखा जाता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त परिवारों का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि भविष्य में उस परिवार की संतति भी सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो जाती है,

### वातावरण की विशेषताएँ—

1. वातावरण मानव जीवन को उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक निरन्तर रूप से प्रभावित करने का कार्य करता है,
2. वातावरण बालक के जीन्स को प्रभावित या परिवर्तित नहीं कर सकता है,
3. बालक के विकास में वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है,
4. बालक के उत्थान एवं पतन दोनों में प्रत्येक का मूल कारण वातावरण होता है,
5. वातावरण की प्रक्रिया बालक के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करती है,

### बाल विकास की प्रक्रिया पर वातावरण का प्रभाव—

1. सर्वोत्तम एवं उचित वातावरण मिलने पर बालक का मानसिक विकास सर्वोत्तम रूप से सम्पन्न होता है,
2. संवेगात्मक स्थिरता के लिए विद्यालय में सामूहिक गतिविधियों का वातावरण उत्पन्न किया जाता है जिससे बालक का संवेगात्मक विकास सम्भव होता है,
3. प्राकृतिक एवं स्वास्थ्यप्रद वातावरण में छात्रों को स्वास्थ्य एवं व्यायाम सम्बन्धी गतिविधियों में सहभागिता के अवसर प्राप्त होते हैं जिससे बालक का शारीरिक विकास सर्वोत्तम रूप में होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. बालक के घर परिवार एवं विद्यालय में जब छात्रों को नैतिक गतिविधियों में सहभागिता करने का अवसर प्राप्त होता है तो बालकों में नैतिकता का विकास सम्भव होता है,
5. विद्यालयी व्यवस्था द्वारा तथा परिवार द्वारा छात्रों के समक्ष सामाजिक गुणों के विकास हेतु उन्हें सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है जिससे छात्रों का सामाजिक विकास होता है,
6. विद्यालय एवं परिवार द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्रों की सहभागिता एवं भूमिका निश्चित की जाती है तब बालक बालिकाओं का सांस्कृतिक विकास सम्भव होता है,
7. भाषायी विकास की प्रक्रिया में शिक्षक एवं अभिभावक द्वारा मनोवैज्ञानिक नियमों का अनुसरण करने पर बालक के भाषायी विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाता है,
8. घर एवं विद्यालय का शैक्षिक वातावरण बालकों के शैक्षिक विकास में सहायक सिद्ध होता है,
9. व्यक्तित्व के विकास में बालक घर, परिवार के वातावरण एवं विद्यालयी गतिविधियों के माध्यम से सीखता है तथा व्यक्तित्व का निर्धारण करता है,
10. वातावरण के आधार पर ही बालक-बालिकाओं में सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है,

**वंशानुक्रम एवं वातावरण के सन्दर्भ में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका—**

1. शिक्षक द्वारा अभिभावकों को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करके वंशानुक्रम एवं वातावरण के प्रभावों से अवगत कराया जा सकता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. अभिभावकों की विद्यालय गतिविधियों से सहभागिता की जानी चाहिए, जिससे वे विद्यालय के उद्देश्यों को समझकर विद्यालय का सहयोग कर सकें।
3. शिक्षक द्वारा घर, परिवार एवं विद्यालय में अभिभावकों का सहयोग से शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सहायता ली जा सकती है।
4. शिक्षक द्वारा विद्यालय में शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ सामाजिक गुणों एवं अपेक्षाओं से सम्बन्धित गतिविधियाँ संचालित करके सामाजिक वातावरण निर्मित किया जाता है जिससे छात्रों का सामाजिक विकास सर्वोत्तम रूप में सम्भव होता है।
5. बालकों को विद्यालय में सम्पन्न होने वाली गतिविधियों में सहभागिता तथा समाज में सम्पन्न होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता के लिए प्रेरणा प्रदान करके शिक्षक द्वारा सांस्कृतिक विकास का वातावरण तैयार किया जाता है।
6. छात्रों के समक्ष छोटी-छोटी समस्याएँ प्रस्तुत करके तथा उनका समाधान छात्रों को करने के लिए कहने पर छात्रों के लिए तर्क एवं चिन्तन के विकास का वातावरण तैयार किया जाता है।  
व्यक्तित्व निर्माण के लिए शिक्षक द्वारा छात्रों के लिए अभिभावकों के सहयोग से घर, परिवार एवं वातावरण में आदर्श व्यक्तित्व का वातावरण तैयार किया जा सकता है।



## अध्याय 6

### पियाजे, पावलॉव, कोहलर और थॉर्नडाइक : रचना एवं

### आलोचनात्मक स्वरूप

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के प्रमुख तत्व—

1. जैविक परिपक्वता के साथ बालक की अनेक व्यावहारिक गतिविधियों का विकास होता है,
2. भौतिक वातावरण के साथ जो भी अनुभव होता है उससे भी बालक सीखने का प्रयास करता है,
3. सामाजिक वातावरण के साथ अनुभवों के साथ भी बालक सीखने का प्रयास करता है,
4. सन्तुलनीकरण की अवस्था में बालक जैविक परिपक्वता, भौतिक वातावरण एवं सामाजिक अनुभवों के माध्यम से समुचित विकास को प्राप्त करता है,
5. अनुकूलन की अवस्था में बालक आत्मसात्करण के कारण बाह्य जगत की व्याख्या पूर्व अनुभवों के आधार पर करता है तथा व्यवस्थापन द्वारा पूर्व अनुभवों में सुधार करता है,

#### पियाजे के मानसिक विकास की अवस्थाएँ —

1. संवेदागात्मक अवस्था के छह भाग होते हैं, जिनमें प्रथम उपअवस्था 0 से 1 माह, द्वितीय उपअवस्था, 1 से 4 माह, तृतीय उपअवस्था 4 से 8 माह, चतुर्थ उपअवस्था, 8 से 12 माह, पंचम उपअवस्था 12 से 18 माह

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

तथा छठी उपअवस्था 18 से 24 माह तक चलती है, इस प्रकार यह अवस्था 0 से 24 माह तक होती है

2. पूर्व क्रियात्मक अवस्था— इस अवस्था के लिए आयु सीमा 2 से 7 वर्ष तक की निर्धारित की गई है, इसके भी दो भाग हैं, जोकि पूर्व संकल्पनात्मक काल तथा अतःप्रज्ञ चिन्तन काल के रूप में जाने जाते हैं,
3. पूर्व क्रियात्मक अवस्था— इसमें विकेन्द्रण अविनाशिता, कमगत क्षमता, नकारात्मक रूप में कार्य करना, समरूपता, अतिपूर्ति, कारण एवं पुनः प्रस्तुतीकरण की विशेषताएँ विकसित होती हैं, इसकी आयु सीमा 7 से 11 वर्ष होती है,
4. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था—इस अवस्था की आयु सीमा 11 से 15 वर्ष मानी गई है, इस अवस्था की प्रमुख विशेषता तर्क चिन्तन, ईमानदारी, प्रेम एवं सहयोग होती है,

### पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त:—

इसमें पियाजे ने नैतिक विकास को चार भागों में बाँटा है, जिसमें आत्मकेन्द्रियता की अवस्था, परतन्त्रता की अवस्था, संक्रमण की अवस्था एवं स्वायत्ता की अवस्था सम्मिलित होती है,

### पावलॉव के अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त सम्बन्धित नियम —

इस सिद्धान्त के अनुसार समय का नियम, तीव्रता का नियम, एकरूपता का नियम, पुनरावृत्ति का नियम तथा व्यवधान के नियम को सम्मिलित किया जाता है, पावलॉव द्वारा यह प्रयोग कुत्ते पर किया गया, पावलॉक द्वारा मत प्रस्तुत किया गया कि यह सिद्धान्त कुछ शर्तों के आधार पर ही प्रभावी रूप से कार्य करता है,

### कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त—

कोहलर द्वारा यह प्रयोग सुल्तान नामक चिंपाजी पर किया गया, उसकों विविध अवस्थाओं में रखकर उसकी सूझ एवं अन्तर्दृष्टि का परीक्षण किया गया इस आधार पर उसने यह सिद्ध किया कि बालक भी अपनी सूझ या अन्तर्दृष्टि के आधार पर सीखने का प्रयास करता है।

### थॉर्नडाइक का अधिगम सिद्धान्त—

थॉर्नडाइक ने बिल्ली पर प्रयोग करके अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया इसके बाद उसने अनेक प्रकार के पशुओं पर प्रयोग करके दो प्रकार के नियमों का प्रतिपादन किया—

1. प्रमुख नियम— प्रमुख नियमों में तत्परता का नियम, अभ्यास का नियम तथा प्रभाव के नियम को सम्मिलित किया गया है  
गौण नियमों में बहु अनुक्रिया नियम, अभिवृत्ति नियम, तत्वों की प्रवलता का नियम, सादृश्य द्वारा अनुक्रिया का नियम तथा साहयर्चात्मक स्थानान्तरण का नियम सम्मिलित किया जाता है।

## अध्याय 7

### बाल केन्द्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ—

1. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में प्रत्येक समुदाय के बालक एवं बालिकाओं के लिए शिक्षा व्यवस्था निश्चित की जाती है,
2. बालकों के लिए शिक्षा व्यवस्था एवं विद्यालय का वातावरण रुचि पूर्ण बनाया जाता है,
3. बालकों के विकास का वातावरण उत्पन्न करने की प्रक्रिया के रूप में बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था को स्वीकार किया जाता है,
4. बालकों की सहभागिता के रूप में प्रत्येक गतिविधि में तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में बालकों को संलग्न रखा जाता है,
5. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था बालकों के लिए रुचिपूर्ण वातावरण का निर्माण करती है,
6. बालकों की व्यावसायिक शैक्षिक एवं अशैक्षिक रुचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा व्यवस्था का प्रस्तुतीकरण बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में किया जाता है,
7. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में बालकों को वर्तमान की चुनौतियों के लिए तैयार किया जाता है,
8. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में बालकों भविष्य में आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान की जाती है, जिससे उनकास भविष्य भी स्वर्णिम हो सके,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में सभी कुछ बालक द्वारा कराया जाता है जिससे उसमें प्रत्येक कार्य के प्रति उत्तरदायित्व समझने एवं निर्वहन करने की व्यवस्था की जाती है,
10. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था में उन सभी सिद्धान्त, गतिविधियों एवं व्यवस्थाओं को सम्मिलित किया जाता है जिससे छात्रों के लिए स्वास्थ्यप्रद वातावरण का निर्माण हो सके,
11. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यालय एवं समुदाय में समन्वयन स्थापित किया जाता है जिससे दोनों एक-दूसरे की अपेक्षाओं की पूर्ति कर सकें,

#### **प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ—**

1. इसमें पाठ्यक्रम का स्वरूप समेकित होता है,
2. इसमें प्रयोगात्मक अधिगम एवं अवशारणात्मक अधिगम पर बल दिया जाता है,
3. प्रगतिशील शिक्षा में छात्रों को समस्याएँ प्रदान की जाती हैं, इसके अनुरूप उनको समाधान प्रस्तुत करना होता है,
4. प्रगतिशील शिक्षा में छात्रों को सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम एवं गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है,
5. प्रगतिशील शिक्षा में सामूहिक कार्यों को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे छात्रों में सामाजिक मूल्यों का विकास होता है,
6. प्रगतिशील शिक्षा के माध्यम से छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने एवं निर्वहन करने का योग्यता विकसित की जाती है,
7. इसमें शिक्षक को पूर्ण स्वतन्त्रता होती है कि वह पाठ्यक्रम से पृथक हटकर छात्रों की शैक्षिक अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. इसमें मूल्यांकन की प्रक्रिया छात्रों की गतिविधियों पर एवं प्रोजेक्ट कार्य पर आधारित होती है, इसमें विशेष परीक्षाओं का प्रावधान नहीं होता है,

### प्रगतिशील एवं बाल केन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व—

1. प्रगतिशील एवं बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था सामुदायिक विकास के लिए आवश्यक है,
2. प्रगतिशील शिक्षा के माध्यम से समाज एवं राष्ट्रीय विकास के उद्देश्य को प्राप्त किया जाता है,
3. इसके माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था तथा निर्देशन एवं परामर्श की सर्वोत्तम व्यवस्था सम्पन्न की जाती है,
4. इसके माध्यम से प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास सम्भव होता है,
5. इसके माध्यम से छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास एवं सृजनात्मक विकास की भावना विकसित की जाती है,
6. प्रगतिशील शिक्षा में सार्वजनिक हित की भावना का बीजारोपण छात्रों में किया जाता है,

## अध्याय 8

# बुद्धि की रचना का आलोचनात्मक स्वरूप और उसका मापन, बहुआयामी बुद्धि

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

बुद्धि की विशेषताएँ—

1. बुद्धि एक जन्मजात मानसिक शक्ति है जिसे परिवर्तन नहीं किया जा सकता है, बुद्धि के द्वारा ही बालक का कार्य व्यवहार एवं व्यक्तित्व निर्धारित होता है,
2. बुद्धि सीखने की योग्यता के रूप में होती है, जो छात्र शीघ्रता से सीखते हैं उनको बुद्धिमान माना जाता है, तथा जो देर से सीखते हैं या नहीं सीख पाते हैं वे मंद बुद्धिमान माने जाते हैं,
3. बुद्धि के माध्यम से छात्र प्रत्येक स्थिति में अपने आपको समायोजित कर लेता है, ऐसे छात्रों की बुद्धिमान छात्रों की श्रेणी में रखा जाता है, जबकि असमायोजित छात्रों को बुद्धिमान छात्र नहीं माना जाता है,
4. बुद्धि के माध्यम से छात्रों द्वारा कठिन एवं जीवन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान कर लिया जाता है, इस प्रकार के छात्र बुद्धिमान होते हैं, इसके विपरीत स्थिति में छात्रों को मंदबुद्धि माना जाता है,
5. तर्क एवं चिन्तन की योग्यता के आधार पर छात्रों को बुद्धिमान माना जाता है, अर्थात् बुद्धिमान छात्रों में तर्क एवं चिन्तन की विशेष योग्यता होती है जबकि अन्य छात्रों में तर्क एवं चिन्तन की योग्यता नहीं होती है तो उन्हें मंद बुद्धिमान माना जाता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. बुद्धिमान छात्रों द्वारा अपने अनुभवों को तथा दूसरे के अनुभवों को सर्वोत्तम रूप से प्रयोग किया जाता है, जबकि मंदबुद्धि छात्र ऐसा करने में सक्षम नहीं होते हैं,
7. बुद्धि को सामान्य योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसके आधार पर बुद्धि के अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित योग्यताओं का एकत्रीकरण होता है,
8. बुद्धि का सर्वोत्तम उपयोग अनुसंधान सम्बन्धी कार्यों में होता है, प्रायः बुद्धिमान छात्रों द्वारा ही अपनी विविध परिकल्पनाओं द्वारा खोज की जाती है,
9. बुद्धि का सम्बन्ध वंशानुक्रम से होता है प्रखर बुद्धि वाले अभिभावक एवं पूर्वजों की संतान प्रखर बुद्धि वाली होती है,
10. बुद्धिमान छात्रों का व्यवहार सर्वोत्तम एवं सामाजिक परम्पराओं के अनुकूल होता है, बुद्धिमान छात्रों के व्यवहार को आदर्श एवं अनुकरणीय व्यवहार माना जाता है,

### बुद्धि के सिद्धान्त—

1. बुद्धि के एक कारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि एक तत्त्व है जोकि जन्मजात शक्ति के रूप में पाया जाता है यह एक मानसिक शक्ति होती है, जोकि व्यक्ति के मानसिक कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है,
2. स्पियर मेन के द्विकारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि दो कारकों का संयोग है, प्रथम तथ्य सामान्य योग्यता होती है जिसके आधार पर छात्र प्रत्येक क्षेत्र में सफल होता है, सामान्य योग्यता धारी छात्र के द्वारा समान रूप से सफलता प्राप्त की जाती है तथा इस सामान्य योग्यता को घटाया, बढ़ाया नहीं जा सकता है, द्वितीय विशिष्ट योग्यता होती है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

जोकि क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित होती है जैसे सचिन तेन्दुलकर बल्लेबाज है तथा अनिल कुंबले गेंदबाज है,

3. बहुखण्ड सिद्धान्त के अन्तर्गत बुद्धि को विविध प्रकार की योग्यताओं को समूह माना गया है, इन योग्यताओं में प्रमुख रूप से शाब्दिक योग्यता, अंक योग्यता, प्रेषण, योग्यता, प्रत्यक्षणात्मक योग्यता, शब्द प्रवाह योग्यता, स्मृति योग्यता एवं तार्किक योग्यता को सम्मिलित किया जाता है, इसको थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यताओं के सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है,

### गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त—

1. भाषिक बुद्धि के अन्तर्गत ध्वनि लय, शब्दों के अर्थ तथा कार्यों के प्रति संवेदनशीलता का प्रदर्शन होता है, भाषिक बुद्धि कवि एवं पत्रकार में पाई जाती है,
2. संगीतात्मक बुद्धि में स्वरमान, लय अथवा स्वर संगीतात्मक तथ्यों की समझ, ध्वनि सम्बन्धी पृष्ठपोषण प्रदान करने की योग्यता एवं सौन्दर्यात्मक अनुभूति मापी जाती है, यह बुद्धि संगीतकार एवं वायलिन वादक आदि में पाई जाती है,
3. तार्किक गणितीय बुद्धि के अन्तर्गत तार्किक, आंकिक, व्यवस्थाओं, के प्रति पहचान एवं संवेदनशीलता प्रकट की जाती है, इसमें तार्किक विवेचन की कुशलता दृष्टिगोचर होती है यह बुद्धि वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ आदि में पाई जाती है,
4. दैशिक बुद्धि के अन्तर्गत दृश्यिक संसार के सही प्रत्यक्षण की योग्यता एवं स्थानान्तरणों को निष्पादित करने की योग्यता आदि को सम्मिलित किया जाता है, दैशिक बुद्धि प्रायः मार्ग दर्शन एवं मूर्तिकारों में व्यापक रूप से पाई जाती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. शारीरिक गतिज बुद्धि में छात्र शारीरिक बुद्धि के माध्यम से विविध प्रकार के लक्ष्यों को तथा गतिविधियों को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, इस प्रकार की बुद्धि कसरत करने वालों में नर्तकों में तथा अभिनेता आदि में पाई जाती हैं,
6. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि के अन्तर्गत दूसरे के स्वभाव एवं प्रेरणाओं को समझने की योग्यता को सम्मिलित किया जाता है, इसके माध्यम दूसरों के भावों एवं विचारों में परिवर्तित किया जाता है,
7. प्राकृतिक बुद्धि प्रकृतिवादी, जीव विज्ञानी एवं मानववादी व्यक्तियों में पाई जाती है, इसके अन्तर्गत भौतिक संसार में समानता एवं असमानताओं की पहचान की योग्यता को सम्मिलित किया जाता है,

### बुद्धि का मापन—

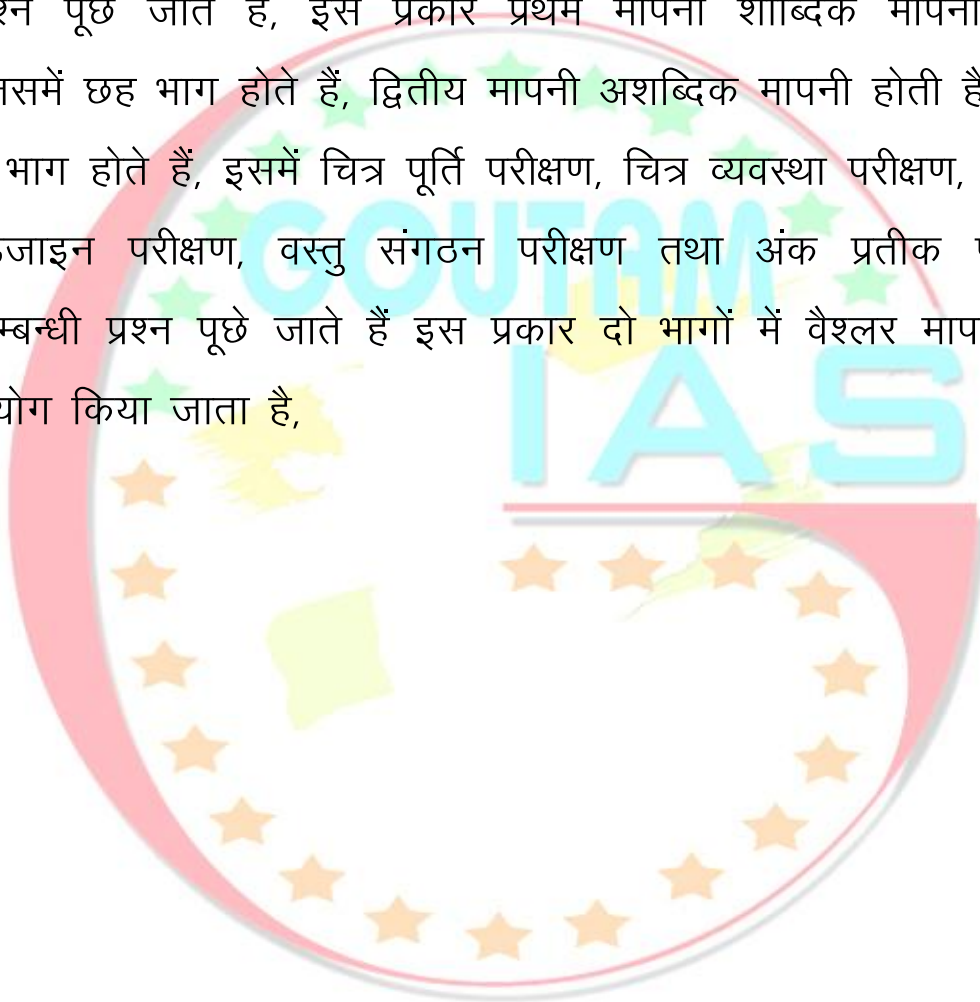
1. बिने साइमन बुद्धि मापनी को व्यक्तिगत बुद्धिपरीक्षण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, इसमें उसके द्वारा 15 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों के लिए प्रश्न सूची एवं प्रश्नों के क्षेत्र का निर्धारण किया गया है, अपने स्तर के अनुरूप प्रश्नों के उत्तर देने पर बालक को सामान्य बुद्धि आयु स्तर से अधिक प्रश्नों के उत्तर नहीं देने पर बालक को प्रतिभाशाली तथा आयु स्तर के अनुरूप प्रश्नों के उत्तर नहीं देने पर बालक को मंदबुद्धि समझा जाता है, इस प्रकार यह उपयोगी परीक्षण माना जाता है,
2. आर्मी अल्फा परीक्षण सामूहिक बुद्धिपरीक्षण के रूप में स्वीकार किया जाता है, इसका प्रयोग अमरीका में सर्वप्रथम किया गया, इस परीक्षण में आठ भाग होते हैं, जिनमें सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं, इसमें अनुदेश पालन, अंकगणितीय समस्याएँ व्यावहारिक निर्णय, समानार्थ—विलोमार्थ,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

अव्यवस्थित वाक्य, संख्या सारणी पूर्ति, सादृश्य एवं सामान्य सूचना सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं,

3. वैश्लर की वयस्क बुद्धि मापनी— वैश्लर की बुद्धि मापनी के अन्तर्गत दो प्रकार की मापनी प्रयोग में लायी जाती है, प्रथम मापनी के अन्तर्गत शाब्दिक मापनी, सूचना परीक्षण बोध परीक्षण अंक विस्तार परीक्षण, शब्दावली परीक्षण, अंक गणितीय परीक्षण एवं समानता परीक्षण सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं, इस प्रकार प्रथम मापनी शाब्दिक मापनी होती जिसमें छह भाग होते हैं, द्वितीय मापनी अशाब्दिक मापनी होती है इसमें 5 भाग होते हैं, इसमें चित्र पूर्ति परीक्षण, चित्र व्यवस्था परीक्षण, बालक डिजाइन परीक्षण, वस्तु संगठन परीक्षण तथा अंक प्रतीक परीक्षण सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं इस प्रकार दो भागों में वैश्लर मापनी का प्रयोग किया जाता है,



## अध्याय 9

### व्यक्तित्व और मापन

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### व्यक्तित्व की विशेषताएँ—

1. दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व को आत्मज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है,
2. समाजशास्त्रीय विद्वानों ने व्यक्तित्व को संस्कृति से सम्बन्धित प्रक्रिया माना, संस्कृति एवं समाज द्वारा व्यक्ति विकास की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है,
3. मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण वातावरण एवं वंशानुक्रम के द्वारा मानते हैं तथा विकास की प्रक्रिया में भी इन दोनों कारकों का योगदान मानते हैं,
4. व्यक्तित्व का विकास उस स्थिति में पूर्ण होता है जब छात्र का सर्वांगीण विकास पूर्ण हो चुका होता है, अतः यह सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार्य है,
5. बालक के कार्य व्यवहार एवं गतिविधियों के सार को व्यक्तित्व कहा जाता है,
6. व्यक्तित्व किसी एक गुण या विशेषता का नाम नहीं है वरन् इसमें अनेक प्रकार के गुणों, गतिविधियों एवं व्यवहारों का संगठित स्वरूप होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. व्यक्तित्व मानसिक विकास की प्रक्रिया के रूप में माना सजाता है, क्योंकि प्रखर एवं उच्च बौद्धिक स्तर वाले बालक बालिकाओं का व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से विकसित होता है,
8. व्यक्तित्व में अर्जित एवं जन्मजात गुणों का योगदान होता है, अर्जित गुण वातावरण से तथा जन्मजात गुण वंशानुक्रम से प्राप्त होते हैं,
9. व्यक्तित्व में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, मानसिक, शारीरिक एवं कौशल सम्बंधी विकास की प्रक्रिया का समावेश होता जिससे व्यक्तित्व समग्र बनता है,

### व्यक्तित्व के प्रकार—

व्यक्तित्व के प्रमुख प्रकार की विविध विद्वानों द्वारा विविध रूपों में प्रस्तुत किया गया है,

1. क्रेशमर के अनुसार विकसित व्यक्तित्व वाले बालक साहसी, छोटे कद के तथा गोल आकृति के होते हैं, जबकि एस्थेनिक व्यक्तित्व के धनी बालक पतले, चपटे एवं कोमल शारीरिक आकृति वाले होते हैं, एथेलेटिक व्यक्तित्व के धनी बालक चौड़े कंधे एवं लम्बे हाथ पैरों वाले होते हैं, तथा डिस्प्लास्टिक व्यक्तित्व वाले बालकों में शारीरिक गठन का अनुपात अनुचित रूप से पाया जाता है,
2. **शेल्डन** के अनुसार एण्डोमॉर्फिक व्यक्तित्व के धनी बालक शारीरिक गठन में कोमल एवं गोल होते हैं, जबकि मेसोमॉर्फिक व्यक्तित्व वाले बालक गठीले एवं सुदृढ़ शरीर वाले होते हैं, ऐक्टोमॉर्फिक व्यक्तित्व वाले बालक दुबले पतले तथा कमजोर शरीर वाले होते हैं, पलायनवादी प्रवृत्ति इनमें पाई जाती है,
3. **विलियम जेम्स** के अनुसार व्यक्तित्व दो प्रकार के होते हैं, कोमल हृदय व्यक्तित्व वाले बालकों में अमूर्त चिन्तन, बुद्धिजीवी क्रियाओं एवं

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

आशावादी विचार पाए जाते हैं, जबकि कठोर हृदय वाले व्यक्तित्व के धनी बालकों में भौतिकता, निराशावादी एवं संशयवादिता के पाई जाती है, ये अधार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं,

4. **न्यूमैन तथा स्टर्न के अनुसार संश्लेषणवादी व्यक्ति के धनी** बालक किसी भी घटना एवं तथ्य को ज्यों की ज्यों स्वीकार करते हैं, उसका विश्लेषण एवं समीक्षा नहीं करते हैं, जबकि विश्लेषणवादी व्यक्तित्व के धनी बालक प्रत्येक घटना एवं तथ्य का विश्लेषण एवं समीक्षा करते हैं ये ज्ञान की गहनता की प्रेम करते हैं,
5. **मनोविश्लेषणवादी युग** के अनुसार अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के अन्तर्गत आत्मकेन्द्रिता, चिन्तनशीलता, एकान्तप्रियता एवं कम बोलने वाले गुण पाए जाते हैं, ये छल कपट से रहित तथा अपने कष्टों के प्रति सजग रहते हैं, इसके साथ बहिर्मुखी व्यक्तित्व के धनी बालक बालिकाओं में साहस एवं सामाजिक कार्यों में सहभागिता की स्थिति पाई जाती है, ये दूसरों के भावों एवं विचारों के अनुरूप निर्णय लेते हैं,

### व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपण विधियाँ—

1. **हरमन रोशार्क परीक्षण** में विविध प्रकार के रंग से सुसज्जित कार्ड होते हैं इन कार्डों पर काले रंग, भरे रंग एवं लाल रंग के धब्बे बने होते हैं, ये चित्र रचना सार्थक नहीं होती है, छात्रों से इन पर विचार जाने जाते हैं तथा इन विचारों का संश्लेषण एवं विश्लेषण करके उनके व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,
2. **विषम सम्प्रत्यय परीक्षण** में बालकों एवं बालिकाओं के लिए पृथक्-पृथक् कार्डों का प्रयोग किया जाता है, इसमें एक कार्ड कोरा होता है चित्र कार्डों के आधार पर छात्रों से कहानियाँ लिखने की कहा

जाता है जिसके आधार पर छात्रों के संवेग एवं मनोदशा आदि को जानकर उनके व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,

3. **शब्द साहचर्य परीक्षण** में एक शब्द की छात्रों के समक्ष उद्दीपक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है छात्र द्वारा उसके लिए अनुक्रिया शब्द के रूप में एक शब्द प्रस्तुत किया जाता है, दोनों के मध्य पाए जाने वाले समय अन्तर को प्रतिक्रिया काल कहते हैं, इस प्रतिक्रिया काल के आधार पर तथा विविध प्रकार के अनुक्रियों के आधार पर व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,

### व्यक्तित्व मापन की आत्मनिष्ठ विधियाँ—

1. **आत्मकथा** के अन्तर्गत बालक या किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की विविध घटनाओं का उल्लेख किया जाता है, बीच-बीच में उसके द्वारा अपने विचार एवं भावनाओं को प्रकट किया जाता है, इसके आधार पर छात्रों के व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,
2. **व्यक्ति इतिहास विधि** के अन्तर्गत छात्रों से उसके बारे में सूचना प्राप्त करने के साथ-साथ उसके मित्र समूह से तथा अभिभावकों से उसके सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, राजनीतिक स्तर एवं नैतिक स्तर के बारे में सूचना प्राप्त की जाती है, इसके उपरान्त सूचनाओं का संश्लेषण एवं विश्लेषण करके व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,
3. **साक्षात्कार विधि** में व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कारकर्ता एवं छात्र दोनों के समक्ष प्रश्नोत्तर कार्यक्रम चलता है, इसमें साक्षात्कार कर्ता द्वारा छात्रों से उसके व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं, इन प्रश्नों के उत्तरों का संश्लेषण एवं विश्लेषण करके छात्र का व्यक्तित्व निर्धारण होता है,
4. **सूची विधि** के अन्तर्गत छात्र से उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित प्रश्नों को पूछा जाता है, छात्रों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर छात्र का व्यक्तित्व



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

मापन किया जाता है, छात्रों से पूछे गए प्रश्नों की संख्या 100 से 500 तक होती है, इसमें हाँ या नहीं वाले प्रश्न सम्मिलित होते हैं,

### व्यक्तित्व मापन की वस्तुनिष्ठ विधियाँ—

1. **नियंत्रण निरीक्षण विधि—** का प्रयोग प्रयोगशाला में छात्र को कार्य प्रदान करके किया जाता है, इसमें अवलोकनकर्ता द्वारा छात्र के समक्ष समस्या प्रदान करके उसके कार्य व्यवहार एवं मनोभाव का अध्ययन किया जाता है, छात्र को यह ज्ञान नहीं होता है कि उसकी कोई देख रहा है इसके आधार पर ही उसके व्यक्तित्व का मापन किया जाता है,
2. **क्रम निर्धारण मापनी** के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र दूसरे व्यक्तियों या छात्रों के बारे में विचार प्रस्तुत किए जाते हैं इसमें एक ओर सकारात्मक पक्षों को परखा जाता है, तो दूसरी ओर नकारात्मक पक्षों को परखा जाता है, छात्र के भावों एवं विचारों के आधार पर व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है,

### व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक :—

1. वंशानुक्रम के आधार पर छात्रों की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताएँ प्राप्त होती हैं, अतः वंशानुक्रम का सकारात्मक रूप व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव तथा नकारात्मक स्वरूप व्यक्तित्व विकास पर नकारात्मक प्रभाव का प्रदर्शन करता है,
2. शारीरिक संरचना का मानकों के अनुरूप विकसित स्वरूप व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव तथा शारीरिक विकृतियों के द्वारा व्यक्तित्व विकास पर नकारात्मक प्रभाव का प्रदर्शन किया जाता है,
3. दैहिक प्रवृत्तियों का सकारात्मक प्रभाव सकारात्मक मानसिक स्थितियाँ उत्पन्न करता है, जिससे व्यक्तित्व का विकास सर्वश्रेष्ठ रूप में होता

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

है, इसके विपरीत स्थितियों में व्यक्तित्व का स्वरूप प्रभावहीन हो जाता है।

4. उच्च मानसिक क्षमता एवं वृद्धिलब्धि वाले बालकों का प्रभावशाली व्यक्तित्व निर्मित होता है, जबकि मंद वृद्धि बालकों का प्रभावहीन व्यक्तित्व होता है,
5. बालकों की जिन क्षेत्रों में रुचियाँ होती हैं तथा उस क्षेत्र की सामान्य योग्यता में छात्र में होती है तो वातावरण एवं रुचि द्वारा छात्रों का विकास उस क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ रूप में होता है, इसके विपरीत स्थिति में व्यक्तित्व का अपूर्ण विकास होता है,
6. भौतिक वातावरण यदि शारीरिक एवं मानसिक रूप से सुखदायक होता है तो व्यक्तित्व का विकास प्रभावशाली में होता है, इसके विपरीत प्रभावहीन रूप से होता है—
7. सामाजिक वातावरण का आदर्श, लोकतान्त्रिक एवं सर्वश्रेष्ठ रूप बालकों के व्यक्तित्व का विकास समग्र रूप में करता है, क्योंकि बालक सामाजिक प्राणी है, इसके विपरीत स्थिति में व्यक्तित्व विकास प्रभावहीन रूप में होता है,
8. सांस्कृतिक वातावरण में सार्वभौमिक आदर्श, पम्पराओं का स्वरूप व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित करता है, इसके विपरीत परिस्थितियाँ व्यक्तित्व विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं,
9. परिवार का आदर्श स्वरूप एवं आत्मीय वातावरण बालक के व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास करता है, विपरीत परिस्थिति में व्यक्तित्व का विकास प्रभावहीन हो जाता है,
10. विद्यालय का लोकतान्त्रिक, नैतिक, आदर्श एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्रत्येक छात्र के व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है तथा विपरीत स्वरूप नकारात्मक प्रभाव का प्रदर्शन करता है,

## अध्याय 10

### भाषा एवं विचार

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### भाषा एवं विचार की विशेषताएँ—

1. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया मानसिक दर्शन का परिणाम होता है,
2. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया का आधार संज्ञानात्मक विकास होता है,
3. भाषा एवं विचार को संरचनात्मक एवं व्याकरणीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इसमें वाक्यों की संरचना व्याकरणीय नियमों पर आधारित होती है—
4. भाषा एवं विचारों के माध्यम से सामाजिक व्यवहार की प्रक्रिया सम्पन्न होती है, इसमें सामाजिक कौशलों का विकास सम्भव होता है,
5. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया का प्रारम्भ मातृभाषा से ही होसता है,
6. आन्तरिक विचारों की भाषा एवं विचारों द्वारा प्रभावित किया जाता है, जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसके अनुरूप ही बालक के आन्तरिक विचार निर्मित होते हैं,
7. भाषा एवं विचार के माध्यम से व्यवहार के स्वरूप का निर्माण होता है,
8. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया का प्रमुख आधार तर्क एवं चिन्तन होता है,
9. भाषा एवं विचार मानसिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किए जाते हैं क्योंकि ये दोनों बालक की मानसिक दशा को प्रभावित करते हैं,
10. भाषा एवं विचारों का उद्भव घटना एवं तथ्यों के संन्दर्भ में होता है,

#### भाषा एवं विचार के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व—

1. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया का प्रमुख उद्देश्य बालकों में भाषायी विकास को सम्भव बनाना है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

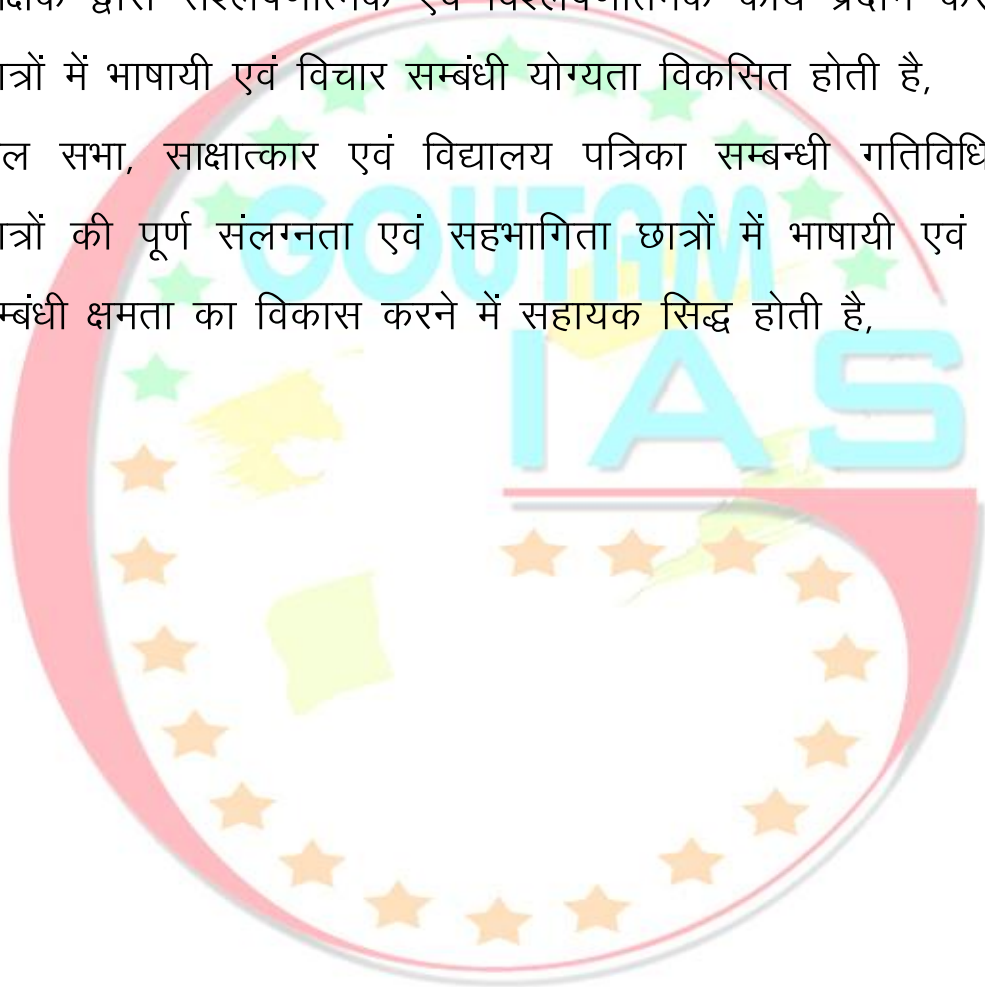
2. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया द्वारा छात्रों की विचार प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया को प्रभावी एवं सरल बनाया जाता है,
3. भाषा एवं विचार द्वारा छात्रों के मानसिक दर्शन को समसामयिक, आधुनिक एवं उपयोगी रूप प्रदान किया जाता है,
4. भाषा एवं विचार माध्यम से छात्रों के सज्ञानात्मक उद्देश्य के विकास को पूर्ण किया जाता है,
5. भाषा एवं विचार द्वारा छात्रों में संवेगात्मक उत्पन्न की जाती है,
6. भाषा एवं विचारों की प्रक्रिया छात्रों में व्यावहारिक कौशल उत्पन्न करती है,
7. भाषा एवं विचारों के माध्यम से छात्रों के सामाजिक कौशलों को विकास होता है,
8. शिक्षक की सहायता से भाषा एवं विचार की प्रक्रिया द्वारा बालकों के आन्तरिक विचारों का स्पष्टीकरण एवं परिमार्जन किया जाता है,
9. व्यक्तित्व के विकास में भाषा एवं विचार की प्रभावशीलता का प्रमुख योगदान माना जाता है,
10. भाषा एवं विचार की प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों में तर्क, चिन्तन, संश्लेषण एवं विश्लेषण की भावना का विकास होता है,

**भाषा एवं विचार की प्रक्रिया के विकास में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका—**

1. शिक्षक एवं छात्रों के मध्य प्रभावी एवं उचित संप्रेषण से भाषा एवं विचार सम्बन्धी योग्यता का विकास सम्भव होता है,
2. तर्क एवं चिन्तन सम्बन्धी गतिविधियाँ उपलब्ध कराते हुए, शिक्षक द्वारा आवश्यकता के अनुरूप सहयोग करने पर भाषा एवं विचार सम्बन्धी योग्यता विकसित होती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. शिक्षक द्वारा कहानी सुनाकर अनुकरण करने के लिए छात्रों से कहना या कहानी की व्यवस्था से भी भाषा एवं विचार सम्बन्धी योग्यता विकसित होती है,
4. कविता सम्बन्धी गतिविधियों, निबन्ध लेखन सम्बन्धी प्रतियोगिताएँ एवं परिचर्चा सम्बन्धी गतिविधियों के माध्यम से भी छात्रों में भाषा एवं यविचार सम्बन्धी योग्यता विकसित होती है,
5. शिक्षक द्वारा संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक कार्य प्रदान करके भी छात्रों में भाषायी एवं विचार सम्बन्धी योग्यता विकसित होती है,
6. बाल सभा, साक्षात्कार एवं विद्यालय पत्रिका सम्बन्धी गतिविधियों में छात्रों की पूर्ण संलग्नता एवं सहभागिता छात्रों में भाषायी एवं विचार सम्बन्धी क्षमता का विकास करने में सहायक सिद्ध होती है,





## अध्याय 11

### सामाजिक निर्माण के रूप में जेन्डर – जेन्डर की भूमिका, लिंग-भेद और शैक्षिक प्रथाएं

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### सामाजिक निर्माण की विशेषताएँ—

1. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया में दार्शनिक, समाजशास्त्री, शिक्षाशास्त्री एवं समाज सुधारकों को यागदान होता है
2. समाजशास्त्री एवं समाज सुधारकों के व्यापक अनुभवों द्वारा सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण होती है,
3. सामाजिक निर्माण के सिद्धान्त, नियम एवं विचार भाषा में प्रस्तुत किये जाते जाते हैं,
4. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया में सभी समाज से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा उद्देश्य प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयास किया जाता है,
5. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया विविध प्रकार के नियम एवं सिद्धांतों पर आधारित होती है,
6. आपसी विचार विमर्श एवं सम्प्रेषण के माध्यम से सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया सम्भव होती है,
7. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया में विविध सिद्धान्त, नियम एवं विचारों का संश्लेषण एवं विश्लेषण करके उपयोगी एवं व्यापक सिद्धान्तों को प्राप्त किया जाता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. विविध प्रकार की घटनाएँ सामाजिक निर्माण को दिशा प्रदान करती हैं तथा सामाजिक निर्माण में परिवर्तन का प्रयास करती हैं,
9. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया में सामाजिक विश्वासों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है,
10. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया रीति-रिवाज एवं परम्पराओं पर आधारित होती हैं,

### सामाजिक निर्माण में जेण्डर की भूमिका—

1. सामाजिक परम्पराओं का निर्धारण बालक, बालिकाओं या स्त्री, पुरुष के सन्दर्भ में किया जाता है,
2. सामाजिक अधिकारों के निर्धारण में बालक, बालिकाओं या स्त्री पुरुष के मध्य विभेद की स्थिति देखी जाती है,
3. सामाजिक पूर्वाग्रहों के निर्धारण या प्रचलन में बालक एवं बालिकाओं के लिए इनका निर्धारण पृथक-पृथक रूप में होता है
4. सामाजिक विश्वासों में स्त्री एवं पुरुषों के मध्य पृथक-पृथक सामाजिक विश्वास देखे जाते हैं,
5. सामाजिक मूल्यों की परम्परा में स्त्री एवं पुरुष विविध सामाजिक मूल्यों में विश्वास करते हैं,
6. सांस्कृतिक मूल्यों की प्रक्रिया में भी स्त्री एवं पुरुषों के मध्य विविधता पायी जाती है,
7. कार्य क्षेत्रों की दृष्टि से बालक एवं बालिकाओं के कार्य क्षेत्र पृथक् रूप में देखे जाते हैं,
8. धार्मिक व्यवस्था में भी बालक एवं बालिकाओं के लिए पृथक व्यवस्था का निर्धारण किया जाता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. व्यावसायिक क्षेत्र में बालक, बालिकाओं के लिए विविध व्यवसायों का निश्चय पहले से ही कर दिया जाता है,
10. शैक्षिक क्षेत्रों में भी विषय एवं प्रशिक्षण का पृथक् रूप बालक बालिकाओं के लिए देखा जाता है।

### लिंग भेद की सामाजिक निर्माण में भूमिका—

1. परिवार में भी बालक बालिकाओं के लिए विभेद की स्थिति देखी जाती है,
2. सामाजिक वातावरण में लैंगिक असमानता दृष्टिगोचर होती है,
3. सामाजिक परम्पराओं में भी लिंग भेद के स्पष्ट दर्शन होते हैं,
4. सामाजिक सोच में बालकों के प्रति सकारात्मक तथा बालिकाओं के प्रति नकारात्मक सोच देखी जाती है,
5. सामाजिक मूल्यों का निर्धारण भी लिंग भेद पर आधारित देखा जाता है,
6. सामाजिक कुशलता के लिए बालक बालिकाओं के लिए पृथक् क्षेत्र निर्धारित किया जाता है,
7. सामाजिक अधिकारों में लिंग भेद के रूप में बालक बालिकाओं के अधिकारों में अन्तर पाया जाता है,
8. सामाजिक विश्वासों में बालकों के प्रति सकारात्मक एवं बालिकाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के स्पष्ट दर्शन होते हैं,
9. धार्मिक अधिकारों में भी लिंग भेद स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है,
10. व्यावसायिक परम्पराओं में भी लिंग भेद के दर्शन होते हैं, बालिकाओं एवं बालकों के लिए पृथक-पृथक् व्यवसायों को प्रदर्शित किया जाता है,

### शैक्षिक प्रथाएँ एवं सामाजिक निर्माण—

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. शैक्षिक प्रथाओं द्वारा ही सामाजिक निर्माण की दशाओं में आवश्यक एवं समसामयिक परिवर्तन किया जाता है,
2. शैक्षिक, प्रथाओं के माध्यम से ही सकारात्मक सांस्कृतिक परिवर्तन किया जाता है,
3. सामाजिक दर्शन को समसामयिक एवं आधुनिक रूप प्रदान करने में शैक्षिक प्रथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है,
4. सामाजिक निर्माण में स्वस्थ परम्पराओं का विकास तथा रूढ़िवादी परम्पराओं का उन्मूलन शैक्षिक प्रथाओं द्वारा किया जाता है,
5. सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया में पूर्वाग्रहों को समाप्त करने में शैक्षिक प्रथाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है,
6. सामाजिक निर्माण में अंधविश्वासों का उन्मूलन तथा स्वास्थ्य एवं विकसित विश्वासों का विकास शैक्षिक प्रथाओं द्वारा किया जाता है,
7. सामाजिक मूल्यों को आधुनिक, सार्वभौमिक एवं विकसित बनाने में शैक्षिक प्रथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है,
8. राजनीतिक व्यवस्था को प्रजातान्त्रिक बनाने में तथा समाज में प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण विकसित करने में शैक्षिक प्रथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है,
9. धार्मिक मूल्यों में से व्यापकता सर्वधर्म सम्भाव विकसित करने तथा मानव धर्म को प्रचलन में लाने में शैक्षिक प्रथाओं की भूमिका होती है,
10. बालक—बालिकाओं के लिए समान व्यावसायिक शिक्षा एवं व्यावसायिक क्षेत्र में समानता शैक्षिक प्रथाओं द्वारा उपलब्ध करायी जाती है,

## अध्याय 12

### अधिगमकर्ताओं में व्यक्तिगत भिन्नताएँ—भाषा, जाति, लिंग, सम्प्रदाय, धर्म आदि पर आधारित भिन्नताओं की समझ

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### वैयक्तिक भिन्नताओं की विशेषताएँ—

1. वैयक्तिक भिन्नताओं के अन्तर्गत छात्रों में पाए जाने वाले विशेष गुणों को समझने का प्रयास किया जाता है,
2. वैयक्तिक भिन्नता के अन्तर्गत शारीरिक भिन्नताओं एवं बौद्धिक भिन्नताओं को समझने का प्रयास किया जाता है, जिसके आधार पर विकास प्रक्रिया निर्धारित होती है,
3. वैयक्तिक भिन्नताओं की प्रक्रिया को सामान्य प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि कोई भी बालक बालिका सम्पूर्ण रूप से समान नहीं होता है,
4. वैयक्तिक भिन्नता एक प्राकृतिक प्रक्रिया है प्रकृति के आधार पर कोई भी बालक—बालिका समान गुण, रूप—रंग एवं शारीरिक संरचना से युक्त नहीं होता है,
5. वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर ही वर्गीकरण एवं तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था सम्भव होती है, अतः वैयक्तिक भिन्नता समाप्त नहीं हो सकती है,

#### वैयक्तिक भिन्नताओं के प्रकार—



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. भाषायी दृष्टि से भी बालकों एवं बालिकाओं में भिन्नता पाई जाती है, कुछ छात्र एक से अधिक भाषा जानते हैं, तो कुछ छात्र एक ही भाषा जानते हैं, इस प्रकार भाषायी विविधता एवं भिन्नता समाज में व्यापक रूप से देखी जाती है,
2. भारतीय समाज में अनेक प्रकार की जातियाँ देखी जाती हैं, जातीयता के आधार पर बालकों में विविध प्रकार के कार्य व्यवहार एवं गतिविधियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, जो कि बालक बालिकाओं को भिन्न बनाती हैं,
3. समाज में बालक बालिकाओं के साथ भिन्नता का व्यवहार किया जाता है, इस आधार पर बालक बालिकाओं के व्यक्तिगत में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है,
4. सम्प्रदाय के आधार पर समाज विविध धार्मिक समूहों में बँटा होता है, प्रत्येक समूह के पृथक्-पृथक् विश्वास एवं मान्यताएँ होती हैं, जिसके आधार पर कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय में छात्र छात्राओं में वैयक्तिक भिन्नता देखी जाती है,
5. धर्म समाज का प्राण तत्व होता है परन्तु प्रत्येक धर्म की विविध प्रकार के विश्वास एवं मान्यता होती है, इसके आधार पर धार्मिक एवं सामान्य व्यवहार में छात्रों में भिन्नताएँ देखी जाती है।
6. शारीरिक आधार पर भी विविध प्रकार की संरचनाएँ देखी जाती हैं, दुबले बालक, मोटे बालक, स्वस्थ बालक एवं विकलांग बालक आदि भिन्नता कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय में देखी जाती है,
7. बौद्धिक आधार पर भी छात्र-छात्राओं में भिन्नता देखी जाती है, कुछ छात्र-छात्रा प्रखर बुद्धि, कुछ छात्र-छात्रा सामान्य बुद्धि एवं कुछ छात्र-छात्रा मंदबुद्धि के रूप में पाए जाते हैं,
8. सामाजिक व्यवस्था मूल्यों एवं परम्पराओं के आधार पर छात्रों के कार्य व्यवहार एवं व्यक्तित्व में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है, जैसे भौतिकवादी

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

समाज, आदर्शवादी समाज एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण समाज के बालक बालिकाओं में अन्तर पाया जाता है,

9. समाज में दो प्रकार के समूह पाए जाते हैं, प्रथम नैतिकतावादी समूह होते हैं तो द्वितीया अनैतिक एवं नास्तिक समूह होते हैं, इन समूहों में रहने वाले बालक व बालिकाओं की गतिविधियों एवं कार्य व्यवहार में पर्याप्त अन्तर पाए जाते हैं,
10. भारतीय समाज में विविधस संस्कृतियाँ हैं जिनकी मान्यताएँ एवं परम्पराएँ भी विविध हैं, अतः सांस्कृतिक आधार पर बालक बालिकाओं में भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं,
11. जलवायु मौसम एवं प्रजाति के आधार पर कुछ बालकों का रंग काला तथा कुछ का रंग गोरा होता है, इसी प्रकार का विविधता शारीरिक संरचना में दृष्टिगोचर होती हैं,

### वैयक्तिक भिन्नताओं के कारण—

1. वंशानुक्रम के आधार पर छात्र छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं शारीरिक संरचनाओं में व्यापक अन्तर देखा जाता है, गुणसुत्रों के त्रुटिपूर्ण संयोग होने पर विपरीत विशेषताओं वाले बालक बालिका उत्पन्न होते हैं,
2. समाज एवं परिवार में प्रचलित मूल्य एवं विश्वास बालकों में वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न करते हैं, जैसे आदर्शवादी मूल्यों से सम्पन्न परिवार एवं समाज के बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार में भौतिकतावादी मूल्यों से सम्पन्न परिवार एवं समाज के बालक बालिकाओं के कार्य व्यवहार से भिन्नता देखी जाती है,
3. परिवार में से जिस प्रकार का वातावरण होगा बालक—बालिकाओं का कार्य व्यवहार भी ठीक उसी प्रकार का होगा, जैसे आदर्शवादी,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

भौतिकवादी एवं नैतिकवादी परिवारों के बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार में विभिन्नता पाई जाती हैं,

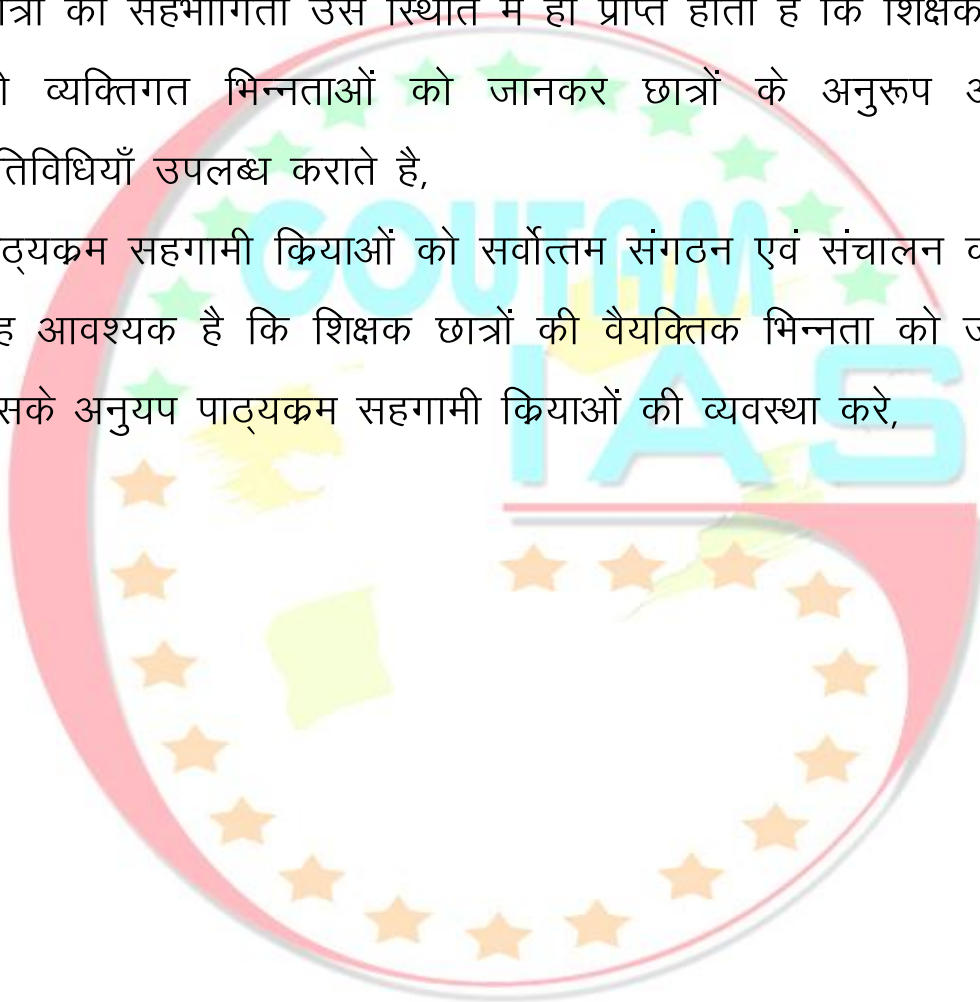
4. समाज में पाए जाने वाला वातावरण बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार को भिन्न बनाता है, शिक्षित एवं अशिक्षित समाज के बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार एवं गतिविधियों में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है,
5. विद्यालय में कुछ छात्रों को प्रजातान्त्रिक एवं निष्पक्षता से युक्त वातावरण मिलता है तथा कुछ छात्रों का तानाशाही एवं कठोर नियंत्रणस वाला वातावरण मिलता है तो दोनों छात्रों के कार्य व्यवहार एवं गतिविधियों में पर्याप्त अन्तर पया जाएगा।
6. एक समाज में धर्म का स्वरूप संकीर्ण एवं विषमताओं से भरा होता है, दूसरे समाज में धर्म का स्वरूप व्यापक एवं सार्वभौमिक मान्यताओं पर आधारित होता है तो दोनों समाज के बालक बालिकाओं के कार्य व्यवहार में पर्याप्त अन्तर देखा जाएगा,
7. सांस्कृतिक पर्यावरणस भी वैयक्तिक भिन्नता का कारण बनता है, क्योंकि भारतीय समाज में विविध संस्कृतियों के व्यक्ति निवास करते हैं, इसलिए उन व्यक्तियों के बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार एवं गतिविधियों में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है,
8. जिस समाज के बालकों में नैतिक पर्यावरण मिलता है, उस समाज के बालक बालिकाओं में नैतिकता से सम्बन्धित कार्य व्यवहार गतिविधियाँ दृष्टिगोचर होती हैं, इसके विपरीत स्थिति में अनैतिकता की गतिविधियाँ दृष्टिगोचर होती हैं,
9. दार्शनिक पर्यावरण भी बालक—बालिकाओं के कार्य व्यवहार में भिन्नता उत्पन्न करता है, आदर्शवादी, प्रकृतिवादी मानवतावादी एवं प्रयोजनवादी समाज के बालक बालिकाओं में पर्याप्त भिन्नता देखी जाती है,

## व्यक्तिगत भिन्नता की समझ की शिक्षक एवं विद्यालय के लिए आवश्यकता—

1. कक्षा—कछ एवं विद्यालय में उस स्थिति में ही अनुशासन स्थापित हो सकता है जब बालकों को उनकी व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर व्यवस्था एवं गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती हैं,
2. उच्च अधिगम स्तर बनाए रखने के लिए शिक्षक को सभी छात्रों को वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर समूह बनाकर अधिगम गतिविधियाँ उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिए,
3. अभिभावक एवं छात्रों के मन में विद्यालय के वातावरण के प्रति सकारात्मक भाव उस स्थिति में उत्पन्न होता है जब विद्यालय में शिक्षक द्वारा छात्रों की वैयक्तिक भिन्नता पर ध्यान दिया जाता है, इससे शतप्रतिशत नामांकन की स्थिति उत्पन्न होती है,
4. निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था के लिए शिक्षक को कक्षा—कक्ष के सभी छात्रों को उनका वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर वर्गीकृत करना पड़ता है इससे निर्देशन एवं परामर्श सर्वोत्तम एवं उपयोगी रूप से सम्पन्न होता है,
5. उपचारात्मक शिक्षण को प्रभावी एवं सफल बनाने के लिए भी शिक्षक सर्वप्रथम छात्रों की वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर समूह बनाने चाहिए,
6. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उस स्थिति में ही सम्पन्न होती है जब शिक्षक द्वारा छात्रों की रुचि, आवश्यकता एवं योग्यता के अनुरूप गतिविधियाँ सम्मिलित की जाती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. रुचिपूर्ण वातावरण का सृजन विद्यालय में उस स्थिति में ही सम्पन्न होता है जब शिक्षक द्वारा वैयक्तिक भिन्नता का ज्ञान प्राप्त करके उसके अनुरूप गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती है,
8. छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यकता होती है कि शिक्षक छात्रों के सभी पक्षों की विकास स्थितियों को ज्ञात करें यह वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर ही सम्भव होता है,
9. छात्रों की सहभागिता उस स्थिति में ही प्राप्त होती है कि शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को जानकर छात्रों के अनुरूप अधिगम गतिविधियाँ उपलब्ध कराते है,
10. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को सर्वोत्तम संगठन एवं संचालन के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक छात्रों की वैयक्तिक भिन्नता को जानकर उसके अनुयप पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था करे,





## अध्याय 13

### अधिगम के लिए आकलन और अधिगम के आकलन में अन्तर, भाषा आधारित आकलन, सतत् एवं समग्र आकलन: स्वरूप एवं प्रथाएँ (मान्यताएँ)

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है

#### अधिगम के लिए आकलन की विशेषताएँ—

1. अधिगम के लिए आकलन की प्रक्रिया में छात्रों की अधिगम आवश्यकताओं, शैक्षिक आवश्यकताओं एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं की खोज की जाती है तथा उसका समाधान किया जाता है,
2. अधिगम के लिए आकलन की प्रक्रिया में छात्रों के ज्ञान एवं कौशलों को समझने का प्रयास किया जाता है तथा अधिगम समस्याओं का समाधान किया जाता है
3. इसमें छात्रों के लिए अधिगम की नीतियों का सृजन सूचना स्रोतों के आधार पर किया जाता है, जैसे पोर्ट फोलियो, कार्य की प्रगति, शिक्षक का पर्यवेक्षण का परिचर्चा आदि,
4. इसमें छात्र एवं शिक्षक अपनी अधिगम गतिविधियों के सृजन एवं उनकी सफलता से पृष्ठपोषण प्राप्त करते हैं, इसमें प्रभावी पृष्ठपोषण को उचित व्यवस्था होती है,
5. इसमें छात्रों की सहभागिता ज्ञात की जाती है तथा शिक्षक का यह प्रयास होता है कि वह छात्रों की रुचि एवं योग्यता के आधार पर अनुदेशन प्रक्रिया को सहायोजित करें,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. अधिगम के लिए आकलन की प्रक्रिया में अधिगम स्तर में सुधार की योजना एवं गतिविधियों का सृजन किया जाता है, इस कार्य में शिक्षक एवं छात्र दोनों की सहभागिता होती है,
7. इसमें शिक्षक द्वारा अपने अनुदेशन की प्रक्रिया को अधिगम गतिविधियों के पश्चात् जो परिणाम प्राप्त होते हैं अर्थात् छात्रों के अधिगम स्तर के अनुरूप समायोजित किया जाता है
8. आकलन के परिणामों का छात्रों के आत्मसम्मान पर सकारात्मक प्रभाव लाने का प्रयास किया जाता है जिससे कि छात्रों के आत्म विश्वास एवं अधिगम स्तर में वृद्धि हो सके,
9. आकलन की प्रक्रिया छात्रों के लिए अभिप्रेरणा के रूप में कार्य करनी चाहिए इससे छात्र प्रेरित होकर प्रकरण को रुचिपूर्ण ढंग से उपयोगी समझते हुए अधिगम कर सके,
10. अधिगम के लिए आकलन में शिक्षक एवं छात्र दोनों ही अपनी स्थिति एवं अधिगम गतिविधियों का आकलन करते हैं तथा आवश्यकता के अनुरूप सुधार लाते हैं,

### अधिगम के आकलन की विशेषताएँ—

1. इसमें छात्रों के सहभागिता स्तर, उपलब्धि स्तर एवं ज्ञानात्मक स्तर का योग करके परिणाम घोषित किया जाता है अतः इसे योगात्मक आकलन की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है,
2. इसमें छात्रों को अंक या ग्रेड प्रदान करके उनके उपलब्धि स्तर का आकलन किया जाता है,
3. इसमें सैद्धान्तिक एवं प्रयोगिक उपलब्धि स्तर को अंक या ग्रेड द्वारा प्रस्तुत किया जाता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. इस आकलन की प्रक्रिया में दो छात्रों के अधिगम स्तर का अंकों के आधार पर या ग्रेड के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है
5. अधिगम के आकलन में छात्रों का आकलन करके अन्त में परिणाम घोषित किया जाता है
6. अधिगम के आकलन में छात्रों को एवं अभिभावकों को उनके अधिगम या उपलब्धि का परिणाम प्रगति प्रतिवेदन के रूप में प्रदान किया जाता है
7. अधिगम के आकलन की प्रक्रिया प्रकरण के पूर्ण होने के अन्त में सम्पन्न की जाती है,
8. इसके माध्यम से छात्रों को उनकी योग्यता एवं स्तर के आधार पर अंक प्रदान करके वर्गीकृत किया जाता है इसके पश्चात् उनकी अधिगम व्यवस्था में सुधार किया जाता है,
9. अधिगम के आकलन का प्रमुख उद्देश्य अधिगम में सुधार करना होता है जैसे कि एक छात्र के कम अंक आने पर स्वयं छात्र एवं अभिभावक दोनों ही अधिगम सुधार के लिए कार्य करते हैं,
10. अधिगम के आकलन का प्रचलन व्यावहारिक जगत में अधिक पाया जाता है क्योंकि यह सरल एवं उपयोगी प्रक्रिया है,

### अधिगम के आकलन तथा अधिगम के लिए आकलन में अन्तर—

1. अधिगम के लिए आकलन प्रकरण के आरम्भ से अन्त तक चलता है जबकि अधिगम का आकलन इकाई या प्रकरण के पूर्ण होने पर किया जाता है,
2. अधिगम के आकलन में परीक्षा एवं शिक्षक का स्वामित्व अधिक होता है तथा अधिगम के लिए आकलन में शिक्षक एवं छात्र दोनों द्वारा आकलन पर स्वामित्व का दृष्टिगोचर होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. अधिगम के लिए आकलन में व्याख्यात्मक अभिलेख तैयार किये जाते हैं अंक या ग्रेड नहीं दिए जाते हैं अधिगम के आकलन में अंक एवं ग्रेड प्रदान किए जाते हैं
4. अधिगम के लिए आकलन में ज्ञानात्मक एवं रचनात्मक प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है जबकि अधिगम के आकलन में योगात्मक प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है,
5. अधिगम के लिए आकलन में छात्रों की प्रगति का विवरण, पोर्टफोलियो एवं व्याख्यात्मक अभिलेखों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जबकि अधिगम आकलन में अंकों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है,

#### शाला आधारित आकलन की विशेषताएँ—

1. इस आकलन के अन्तर्गत शिक्षा के उद्देश्यों एवं विद्यालय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ सृजित की जाती हैं,
2. इस आकलन में मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का समन्वयन करके छात्रों के अधिगम सतर को उच्च एवं स्थायी बनाने का प्रयास किया जाता है,
3. इस प्रकार के आकलन में शैक्षिक गतिविधियों अधिगम गतिविधियों एवं अशैक्षिक गतिविधियों में छात्रों की रुचि का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है,
4. इस आकलन में शैक्षिक, तकनीकी, वैज्ञानिक अधिगम गतिविधियों एवं आकलन की नवीन अवधारणाओं का प्रयोग करके आकलन को विश्वसनीय एवं वैध बनाया जाता है,
5. शाला आधारित आकलन में छात्रों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखा जाता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. इसमें छात्रों से सर्वोत्तम सम्प्रेषण स्थापित करके उनके भाव एवं रुचि आदि को जाना जाता है तथा इसके अनुरूप अधिगम गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती है,
7. शाला आधारित आकलन का प्रमुख उद्देश्य छात्रों के लिए व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उपलब्ध कराना है,
8. शाला आधारित आकलन में प्रत्येक गतिविधि को संगठन रूप में प्रस्तुत किया जाता है तथा विश्व के अनुरूप निर्धारित एवं आवश्यक कौशलों का विकास किया जाता है, जैसे भाषा के आकलन में वाचन, लेखन, पठन, प्रस्तुतीकरण एवं शब्द भण्डार आदि का विकास करना,

### सतत् आकलन की विशेषताएँ—

1. सतत् आकलन की प्रक्रिया सत्र प्रारम्भ होने से सत्र के अन्त तक निरन्तर रूप से चलती रहती है, इसमें छात्रों के समस्त प्रश्नों का निरन्तर रूप से आकलन किया जाता है इसीलिए इसे व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है,
2. संचयी अभिलेख तैयार करना इस आकलन की विशेषता होती है इसमें प्रत्येक बालक के लिए पृथक् रूप से अभिलेख तैयार करके उसकी सूचना संचयी रूप में संग्रहीत की जाती है,
3. अधिगम के लिए सतत् आकलन की प्रक्रिया में निदानात्मक आकलन की प्रक्रिया तथा रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया को अपनाया जाता है जिससे छात्रों का आकलन व्यापक रूप से किया जा सके तथा अभिलेख में छात्र की स्पष्ट छवि दृष्टिगोचर हो सके,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. सतत् आकलन की प्रक्रिया में छात्रों के अभिलेख पृथक-पृथक रूप में तैयार किए जाते हैं, जिसके आधार पर उनके सर्वांगीण विकास के लिए निर्देशन एवं परामर्श प्रदान किया जा सकता है,
5. सतत् आकलन में छात्रों की गतिविधियों, कार्य व्यवहार एवं अधिगम स्तर का आकलन क्रमबद्ध रूप में किया जाता है
6. सतत् आकलन की परीक्षा मनोवैज्ञानिक, नियम, सिद्धान्त एवं मान्यताओं पर आधारित है,
7. इस आकलन को परीक्षा के विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाता है इसमें परीक्षा के अच्छे आकलन परिणाम वैध एवं विश्वनीय रूप में प्राप्त होते हैं,
8. सतत् आकलन की प्रक्रिया में विविध प्रकार की गतिविधियों का प्रयोग किया जाता है जैसे कक्षा-कक्ष का आकलन, गृह कार्य का आकलन एवं प्रायोगिक कार्य आकलन आदि,
9. सतत् आकलन में प्रक्रिया को अधिगम समय या अवधि की प्रक्रिया माना जाता है क्योंकि यह अधिगम के प्रारम्भ से अन्त तक चलने वाली प्रक्रिया होती है,
10. इसको आधुनिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि इसमें परीक्षा से उत्पन्न होने वाली दृष्टिकोणों का समाधार सरल एवं स्वाभाविक रूप में होता है

### समग्र आकलन की विशेषताएँ—

1. समग्र आकलन की प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत भिन्नताओं पर ध्यान देते हुए आकलन किया जाता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. इस आकलन में अधिगम के लिए निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है इसलिए यह उद्देश्यनिष्ठ प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है,
3. इस प्रक्रिया में योगात्मक आकलन का सहारा लिया जाता है इसमें छात्रों के कार्य व्यवहार, सैद्धान्तिक, ज्ञानात्मक एवं प्रयोगात्मक पक्ष का आकलन किया जाता है
4. इसमें छात्रों के प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शन का आकलन किया जाता है, इसके आधार पर ही अभिलेख तैयार किया जाता है,
5. इसमें रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है, इसमें छात्रों के ज्ञान एवं कौशल को ज्ञात करते हुए उसके अधिगम मार्ग की बाधाओं का उन्मूलन किया जाता है,
6. इसमें छात्रों को विविध प्रकार से शाब्दिक, अशाब्दिक, लिखित, मौखिक एवं अंक आदि के द्वारा पृष्ठ पोषण प्रदान किया जाता है
7. आकलन प्रक्रिया पर छात्रों का पूर्ण स्वामित्व होता है तथा शिक्षक का इसमें सहयोग होता है इसलिए इसे लोकतान्त्रिक प्रक्रिया माना जाता है,
8. इसमें छात्रों की सहभागिता एवं संलग्नता में वृद्धि करने के लिए आकलन किया जाता है,
9. इसे वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इसमें प्रत्येक पक्ष का आकलन क्रमबद्ध एवं सुसंगठित रूप में किया जाता है,

## अध्याय 14

### अधिगम कर्ताओं की तैयारी के स्तर की आकलन हेतु उपर्युक्त प्रश्नों का निर्माण, कक्षा-कक्ष में अधिगम बढ़ाने आलोचनात्मक चिन्तन तथा अधिगम कर्ता की उपलब्धि के आकलन के लिए

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है

#### अधिगमकर्ता की तैयारी

अधिगमकर्ता की अधिगम के लिए तत्परता की आकलन विविध प्रश्नों के माध्यम से होता है इसमें विविध प्रश्न पूछकर उसको प्रकरण के प्रति रुचि, जिज्ञासा, तत्परता एवं मनोदशा का आकलन किया जाता है।

कक्षा कक्ष अधिगम बढ़ाने के लिए प्रश्न निर्माण

1. पूर्ण ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछकर छात्र में आत्मविश्वास एवं आत्मगौरान्वित की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है।
2. प्रश्नों का संबंध एक दूसरे पर बना रहना चाहिए जिससे प्रकरण एवं अधिगम मध्य कमबद्धता बनी रहे इससे अधिगम में वृद्धि होती है।
3. छात्रों के मारसिक स्तर को ध्यान में रखकर प्रश्नों का निर्माण किया जाए।
4. समरयात्मक प्रश्नों के निर्माण से छात्रों में समस्या समाधान के लिए तर्क एवं चिन्तन का विकास होता है इससे अधिगत स्तर में वृद्धि होती है।
5. विकासात्मक प्रश्नों के निर्माण के माध्यम से छात्रों की प्रकरण अधिगम में सक्रिय समभागिता प्राप्त की जा सकती है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. सृजनात्मकता का विकास करने वाले प्रश्नों से छात्रों ने तर्क एवं चिन्तन विकसित किया जा सकता है इस अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है।
7. पूरक प्रश्नों के निर्माण से छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है इससे छात्र प्रश्नों का उत्तर देता है तथा अधिगम के प्रति उससे तत्परता उत्पन्न होती है।
8. अधिगम स्तर के उत्पन्न हेतु छात्रों से विविध प्रकार के वस्तुनिष्ठ, बहुविकल्पीय, लघु उत्तरीय एवं अति लघु उत्तरीय प्रश्न पूछने चाहिए।
9. प्रश्नों का निर्माण सदैव प्रकरण से संबंधित होना चाहिए।
10. प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को प्रश्न की उपयोगिता का अनुभव होना चाहिए।

### आलोचनात्मक चिन्तन के लिए प्रश्नों का निर्माण –

1. बौद्धिक स्तर का ज्ञान प्राप्त करते हुए छात्रों ने आलोचनात्मक चिन्तन संबंधी प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
2. रुचि आधारित प्रश्न पूछकर छात्रों की रुचि का ज्ञान प्राप्त किया जाए तथा इससे संबंधित प्रकरणों पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएं।
3. तार्किक प्रश्नों के निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण से भी छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन विकसित किया जा सकता है।
4. निबन्धात्मक प्रश्न पूछने से भी छात्रों द्वारा उस प्रकरण के पक्ष विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए जाते हैं।
5. विश्लेषणात्मक प्रश्नों का निर्माण भी छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास करना है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. खोज पूर्ण प्रश्न भी छात्रों के समझ प्रस्तुत किए जाएं तो उनसे भी छात्रों में तर्क एवं चिन्तन में आलोचनात्मक चिन्तन की स्थिति उत्पन्न होती है।
7. विविध प्रकार के तुलनात्मक प्रश्न पूछने पर छात्रों में घटनाओं एवं तथ्यों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है।
8. सामाजिक व्यवस्था पर आधारित प्रश्नों के माध्यम ने छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन की स्थिति उत्पन्न होती क्योंकि छात्र समाज में रहकर समाज की व्यवस्था पर चिन्तन करता है।
9. सांस्कृतिक व्यवस्था भी छात्रों के जीवन का अभिन्न अंग होता है इस आधार पर छात्रों द्वारा सांस्कृतिक व्यवस्था संबंधी प्रश्नों पर आलोचनात्मक चिन्तन किया जाता है।
10. धर्म भी समाज का अभिन्न अंग होता है। इस पर पूछे गए प्रश्न भी छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

### उपलब्धि आकलन के लिए प्रश्नों का निर्माण

1. उपलब्धि आकलन के लिए शिक्षक को अति लघु उत्तरीय प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, निबन्धात्मक प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, सत्य-असत्य प्रश्न, रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न, कौशल आधारित प्रश्न, प्रयोग आधारित बौद्धिक स्तर के अनुसार पूछे जाने चाहिए इससे छात्र की उपलब्धि का उचित आकलन सम्भव हो सकेगा।
2. उद्देश्य आधारित प्रश्नों के अंतर्गत ज्ञानात्मक उद्देश्य आधारित प्रश्न, अवबोधात्मक, उद्देश्य आधारित प्रश्न, अनुप्रयोगात्मक उद्देश्य आधारित प्रश्न, कौशलात्मक उद्देश्य आधारित प्रश्न, अभिरूचि आधारित प्रश्न, तथा अभिवृत्ति आधारित प्रश्नों का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण करना चाहिए



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

जिसमें कि यह ज्ञान हो सके कि छात्रों ने कौन-कौन से उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है।

### सर्वोत्तम प्रश्न निर्माण के उपाय

1. प्रश्न व्याकरण के दृष्टि से शुद्ध होने चाहिए तथा संक्षिप्त रूप में होने चाहिए संरक्षित एवं सारगर्भित प्रश्न सर्वोत्तम प्रश्न होते हैं।
2. प्रश्न प्रकरण एवं विषय वस्तु से संबंधित होने चाहिए बाहरी विषयवस्तु या अप्रासंगिक प्रश्न अच्छे नहीं माने जाते हैं।
3. प्रश्नों की भाषा सरल एवं बोधगम्य होनी चाहिए।
4. प्रश्नों का क्रम ज्ञात से अज्ञात की ओर तथा सरल से कठिन की ओर होना चाहिए तथा भ्रम पूर्ण प्रश्नों को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।
5. प्रश्नों का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण कक्षा-कक्ष के अनुरूप किया जाना चाहिए। खोजपूर्ण प्रश्न एवं पूरक प्रश्नों का उपयोग परिस्थिति के अनुरूप होना चाहिए।

## अध्याय 15

### अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठ भूमियों के अधिगमकर्ताओं की पहचान

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

#### अलाभान्वित वर्ग के बालकों की विशेषताएं

1. अलाभान्वित वर्ग के बालक मानसिक रूप से मंद पाए जाते हैं तथा इनमें शैक्षणिक पिछड़ापन देखा जाता है।
2. इन बालकों में विविध प्रकार की अस्थि संबंधी बीमारी पायी जानी है जिन्हे देखकर इनकी असामान्यता का अनुमान लगाया जा सकता है।
3. ये बालक सामान्य बालकों की तुलना में कार्य एवं व्यवहार की दृष्टि से पृथक दृष्टिगोचर होते हैं जिसके आधार पर वे लाभान्वित पाए जाते हैं।
4. चिरकालिक बीमारी से ग्रसित बालक-बालिका भी लाभान्वित श्रेणी में आते हैं।
5. श्रवण क्षतियुक्त दृष्टि श्रतियुक्त तथा बहुल विकलांगता वाले बालकों को भी अलाभान्वित वर्ग में सम्मिलित किया जाता है इन बालकों को पहचानने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है।
6. भाषायी दृष्टि से विकलांग बालकों को भी अलाभान्वित वर्ग में रखा जाता है।
7. संवंगात्मक रूप से अशांत रहना तथा व्यवहार में स्थिरता का अभाव अलाभान्वित बालकों के लक्षण माने जाते हैं।
8. आर्थिक कठिनाइयों में जीवन व्यतीत करने वाले बालक तथा अर्थिक शोषण के शिकार बालक अलाभान्वित वर्ग में सम्मिलित किए जाते हैं।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. राजनीतिक अधिकारों का उपयोग न कर पाने की स्थिति तथा राजनीतिक प्रभावशीलता का अभाव भी बालक बालिकाओं की अलाभान्वित बनाती हैं।
10. सामाजिक अधिकारों को प्राप्त न होना तथा सामाजिक व्यवस्था में प्रतिष्ठा प्राप्त न करना भी बालकों को अलाभान्वित बनाने का प्रमुख कारण है।
11. सांस्कृतिक व्यवस्था में सम्मानजनक स्थिति का न होना सहभागिता का न होना एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकसित न होना भी बालकों को अलाभान्वित बनाता है।

### अपवंचित वर्ग के बालकों की विशेषताएं

1. अभिभावकों के द्वारा बालक बालिकाओं को उचित संरक्षण न मिलने पर बालकों में अपवंचित का दोष उत्पन्न हो जाता है।
2. पारिवारिक वातावरण का उचित स्वरूप न होने के कारण जो वातावरण छात्रों को मिलना चाहिए नहीं मिल पाता इस कारण बालक अपवंचितता का शिकार हो जाते हैं।
3. जिन बालकों को समाज में समान अधिकारों की प्राप्ति नहीं होती है उस स्थिति में बालक अपवंचितता के दोषों से युक्त हो जाते हैं।
4. सामाजिक प्रतिष्ठा में अंतर की स्थिति भी बालकों में हीन भावना उत्पन्न कर देती है जिसके परिणामस्वरूप बालकों का कार्य व्यवहार प्रभावित होता है।
5. सामाजिक अन्याय एवं शोषण की स्थिति भा बालकों में अपवंचितता की स्थिति उत्पन्न करने में सहायक होती है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. आर्थिक असमानता के आधार पर भी कुछ बालकों को आर्थिक सुविधाएं प्राप्त नहीं होती है जिनका यह अधिकारी है इससे अपवंचन की स्थिति उत्पन्न होती है।
7. संवेगात्मक विकास का अभाव भी बालकों को अपवंचित बनाता है क्योंकि उनका व्यवहार सामान्य से पृथक होता है।
8. शारीरिक विकास का अभाव भी अपवंचन की स्थिति उत्पन्न करता है।
9. उचित पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक वातावरण का अभाव अपवंचन की स्थिति को उत्पन्न करने का प्रमुख कारण बनता है।
10. सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के अभाव में बालक अपवंचिततासे ग्रसित हो जाते हैं। तथा उनकी उपलब्धि स्तर सामान्य छात्रों से कम होना है।

#### **कक्षा – कक्ष में अलाभान्वित अपबंधित छात्रों की पहचान**

1. जो छात्र शैक्षणिक एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में पिछड़ा हुआ है वह अलाभान्वित या अपवंचित है।
2. जिन छात्रों को सीखने की गति सामान्य छात्रों की तुलना में मंद है वह अपवंचित या अलाभान्वित हो सकते हैं।

## अध्याय 16

### अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

1. दृष्टि क्षतिग्रस्त बालकों की आवश्यकताओं की पहचान— शिक्षक द्वारा छात्रों के लिए इस प्रकार की व्यवस्था कक्षा—कक्ष में एवं विद्यालय में करनी चाहिए जिससे दृष्टिदोष सम्बन्धी कठिनाई अधिगम कठिनाई के रूप में सामने न आए,
2. बाक्बाधित बालकों की आवश्यकताओं की पहचान— इस प्रकार के बालकों में आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए तथा उनको बोलने के अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए, समय—समय पर पृष्ठपोषण प्रदान करना चाहिए,
3. श्रवण श्रुतिग्रस्त बालकों की आवश्यकताओं की पहचान— इस प्रकार के बालकों को संकेत के माध्यम, लिप्स रीडिंग का प्रशिक्षण प्रदान करके तथा श्यामपट्ट पर अधिक कार्य प्रदान करना चाहिए जिससे कि छात्रों का यह दोष अधिगम कठिनाई न बन सके,
4. अस्थि क्षति ग्रसित बालकों की आवश्यकताओं की पहचान— इस प्रकार के बालक—बालिकाओं के लिए कक्षा—कक्ष एवं विद्यालय में इस प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उनकी अस्थि विकलांगता अधिगम के मार्ग में बाधा उत्पन्न न कर सके, जैसे रैम्प बनवाना, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की स्तरानुकूल व्यवस्था तथा उचित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उपलब्ध करना आदि,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. बौद्धिक क्षति ग्रसित बालकों की आवश्यकताओं की पहचान—मानसिक मंदता के आधार पर पाठ्यक्रम की व्यवस्था, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था एवं खेल आदि की व्यवस्था शिक्षक को करनी चाहिए तथा उनके साथ आत्मीय व्यवहार करना चाहिए,
6. अपवंचित बालकों की आवश्यकताओं की पहचान— इस प्रकार के बालकों के साथ आत्मीय व्यवहार करना चाहिए, सम्प्रेषण स्थापित करना चाहिए तथा उनकी प्रत्येक शैक्षिक एवं अशैक्षिक कार्य में सहभागिता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जिससे उनको अपवंचितता का अनुभव न हो,
7. अधिगम निर्योग्य बालकों की पहचान— अधिगम निर्योग्यता के स्वरूप को पहचानकर छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए जिससे प्रत्येक स्तर के छात्र को निर्योग्यता का अनुभव न हो सके,
8. छात्रों की प्रमुख अधिगम कठिनाइयाँ—
  1. छात्रों से सम्बन्धित अधिगम कठिनाइयों में इन सभी पक्षों को समझकर दूर करना चाहिए जोकि अधिगम के मार्ग में बाधा उपस्थित करती है,
  2. शिक्षक अपने कार्य व्यवहार को छात्रों के अनुरूप बनाकर स्वयं के दोषों को दूर करे तथा छात्रों के लिए सहयोगी एवं सुविधादाता के रूप में भूमिका का निर्वहन करे, इससे छात्रों की अधिगम कठिनाइयाँ समाप्त हो सकेंगी,
  3. पाठ्यवस्तु को भी छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप चयनित करना चाहिए तथा सरल से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर पाठ्य—सामग्री का क्रम होना चाहिए
  4. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभाव बनाने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग तथा शिक्षण यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

शिक्षक को छात्रों के लिए उचित पर्यावरण की व्यवस्था करनी चाहिए जैसे सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण का निर्माण आदि।



## अध्याय 17

### प्रतिभावना सृजनात्मक एवं विशेष क्षमता वाले अधिगम कर्ताओं की पहचान

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

#### प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ—

विविध विद्वानों एवं शिक्षाशास्त्रियों द्वारा प्रतिभाशाली बालकों की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रस्तुत की हैं जोकि शिक्षक के लिए प्रतिभाशाली बालकों को पहचानने में सहायता करती हैं—

1. ये बालक खेलों में विशेष रुचि का प्रदर्शन करते हैं तथा इन बालकों में मित्र बनाने की योग्यता 60: पाई जाती है,
2. प्रतिभाशाली बालकों में धैर्य धारण करने की क्षमता सामान्य बालकों से अधिक होती है, संकट काल में भी यह धैर्य बनाए रखते हैं,
3. प्रतिभाशाली बालक दूसरों को सम्मान देते हुए अनुशासित जीवन व्यतीत करते हैं वह दूसरों का परिहास नहीं करते हैं,
4. इन बालकों में सूचनाओं को ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है तथा शब्द भण्डार भी व्यापक रूप में पाया जाता है,
5. इनके द्वारा अपने मौखिक एवं लिखित प्रस्तुतीकरण में सारगर्भित एवं साहित्यिक श्याब्दों का प्रयोग किया जाता है,
6. इन बालकों की दैनिक चर्या एवं उपलब्धि स्तर सामान्य बालकों से भिन्न होती है तथा ये बालक अपने दायित्वों के प्रति समर्पित होते हैं,
7. इन बालकों में मूर्त एवं अमूर्त तथ्यों के प्रति रुचि देखी जाती है तभी ये प्रत्येक घटना के प्रति संश्लेषण एवं चिन्तन की प्रक्रिया अपनाते हैं,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. विद्यालयी विषयों में इनकी रुचि या तो अधिक होती है या कम होती है ये अपनी रुचि के विषयों पर अधिक ध्यान देना चाहते हैं,
9. इस प्रकार के बालक अपने विचारों, कार्यों एवं व्यवहारिक क्षमता के आधार पर नेतृत्व कर लेते हैं क्योंकि इनमें व्यापक सोच पाई जाती है,
10. शारीरिक दृष्टिकोण से भी इन बालकों का व्यक्तित्व प्रभावशाली, आकर्षक एवं पूर्ण माना जाता है इनका व्यक्तित्व अपूर्ण नहीं होता है,

### प्रतिभाशाली बालकों की समस्याएँ—

1. प्रतिभाशाली बालकों की प्रमुख समस्या समायोजन सम्बंधी सहोती है क्योंकि इनको घर, परिवार, विद्यालय, कक्षा—कक्ष एवं समाज में स्तरानुकूल वातावरण उपलब्ध नहीं होता है इसलिए इनको कुसमायोजन का सामना करना पड़ता है,
2. समाज, कक्षा—कक्ष एवं परिवार में इनकी प्रतिभाओं का सम्मान नहीं किया जाता है तथा उचित वातावरण उपलब्ध नहीं होता है इससे इनकी प्रतिभा कुंठित हो जाती है तथा इनका सर्वोत्तम रूप में विकास नहीं होता है,

### प्रतिभाशाली बालकों के लिए विद्यालय की भूमिका—

1. छात्रों के लिए उनके बौद्धिक स्तर पर रुचि के अनुरूप पाठ्यक्रम की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. इन छात्रों का समूह बनाकर सामान्य बालकों से पृथक् रूप से शिक्षा दी जाए,
3. इन बालकों को व्यक्तिगत रूप से भी विद्यालय में शिक्षा प्रदान की जा सकती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. छात्रों की प्रोन्नत करके उनकी रुचि, योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप पाठक्रम एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ उपलब्ध करायी जा सकती हैं,
5. प्रतिभाशाली बालकों को समस्या समाधान विधि एवं करके सीखने की विधि से शिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था करनी चाहिए,
6. इन छात्रों की साहसिक, नेतृत्वपूर्ण एवं सारगर्भित उत्तरदायित्व प्रदान करने चाहिए जिससे इनकी क्षमता का विकास हो सके तथा उनकी क्षमताओं का उपयोग हो सके,

### सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ—

1. सृजनात्मक बालकों में किसी भी तथ्य, घटना एवं सिद्धांत की वास्तविकता जानने की जिज्ञासा होती है।
2. सृजनात्मक बालकों द्वारा चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करते हुए सफलता प्राप्त की जाती है,
3. इन छात्रों में निर्भीकता का गुण पाया जाता है, ये प्रत्येक कार्य को निर्भीकता के आधार पर सम्पन्न करने का प्रयास करते हैं,
4. इन बालकों का मानसिक स्तर उच्च होता है तथा प्रत्येक तथ्य पर तार्किक विचार करते हैं,
5. प्रत्येक घटना एवं तथ्य के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों पर इन छात्रों द्वारा चिन्तन किया जाता है,
6. इन छात्रों द्वारा संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया से सारगर्भित नियम एवं सिद्धांतों की खोज एवं प्रस्तुतीकरण किया जाता है,
7. मानसिक उद्वेलन की प्रक्रिया इन छात्रों में स्वाभाविक रूप से पाई जाती है, ये छात्र प्रत्येक घटना एवं तथ्यों पर अनेक प्रश्नों का निर्माण करते हैं,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. इन छात्रों में अनुसंधान की प्रवृत्ति पाई जाती है, ये प्रत्येक वस्तु में सुधार करते हुए तथा नवीन सिद्धांत, नियम एवं ज्ञान की खोज करते हुए अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति को प्रकट करते हैं,
9. इन छात्रों में सकारात्मक चिन्तन पाया जाता है, ये किसी व्यवसाय को सर्वोत्तम रूप प्रदान करने के लिए प्रयासरत् रहते हैं,
10. ये अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने के लिए कविता, प्रतिरूप, कहानी एवं गीत आदि का सहारा लेते हैं,
11. ये बालक नियन्त्रण में रहकर कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्रता में रहकर अपना प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करते हैं,

### **सृजनात्मक बालकों के लिए विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका—**

1. छात्रों के समक्ष विविध प्रकार की समस्याएँ प्रस्तुत करने पर इन समस्याओं के समाधान के लिए छात्र नवीन विधियों एवं उपायों का सृजन,
2. छात्रों के समक्ष ऐसे प्रश्न दिए जाने चाहिए जिससे कि छात्र सृजनात्मक गतिविधियाँ सम्पन्न करने के लिए प्रेरित हो सके, जैसे मैं स्कूल में शिक्षक होता तो क्या होता?
3. विविध प्रकार के आँकड़े प्रस्तुत करके छात्रों से सूचना प्राप्त करने के लिए कहा जाए,
4. छात्रों से विविध प्रकार के सांस्कृतिक एवं विद्यालयी कार्यक्रमों में सकारात्मक सहभागिता प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए,
5. शिक्षक को अपने कार्यव्यवहार को सुविधादाता एवं सहयोगी के रूप में प्रस्तुत किया जाए,

### **सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ—**

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. इन छात्रों द्वारा विशेष क्षेत्रों से सम्बन्धित क्षेत्रों में अपनी विशेष रुचि का प्रदर्शन किया जाता है, जैसे खेल, कविता एवं कहानी आदि,
2. इन छात्रों को क्षेत्र विशेष में सर्वोत्तम प्रदर्शन करने पर उनकी विशेष क्षमता का आभास शिक्षक को होने लगता है, जैसे कविता, खेल एवं संगीत सम्बन्धी क्षमता आदि,
3. इन छात्रों में जब किसी क्षेत्र विशेष में पूर्ण समर्पित सहभागिता प्रदर्शित की जाती है तो उसकी विशेष क्षमता का आभास शिक्षक को होने लगता है,
4. जब छात्रों द्वारा कविता, कहानी, निबन्ध एवं प्रतिरूप निर्माण में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया जाता है तो उनकी सृजनात्मक क्षमता एवं क्षेत्र विशेष की क्षमता ज्ञात होती है,
5. इन छात्रों द्वारा विशेष क्षेत्र के लिए चिन्तन करते हुए तथा प्रयोग करते हुए अपनी रुचि एवं क्षेत्र के लिए चिन्तन करते हुए तथा प्रयोग करते हुए अपनी रुचि एवं क्षेत्र का आभास कराया जाता है,
6. इन छात्रों में सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने तथा विशेष क्षेत्रों में अपनी योग्यता के प्रदर्शन का लक्षण होता है जिससे इनकी क्षमता एवं क्षेत्र दोनों को ज्ञात किया जाता है,

इन छात्रों के द्वारा प्रदर्शित सकारात्मक दृष्टिकोण एवं समर्पण दोनों ही इनकी योग्यता एवं क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

## अध्याय 18

### समस्या ग्रस्त बालक : पहचान एवं निदानात्मक पक्ष

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

#### समस्याग्रस्त बालकों की विशेषताएँ—

1. इन बालकों का व्यवहार अमर्यादित होता है तथा कक्षा-कक्ष की गतिविधियों एवं नियमों में असहमति प्रदर्शित करते हैं,
2. इन बालकों में कुसमायोजन की स्थिति देखी जाती है इसलिए ये कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय आदि सभी स्थानों पर कुसमायोजित रहते हैं,
3. इन बालकों का व्यवहार विद्यटित होता है जिसमें संगठन एवं क्रमबद्धता का अभाव पाया जाता है,
4. इस प्रकार के बालक किसी कार्य को करने से पूर्व उसके परिणाम के बारे में विचार नहीं करते हैं इसलिए इनके कार्यों में अनुशासनहीनता एवं नियम विरुद्धता की स्थिति देखी जाती है,
5. इन बालकों द्वारा अपने साथी छात्रों के मार्ग में भी बाधा उत्पन्न की जाती है तथा उनके लिए समस्या ग्रस्त रूप में कार्य करते हैं,
6. इन छात्रों में क्रियाशीलता का अभाव पाया जाता है आलस एवं नीरसता प्रायः इनके व्यवहार में देखी जाती है जिससे ये अक्रियशील बालकों के रूप में जाने जाते हैं,
7. साथियों के साथ भी इनका कुसमायोजन होता है क्योंकि इनमें अन्तःक्रिया का अभाव पाया जाता है इससे इनका साथियों के साथ झगड़ा होता रहता है,
8. इन बालकों का मित्र वर्ग बहुत कम होता है क्योंकि इनके दोषपूर्ण व्यवहार से इनकी मित्रता टूट जाती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. ये बालक दूसरों पर विश्वास बहुत कम करते हैं तथा भयभीत स्थिति में रहते हैं,
10. संवेगात्मक अस्थिरता के कारण इनका व्यवहार कब नियम विरुद्ध हो जाएगा यह कहना कठिन होता है इसलिए इनको अविश्वसनीय माना जाता है,
11. इन बालकों में अप्रसन्नता की स्थिति का होना, स्वास्थ्यसहीनता का होना तथा निम्न बौद्धिक स्तर होना स्वाभाविक रूप से पाया जाता है,

### **समस्याग्रस्त बालकों के निदानात्मक कार्य में शिक्षक की भूमिका—**

1. शिक्षक द्वारा इनके साथ उचित सम्प्रेषण स्थापित करके इनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है,
2. शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार ही समस्याग्रस्त छात्रों को शिक्षक में विश्वास उत्पन्न करता है जिससे वे शिक्षक के दिशा निर्देशों एवं परामर्श का पालन करने लगते हैं,
3. शिक्षक द्वारा सुविधादाता के रूप में अपनी भूमिका प्रस्तुत करके इन छात्रों का शैक्षिक एवं अशैक्षिक कार्यों में सहयोग किया जा सकता है, जिसके आधार पर इनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकता है तथा अधिगम स्तर सामान्य छात्रों की भाँति हो सकता है,
4. शिक्षक द्वारा इन छात्रों के लिए स्तरानुकूल शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए जैसे खेल विधि, कविता एवं कहानी आदि द्वारा शिक्षण करना,
5. शिक्षक अधिगम सामग्री के प्रयोग से इनके लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाकर इनके अधिगम स्तर को उच्च किया जा सकता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. सामूहिक गतिविधियों को प्रस्तुत करके इनमें संवेगात्मक स्थिरता उत्पन्न की जा सकती है जिससे ये अपने संवेगों पर नियंत्रण तथा दूसरे के संवेगों को समझने का प्रयास करते हैं,
7. खेल द्वारा अधिगम प्रक्रिया को सम्पन्न करने से इन बालकों के संवेगात्मक विकास एवं सामाजिक गुणों का विकास सम्पन्न होता है,
8. शिक्षक द्वारा इनके कार्य व्यवहार में सुधार के होते समय तथा इनके द्वारा कार्यों में सम्पादन के समय पृष्ठपोषण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे इनमें आत्मविश्वास का विकास सम्भव होता है,
9. शिक्षक द्वारा समस्याग्रस्त छात्रों में नियमों एवं सदाचार के महत्व को समझते हुए स्वानुशासन की भावना का विकास करना चाहिए,

### **समस्याग्रस्त बालकों के निदानात्मक कार्य में विद्यालय की भूमिका—**

1. शिक्षकों को समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की जाए जिससे वे इन बालकों के हित में अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें,
2. विद्यालय में समस्याग्रस्त बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था करनी चाहिए,
3. समस्याग्रस्त बालकों की शैक्षिक आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यक्रम की व्यवस्था विद्यालय प्रबन्धन द्वारा करनी चाहिए पाठ्यक्रम सामान्य से पृथक् होगा,
4. जितने भी अनुसंधान समस्याग्रस्त बालकों के सन्दर्भ में होत हैं उनके उपयोगी परिणामों को इनकी शिक्षा व्यवस्था में क्रियान्वित किया जाना चाहिए,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. विद्यालय द्वारा निर्देशकर्ता एवं परामर्शदाता की नियुक्ति करनी चाहिए जिससे वे समस्याग्रस्त बालकों एवं उनके अभिभावकों को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर सकें,
6. विद्यालय में इस प्रकार के कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे समस्याग्रस्त छात्रों में प्रेम, सहयोग एवं परोपकार आदि सामाजिक गुण विकसित हो सकें,
7. विद्यालय में समस्याग्रस्त छात्रों को उनके सद्व्यवहार एवं उच्च अधिगम स्तर के लिए पुरस्कार देना चाहिए जिससे उनमें आत्मविश्वास विकसित हो सके,
8. विद्यालय में मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति करनी चाहिए जिससे मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के छात्रों के सन्दर्भ में उचित सुझाव प्रस्तुत करके इनका विकास निश्चित किया जा सके,
9. विद्यालय के स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता निश्चित होनी चाहिए जिसका लाभ प्राप्त करके समस्याग्रस्त बालक विकास की मुख्य धारा से सम्बद्ध हो सके,

### **अभिभावकों द्वारा समस्याग्रस्त छात्रों के निदानात्मक कार्यों में भूमिका—**

1. अभिभावकों को द्वारा अपने समस्याग्रस्त बालक—बालिकाओं पर सामान्य बालक—बालिकाओं की तुलना में अधिक ध्यान देना चाहिए,
2. समस्याग्रस्त बालक—बालिकाओं को प्रताड़ित एवं दण्डित न करते हुए उनके साथ आत्मीय व्यवहार करना चाहिए,
3. समस्याग्रस्त बालक—बालिकाओं के भाषा एवं विचारों का अभिभावकों को सम्मान करना चाहिए,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. शिक्षक द्वारा अभिभावकों को इन बालक-बालिकाओं के सन्दर्भ में जो भी दिशा-निर्देश प्रदान किए जाएं उनका ध्यानपूर्वक पालन करना चाहिए,
5. अभिभावकों द्वारा इन सभी बालक-बालिकाओं के लिए समय-समय पर चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए जिससे इनके स्वास्थ्य में सुधार संभव हो सके,
6. बालकों को घर परिवार में सम्पन्न होने वाले कार्यों में उनको उत्तरदायित्व प्रदान करने चाहिए जिससे कि उनमें आत्मविश्वास जागृत हो सके,

**समस्याग्रस्त बालकों के निदानात्मक कार्यों में अन्य संस्थाओं एवं व्यक्तियों की भूमिका—**

1. समस्याग्रस्त बाल-बालिकाओं के लिए सरकार द्वारा आवश्यक एवं उपयोगी नीतियों का निर्माण करना चाहिए तथा उनका क्रियान्वयन करना चाहिए,
2. सरकार द्वारा विविध प्रकार की योजनाओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन समस्याग्रस्त बालक-बालिकाओं के विकास हेतु करना चाहिए तथा जो संस्थाएं इस कार्य में लगी हों उनकी सहायता करनी चाहिए,
3. सरकार द्वारा स्वयंसेवी संस्थाओं की आर्थिक सहायता करनी चाहिए तथा उनका संरक्षण करना चाहिए जिससे समस्याग्रस्त बालक-बालिकाओं के उन्नयन में अनेक संस्थाओं की स्थापना हो सके,
4. सरकार द्वारा समस्याग्रस्त बालक-बालिकाओं के लिए पृथक् विद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए तथा विद्यालयों में आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

प्रधानाध्यापक द्वारा भी विद्यालयों में समय-समय पर इस प्रकार के बालकों की प्रगति का मूल्यांकन करना चाहिए तथा किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न होने पर स्वयं उसका समाधान करना चाहिए।



## अध्याय 19

### बाल अपराध कारण एवं प्रकार

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### बालापराध की विशेषताएँ—

1. बालापराध की संज्ञा 7 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों के द्वारा किए जाने वाले अपराध को प्रदान की जाती है,
2. बालापराध का अपराध करने का तरीका सामान्य अपराधी व्यक्तियों से पृथक् रूप में पाया जाता है,
3. विद्यालय स्तर पर बालक द्वारा विद्यालय से भागना, कक्षा से भागना तथा अपने साथियों की पुस्तक एवं पेन्सिल चुराने के रूप में बालापराध किया जाता है,
4. बालकों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव बालकों को अपराधी बनाता है, क्योंकि वे क्रोध में अमर्यादित कार्य एवं व्यवहासर करते हैं,
5. बालापराध की स्थिति में रचनात्मकता की प्रवृत्ति के स्थान पर विध्वंसात्मक प्रवृत्ति पायी जाती है, वह अपने हित के लिए दूसरों को हानि पहुँचाता है,
6. इन बालकों में नैतिकता एवं मानवता का अभाव देखा जाता है
7. इन बालकों के द्वारा विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष के नियमों का उल्लंघन किया जाता है तथा इस पर गपर्व अनुभव करते हैं,
8. इन बालकों में नकारात्मक सोच पाई जाती है इसी आधार पर यह समाज एवं विद्यालय के नियमों का पालन नहीं करते हैं,

#### बालापराध के व्यक्तिगत कारण—

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. जिन बालकों को शारीरिक विकास सन्तुलित रूप से नहीं होता है वह बालापराध के लिए प्रेरित हो जाते हैं, जैसे साथी बालकों के चिढ़ाने पर वह अपना धैर्य खो देते हैं और उनको हानि पहुँचाते हैं,
2. असन्तुलित शारीरिक एवं मानसिक विकास भी बालापराध का प्रमुख कारण होता है,
3. यौनांगों का तीव्र विकास तथा यौन शिक्षा के ज्ञान का अभाव भी बालापराध को जन्म देता है,
4. उत्पादक गुणसूत्रों के त्रुटिपूर्ण संयोग से उत्पन्न बालक-बालिकाओं में बालापराधी होने की सम्भावना सामान्य बालकों की तुलना में कम होती है,
5. वंशानुक्रम के आधार पर भी बालकों में आपराधिक प्रवृत्ति उत्पन्न होती है,
6. बालक की व्यक्तिगत नकारात्मक सोच भी उसके कार्य व्यवहार को अर्मादित बनाती है,

#### **बालापराध के मनोवैज्ञानिक कारण—**

1. बौद्धिक स्तर से हीन बालक उचित अनुचित का विचार नहीं कर पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आपराधिक गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं,
2. मानसिक रोगों से मानसिक विक्षिप्तता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसके आधार पर वह आपराधिक कार्यों को करने में संकोच नहीं करते हैं,
3. बालकों के मन में अवरुद्ध इच्छाएँ भी उनके कार्य व्यवहार को असंतुलित बनाती है,
4. जब छात्रों में हीन भावना का विकास हो जाता है जो भी वह समाज विरोधी व्यवहार करते हैं,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. संवेगात्मक अस्थिरता की बालापराध को उत्पन्न करने का प्रमुख कारण मानी जाती है,

### बालापराध के सामाजिक कारण—

1. परिवार का दोषपूर्ण एवं फलहपूर्ण वातावरण बालकों को अपराधी कार्यों की ओर प्रवृत्त करता है,
2. विद्यालय यका वातावरण भी यदि अनुचित एवं दोषपूर्ण होता है तो भी बालापराध उत्पन्न होता है,
3. समाज का दूषित एवं आपराधिक वातावरण बालकों को अपराधी बनाने में सहयोग देता है,
4. बालक का निवास अपराधिक क्षेत्र में है तो बालक निश्चित रूप से अपराधी बनेगा,
5. मनोरंजन के साधनों के अभाव में बालकों द्वारा अश्लील साहित्य एवं अश्लील गतिविधियों का सहारा लिया जाता है,
6. समाज में शिक्षा का स्तर निम्न होता है तो भी बालापराध की स्थिति उत्पन्न होती है,
7. शुद्ध के प्रभाव के कारण भी बालक अनाथ हो जाते हैं उनके अपराधी होने की सम्भावना बढ़ जाती है,
8. सामाजिक विघटन का आशय एकल परिवारों की स्थापना से है जिसमें बालकों का संवेगात्मक विकास नहीं हो पाता है तथा बालक अपराधी हो जाते हैं,
9. नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा एवं समाज के आदर्शवादी दर्शन के अभाव में बालकों में आपराधिक प्रवृत्ति विकसित होती है,

### बालापराध के आर्थिक कारण—

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. धन का असमान वितरण परिवारों में एवं बालकों में हीन भावना उत्पन्न करता है जिससे बालापराध उत्पन्न होता है, गरीबी में भी बालक अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए अपराध करता है,
2. बाल श्रम के द्वारा भी बाल श्रमिक अपराध की ओर प्रवृत्त होता है क्योंकि उनका आर्थिक एवं शारीरिक शोषण किया जाता है,
3. आर्थिक गतिविधियों में पारश्चिता, स्पष्टता एवं समानता न होने पर वर्ग विभाजन पूँजीपति एवं मजदूर वर्ग के रूप में होता है तब बालापराध की स्थिति उत्पन्न होती है,

#### बालापराध के राजनीतिक कारण—

1. सरकार द्वारा बालकों के कल्याण हेतु उचित नीतियों का निर्माण न होना तथा क्रियान्वयन न होना बालापराध की जन्म देता है,
2. उचित शिक्षा नीतियों के अभाव के कारण भी शिक्षा का स्तर निम्न होता है जिससे बालापराध को जन्म मिलता है,
3. बाल विकास सम्बन्धित कार्यक्रमों एवं योजनाओं का अभाव भी बालापराध का जन्म देता है,
4. सरकारी तन्त्र की बाल विकास के प्रति उदासीनता बालापराध को जन्म देती है,

#### बालापराध के प्रकार—

1. कक्षा में अनुपस्थित रहकर विद्यालय में इधर-उधर घूमना या छिपकर बैठ जाना बालापराध की श्रेणी में आता है,
2. विद्यालय, कक्षा-कक्ष एवं घर में चोरी करना बालापराध की श्रेणी में आता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

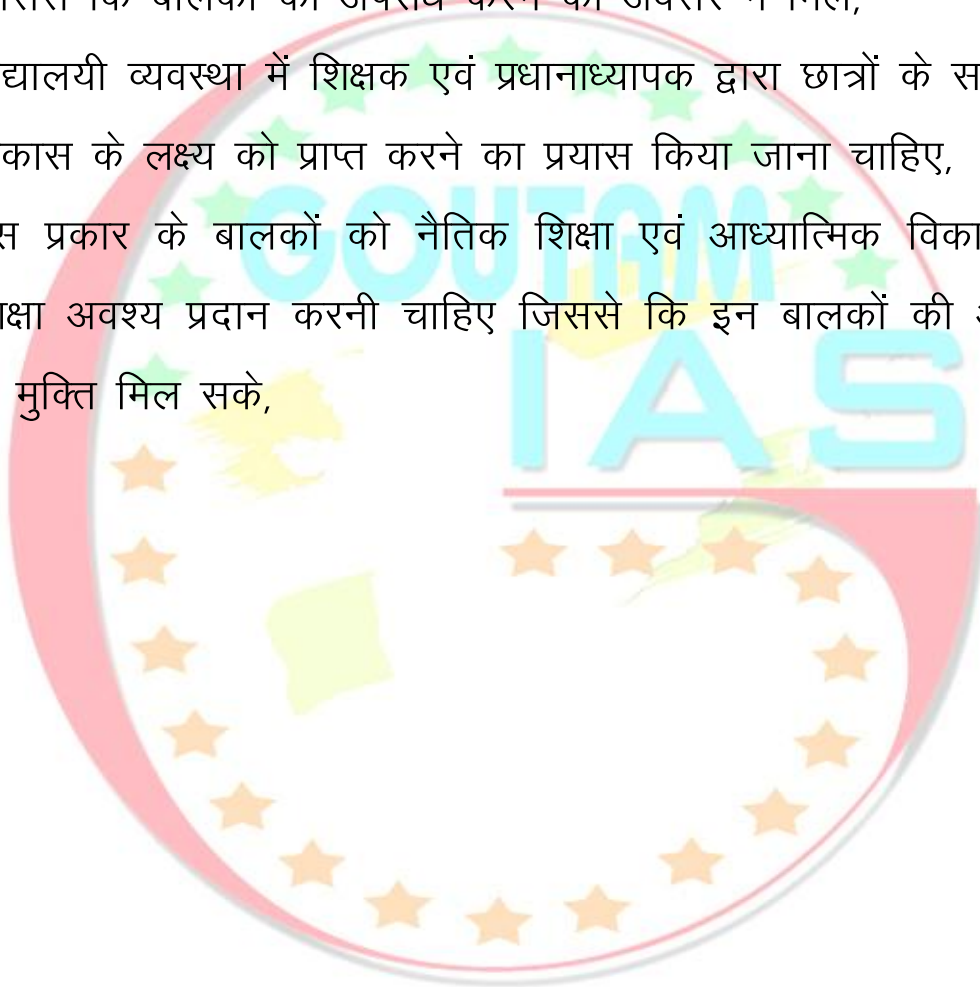
3. विद्यालय में भागकर सिनेमा देखने जाना तथा अन्य किसी निरर्थक गतिविधि में संलग्न होना बालापराध की श्रेणी में माना जाता है,
4. नशा करना भी बालापराध में आता है जैसे तम्बाकू खाना, सिगरेट पीना तथा शराब पीना आदि,
5. अश्लील साहित्य एवं अश्लील गीतों में रूचि का प्रदर्शन करना या संलग्न होना भी बालापराध की श्रेणी में आता है,
6. जुआ खेलना एवं विद्यालय से भाग का प्रतिदिन सिनेमा देखना बालापराध है,
7. छोटे छात्र-छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार करना एवं उनको डराना, धमकाना बालापराध की श्रेणी में आता है,
8. विद्यालय में की जाने वाली रेगिंग बालापराध की श्रेणी में आती है,
9. झूठ बोलकर अपना दोष छिपाना तथा अपराध करते हुए झूठ बोलना बालापराध की श्रेणी में आता है,
10. झगड़ा करना षड्यन्त्र करना एवं सामूहिक हिंसा भी बालापराध की श्रेणी में आता है,

### **बालापराध रोकने के उपाय—**

1. बालापराधी बालकों को बाल सुधार विद्यालय में प्रवेश कराकर उनकों सुधार करने की व्यवस्था की जाती है,
2. बाल कारगार में भी उनको विविध प्रकार के उपायों के माध्यम से सुधरा जाता है
3. विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षक, निर्देशकर्ता एवं परामर्शदाता द्वारा बालकों को एवं उनके अभिभावकों निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करके सुधारा जाता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. विविध प्रकार के मनोवैज्ञानिक उपायों से भी इस प्रकार के बालकों को सुधार जा सकता है, व्यावसायिक चिकित्सा, क्रीड़ा चिकित्सा, अँगुलि चित्रकारी तथा मनोनाटक के माध्यम से इस प्रकार के छात्रों में सुधार सम्भव है,
5. बालापराधों व गतिविधियों के समापन के लिए सरकार, समाज अभिभावक एवं शिक्षक द्वारा संयुक्त रूप में से प्रयास करना चाहिए। जिससे कि बालकों को अपराध करने का अवसर न मिले,
6. विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए,
7. इस प्रकार के बालकों को नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विकास की शिक्षा अवश्य प्रदान करनी चाहिए जिससे कि इन बालकों की अपराध से मुक्ति मिल सके,



## अध्याय 20

### बच्चे कैसे सोचते हैं एवं सीखते हैं, बच्चे शाला प्रदर्शन में क्यों और कैसे असफल होते हैं?

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### एरिकसन द्वारा सोचने एवं सीखने की प्रक्रिया—

1. शैशवावस्था की प्रथम अवस्था में बालक के प्रति परिवार के सदस्यों का व्यवहार सहारात्मक होता है तो उसका दृष्टिकोण सकारात्मक रूप में होता है इसके विपरीत स्थिति में नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है,
2. प्रारम्भिक बाल्यावस्था के अन्तर्गत बालक प्रथम अवस्था में स्वतन्त्र गतिविधियों के बारे में विचार करता है तथा सम्पन्न करने का प्रयास करता है, वह अभिभावकों के निर्देशों का पालन भी करता है, अधिक नियंत्रण से उसमें संकोच की स्थिति उत्पन्न होती है तथा वह नकारात्मक रूप से समाज के बारे में विचार करता है,
3. खेल अवस्था की प्रथम स्थिति के अन्तर्गत बालक द्वारा विद्यालय में खेलने के प्रयास किया जाता है तथा घर पर भी वह अधिक खेलना चाहता है यदि उसकी खेल प्रक्रिया में शिक्षक एवं अभिभावक द्वारा सहयोग किया जाता है तो उसकी सोच सकारात्मक होती है तथा इसके विपरीत स्थिति में सोच नकारात्मक होती है,
4. विद्यालयी व्यवस्था में बालक अपने साथी समूह के अनुरूप तथा स्वतन्त्र रूप से सोचता है उसको यदि अपनी सोच के अनुरूप कार्यों में सफलता मिलती है तो उसमें आत्मविश्वास विकसित होता है यदि उसको सफलता नहीं मिलती है तो उसकी सोच में हीन भावना का



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

समावेश होता है तथा उसकी सोच निष्क्रिय एवं नकारात्मक हो जाती है,

5. इस अवस्था को किशोरावस्था माना जाता है, इस अवस्था में बालक द्वारा आत्म प्रेम विकसित होता है वह अपने बारे में विचार करता है तथा अहं की स्थिति उत्पन्न होती है, बालक को यदि उचित वातावरण प्राप्त होता है तो उसकी सोच सकारात्मक होती है यदि उसको नकारात्मक वातावरण प्राप्त होता है तो सोच नकारात्मक होती है,

### पियाजे के अनुसार सोचने एवं सीखने की प्रक्रिया—

1. जैसे—जैसे बालक में जैविक परिपक्वता आती जाती है वह विविध प्रकार की क्रियाओं एवं गति विधियों के बारे में सीखने लगता है तथा सोचने लगता है जैसे भूख एवं प्यास के आधार पर दूध एवं पानी के बारे में सोचना एवं उनको प्राप्त करने की क्रियाओं को सीखना आदि,
2. बालक भौतिक वातावरण सम्बन्धी विविध प्रक्रिया के बारे में विचार करता है तथा इसके बारे में सीखता है जैसे काँच की शीशी एवं पत्थर में अन्तर सोचकर पत्थर को जमीन पर फेंक देता है परन्तु काँच की शीशी को नहीं फेंकता है इसलिए कि काँच की शीशी जमीन पर फेंकने से टूट जाएगी,
3. समाज में होने वाली अनेक सार्थक एवं उपयोगी क्रियाओं के बारे में सोचता है तथा उनको सीखता है जैसे प्रेम, सहयोग एवं त्याग का वातावरण प्रस्तुत करना तथा सामाजिक कार्यक्रमों एवं परम्पराओं के बारे में सोचना एवं सीखना आदि,
4. इस स्थिति में समन्वयन के बारे में सोचता है तथा विविध क्रियाओं में समन्वयन स्थापित करने का प्रयास करता है जैसे वह किसी भी तथ्य

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

एवं घटना का जब तक संयोजन एवं विश्लेषण करता है जब तक की उसके वास्तविक निष्कर्ष पर न पहुँच जाए

5. अनुकूलन की अवस्था में बालक प्रथम अवस्था में बालक अपने पूर्व अनुभवों के आधारपर सोचता है तथा सीखता है द्वितीय अवस्था में वह उसको विविध ज्ञानात्मक तथ्यों के आधार पर सही रूप में स्वीकार करते हुए सोचता है जैसे ऊँट को घोड़ा मानना तथा बाद में उसे ऊँट के रूप में स्वीकार करना,

### पियाजे के अनुसार सोचने एवं सीखने की अवस्थाएँ—

1. प्रथम अवस्था को संवेदागात्मक अवस्था के नाम से जाना जाता है, इसके 6 भाग होते हैं जोकि क्रमशः 0 से 1 माह, 1 से 4 माह, 4 से 8 माह, 8 से 12 माह, 12 माह से 18 तथा 18 माह से 24 माह से सम्बन्धित होते हैं, इस अवस्था में बालक की सोच आत्मकेन्द्रित होती है तथा धीरे-धीरे वह अन्तिम अवस्था कारण एवं परिणाम में सम्बन्धस स्थापित करता है,
2. पूर्व क्रियात्मक अवस्था की प्रथम अवस्था पूर्व संकल्पनात्मक काल में वह भाषायी प्रस्तुतीकरण के बारे में विचार करता है तथा खेल के माध्यम से प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया को उपयोगी बनाता है, वह प्रस्तुतीकरण के सम्बन्धस में सोचता है तथा विचार करता है द्वितीय अवस्था अन्तः प्रज्ञ चिन्तन काल में वह उचित एवं अनुचित के बारे में सोचता है तथा उचित क्रियाओं को सीखने का प्रयास करता है,
3. मूर्त क्रियात्मक अवस्था के अन्तर्गत वह अपने विचारों को तार्किक एवं संगठित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है वह अपने मन के विचारों को सार्थक रूप प्रदान करता है तथा भाषायी प्रस्तुतीकरण करता है, बालक द्वारा विकेन्द्रण, अविनाशिता, कमगत क्षमता,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

नकारात्मक क्षमता, समरूपता, अतिपूर्तिकरण एवं मानसिक पुन प्रस्तुतीकरण की क्षमता समरूपता अतिपूर्तिकरण एवं मानसिक पुन प्रस्तुतीकरण की क्षमता के बारे में विचार किया जाता है तथा तथ्य सीखा जाता है,

4. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था में किशोरों द्वारा मूर्त एवं अमूर्त तथ्यों पर भी चिन्तन किया जाता है तथा वह अमूर्त एवं मूर्त गतिविधियों को सीखते हुए अपनी भूमिका का सर्वश्रेष्ठ रूप में निर्वहन करता है,

### नैतिक सन्दर्भ में सोचने एवं सीखने की प्रक्रिया—

इसको कोहलबर्ग एवं पियाजे के अनुसार प्रस्तुत किया जा सकता है, दोनों का स्वरूप निम्नलिखित है—

#### 1. कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक सोचने एवं सीखने की प्रक्रिया—

1. प्रथम अवस्था पूर्व परम्परागत स्तर होता है इसमें प्रथम अवस्था परतन्त्रात्मक अवस्था होती है जिसमें बालक सामाजिक एवं नैतिक नियमों को दण्ड एवं परतन्त्रता के कारण सम्पन्न करता है, द्वितीय अवस्था नव आत्मकेन्द्रियता से सम्बन्धित होती है जिसमें वह दूसरों की सहायता इस आधार पर करता है कि दूसरे भी उसकी सहायता करें, इन दोनों आधारों पर छात्रों की सोचने की एवं सीखने की प्रक्रिया सम्पन्न होती है,
2. परम्परागत स्तर की प्रथम अवस्था में बालक इसलिए नैतिक नियमों को सीखते हैं जिससे कि समाज, विद्यालय एवं घर, परिवार में उचित स्थान प्राप्त हो सके, द्वितीय अवस्था में प्रत्येक कार्य को अन्तः करण की अनुभूति के आधार सम्पन्न करते हैं, विचार करते हैं तथा सीखते हैं उनकी इस गतिविधि में निष्ठा एवं समर्पण की भावना होती है,

3. उत्तर परम्परागत की सामाजिक ठेका निर्धारण अवस्था में समाज के नियम एवं परम्पराओं के बारे में सोचता है तथा सार्थकता का अनुभव होने पर उनको सीखने का प्रयास करता है सिद्धान्त उन्मुखीकरण की अवस्था में वह जनहित, समाजहित एवं मानवहित पर सोचता एवं विचार करता है तथा इससे सम्बन्धित गतिविधियों को सीखने का प्रयास करता है,
2. पियाजे के आधार पर नैतिक सोचने एवं सीखने की प्रक्रिया—
  1. आत्मकेन्द्रियता की अवस्था में बालक अपने हित के बारे में ही सोचता है तथा सीखता है,
  2. परतन्त्रात्मक अवस्था में बालक किसी नियम एवं परम्परा के बारे में विचार करता है तथा उसको सामाजिक दण्ड एवं अनुशासन के नाम पर सीखने का प्रयास करता है, परतन्त्र रूप में नैतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में सोचता है तथा स्वीकार करता है, पूर्व क्रियात्मक अवस्था में स्वतन्त्रतापूर्वक सामाजिक एवं नैतिक नियमों पर विचार करता है तथा सीखने का प्रयास करता है,
  3. संक्रमण की अवस्था में बालक समाज के तथा नैतिकता के नियमों के बारे में संश्लेषण एवं विश्लेषण करता हुआ निर्णय लेकर ही उनको सीखता है, उसका निर्णय एवं विचार सीखने के लिए प्रेरित करता है,
  4. स्वायत्ता की अवस्था में पियाजे के अनुसार नैतिक विकास पर विचार एवं सीखने की प्रक्रिया व्यापक एवं तीव्रगति से होती है, इस अवस्था में बालक प्रत्येक नैतिक नियम एवं सिद्धान्त पर संश्लेषण एवं विश्लेषण करता है उचित गतिविधि को सीखता है तथा अनुचित गतिविधि को अस्वीकार कर देता है,

**बच्चों के शाला प्रदर्शन में असफल होने के कारण एवं समाधान—**

1. दूसरे पर बालक की अधिक निर्भरता उसको असफल बनाती है तथा आत्मनिर्भरता उसे सफल बनाती है,
2. असफलता का भय उसको प्रत्येक कार्य में असफल बनाता है तथा निर्भीकता एवं आत्मविश्वास बालक को विद्यालयी प्रदर्शन में सफल बनाता है
3. बौद्धिक स्तर में अन्तर होने पर बालक को उसके बौद्धिक स्तर के अनुरूप प्राप्त विद्यालयी व्यवस्था सफल बनाती है तथा प्रतिकूल व्यवस्था बालक को असफल बनाती है,
4. बालक ने घर परिवार के अन्तर्गत संकोच एवं भय का वातावरण देखता है तो वह विद्यालय में भी असफलता का प्रदर्शन करेगा यदि विद्यालय का वातावरण सर्वोत्तम होगा तो बालक का प्रदर्शन सर्वोत्तम रूप में होगा,
5. बालक की रुचि एवं अवधान क्षमता प्रभावी रूप में कार्य करती है तो बालक का विद्यालयी प्रदर्शन सर्वोत्तम रूप में होगा अन्यथा बालक असफल बना रहेगा,
6. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वरूप बालक की रुचि एवं योग्यता के अनुरूप नहीं है तो बालक विद्यालयी प्रदर्शन में असफल होगा इसके विपरीत स्थिति में बालक का प्रदर्शन सफल रूप में होगा,
7. बालक की रुचि एवं योग्यता के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का उपलब्ध न होना बालक के विद्यालयी प्रदर्शन को असफल बनाएगा तथा अनुरूप पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ एवं पाठ्यक्रम बालक के विद्यालयी प्रदर्शन को सफल बनाएगा,
8. विद्यालय में छात्रों की व्यवस्था शिक्षण सूत्रों के आधार पर सम्पन्न नहीं होती है तो छात्रों का विद्यालयी प्रदर्शन असफल होगा, यदि शिक्षण



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

सूत्रों के आधार पर सम्पन्न होती है तो बालकों का विद्यालयी प्रदर्शन सफल रूप में दृष्टिगोचर होगा,

9. आत्मविश्वास का अभाव बालक के विद्यालयी प्रदर्शन को असफल बनाता है तथा आत्मविश्वास का प्रभाव छात्रों के विद्यालयी प्रदर्शन को सफल बनाता है
10. छात्रों में क्रियाशीलता का अभाव भी बालक को नीरस एवं अक्रियाशील बनाता है जिससे बालक असफल हो जाता है जबकि बालक की क्रियाशीलता विद्यालयी प्रदर्शन में उसको सफल बनाती है
11. बालक को उसकी गतिविधियों के लिए पृष्ठपोषण प्रदान नहीं किया जाता है तो बालक विद्यालयी प्रदर्शन में असफल होता है शिक्षक एवं विद्यालय द्वारा छात्रों को उचित पृष्ठपोषण प्रदान किया जाता है तो छात्र विद्यालयी व्यवस्था में सफल होते हैं,
12. छात्रों को अधिक सहायता उपलब्ध कराने पर छात्र. में सहायता प्राप्त करने की आदत विकसित होती है जिससे वह असफल हो जाता है, यदि उसको आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक सहायता उपलब्ध करायी जाती है तो वह विद्यालयी व्यवस्था में सफल होता है,
13. समय प्रबन्धन के अभाव में बालक प्रत्येक गतिविधि को उचित समय नहीं दे पाता है जिसके परिणामस्वरूप असफल हो जाता है इसके विपरीत स्थिति में अर्थात् समय प्रबन्धन के माध्यम से बालक को सफल बनाया जा सकता है,

## अध्याय 21

### शिक्षण अधिगम की मूलभूत क्रियाएं, बच्चों के अधिगम की रणनीतियां, अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में तथा अधिगम का सामाजिक संदर्भ

अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### शिक्षण अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ—

1. शिक्षण अधिगम की संकल्पना के आधार पर शिक्षण का परिणाम अधिगम के रूप में प्राप्त होता है तथा ये दोनों एक ही सिक्के के दो पक्ष के समान हैं, जिनको पृथक् नहीं किया जा सकता है,
2. शिक्षण अधिगम की प्रकृति में शिक्षण को भी कला एवं विज्ञान के रूप में माना जाता है तथा अधिगम को भी कला एवं विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाता है,
3. शिक्षण एवं अधिगम दोनों का ही उद्देश्य छात्रों के व्यवहार का परिमार्जन एवं परिवर्तन होता है
4. शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी एवं रुचिपूर्ण बनती है, जब इसका प्रयोग नहीं होता है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावहीन हो जाती है,
5. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया जब प्रभावी रूप में सम्पन्न होती है तो छात्रों का अधिगम स्तर उच्च एवं स्थायी रूप में होता है, इसके विपरीत स्थिति में छात्रों का अधिगम स्तर निम्न हो जाता है
6. शिक्षण अधिगम में प्रयुक्त गतिविधियाँ छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप होती हैं तो छात्र का अधिगम स्तर उच्च हो जाता है इसके विपरीत स्थिति में निम्न बना रहता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. शिक्षण एवं अधिगम के प्रमुख चर शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हैं इनको भी पृथक नहीं किया जा सकता है
8. सम्प्रेषण के उचित रूप में सम्पन्न होने पर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी रूप में सम्पन्न होती है तथा छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है
9. शिक्षण सूत्रों का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं छात्रों के अधिगम स्तर को सर्वोत्तम रूप प्रदान करता है इसक विपरीत स्थिति में छात्रों का अधिगम स्तर निम्न होता है,
10. पाठ्य योजना के निर्माण से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी रूप से सम्पन्न होती है तथा छात्रों का अधिगम स्तर उच्च एवं स्थायी रूप में होता है,
11. शिक्षण कौशलों के प्रयोग से ही छात्रों में विविध अधिगम कौशलों का विकास होता है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है,
12. व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर सम्पन्न की जाने वाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया रूप से सम्पन्न होती है जिसके परिणामस्वरूप छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है

### **बच्चों के अधिगम की रणनीतियाँ—**

1. बौद्धिक अधिगम को सम्पन्न करने के लिए छात्रों के लिए चिन्तन, कल्पना, स्मरण एवं निरीक्षण आदि के विकास सम्बन्धी रणनीतियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए,
2. संवेदात्मक अधिगम के लिए छात्रों के लिए छात्रों के समक्ष इस प्रकार की गतिविधियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए जिसमें ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों का संयुक्त प्रयोग सम्भव हो सके,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. मौखिक अधिगम के लिए छात्रों के समक्ष मुक्त पुनः स्मरण विविध सम्बन्धी, क्रमिक पुनरुत्पादन विधि सम्बन्धी तथा युगल सहचारी विधि सम्बन्धी रणनीतियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए,
4. निरीक्षण द्वारा अधिगम के लिए छात्रों के समक्ष मूर्त वस्तुओं एवं विचारों सम्बन्धी गतिविधियाँ अधिक तथा अमूर्त वस्तुओं एवं विचारों सम्बन्धी गतिविधि कम प्रस्तुत करनी चाहिए,
5. अधिगम में छात्रों की सहभागिता प्राप्त करने के लिए उनके समक्ष विषयवस्तु की उपयोगिता एवं महत्व सम्बन्धी तथ्य प्रस्तुत करने चाहिए,
6. समस्या समाधान के लिए व्यूह रचना का निर्माण करने के लिए छात्रों के समक्ष उनके बौद्धिक स्तर एवं आयु के अनुरूप समस्याएँ प्रस्तुत करनी चाहिए,
7. बालकों में अधिगम के लिए उनके समक्ष उनकी रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप गतिविधियाँ प्रस्तुत करके अधिगम वातावरण का सृजन करना चाहिए,
8. खेल एवं कविता सम्बन्धी रणनीतियाँ को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने पर उनके अधिगम स्तर को एवं स्थायी बनाया जा सकता है,
9. परिचर्चा सम्बन्धी रणनीतियाँ छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करके उनके अधिगम स्तर को उच्च एवं स्थायी बनाया जा सकता है,
10. प्रयोग सम्बन्धी एवं क्रियाशीलता के विकास सम्बन्धी अधिगम रणनीतियों के माध्यम से छात्रों में अधिगम स्तर, क्रियाशीलता एवं प्रयोग की क्षमता में वृद्धि की जा सकती है
11. समूह अधिगम की रणनीतियों से भी छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च एवं स्थायी बनाया जा सकता है अधिगम के लिए अभिप्रेरणात्मक रणनीतियों का प्रयोग व्यापक रूप से करना चाहिए,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

12. अधिगम के नियमों को ध्यान में रखते हुए छात्रों के लिए तैयार की जाने वाली अधिगम रणनीतियाँ छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च बनाती हैं

### अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में—

1. अधिगम की प्रक्रिया का प्रारम्भ बालक के लिए सर्वप्रथम परिवार में होता है, परिवार के सदस्यों के सहयोग से वह अधिगम करता है
2. पड़ोस में अपने अधिगम प्रक्रिया को वह पड़ोस के मित्रों के साथ तथा पड़ोस के व्यक्तियों के साथ सम्पन्न करता है, वह पड़ोस से बहुत अधिक सीखता है,
3. सामाजिक व्यवस्था में रहकर बालक अपनी सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों को समाज में रहने के लिए व्यक्तियों के माध्यम से सीखता है
4. बालक परिवार में अपने भाई—बहिन एवं माता—पिता के साथ रहकर अनेक शिष्टाचार सम्बन्धी रीति रिवाजों, कर्तव्यों एवं परम्पराओं के बारे में सीखता है,
5. विद्यालय में छात्र शिक्षक के साथ, अपने साथी समूह के साथ रहकर सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन सम्बन्धी गतिविधियों को सीखता है
6. समाज में सम्पन्न होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों में बालक सामाजिक नियम एवं सिद्धांतों को सीखता है, जैसे विवाह कार्यक्रम, प्रीतिभोज कार्यक्रम एवं राजनीतिक कार्यक्रम आदि,
7. विद्यालय में सम्पन्न होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों, राष्ट्रीय कार्यक्रमों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य सहभागिता एवं उत्तरदायित्वों का निर्वहन करके छात्र अधिगम करता है,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी बालक नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा सम्बन्धी परम्पराओं को सीखता है तथा उनके निर्वहन से समाज में अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है
9. समाचार –पत्र पत्रिकाओं पुस्तकों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से भी छात्रों द्वारा अधिगम का प्रयास किया जाता है क्योंकि ये सभी सामाजिक अधिगम के प्रमुख अंग हैं,

### अधिगम के सामाजिक सन्दर्भ—

1. सामाजिक गुणों एवं सामाजिक कौशलों के अधिगम के लिए विद्यालयी व्यवस्था, अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा प्रयास किया जाता है,
2. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए भी अभिभावकों द्वारा विद्यालयी व्यवस्था द्वारा तथा शिक्षकों द्वारा औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से अधिगम की व्यवस्था की जाती है,
3. सामाजिक दर्शन एवं नैतिकता की भावना के विकास के लिए विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा अधिगम गतिविधियाँ उपलब्ध करायी जाती हैं,
4. धार्मिक समाज एवं वैश्विक समाज की स्थापना के लिए भी अधिगम का स्वरूप विद्यालयों में शिक्षक द्वारा तथा अभिभावकों द्वारा विकसित एवं संगठित किया जाता है
5. सामाजिक सुधार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए भी अधिगम की व्यवस्था विद्यालय शिक्षक एवं अभिभावक द्वारा सम्पन्न की जाती है,
6. अधिगम का सम्पूर्ण कलेवर तथा स्वरूप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सामाजिक उन्नयन, सामाजिक विकास एवं सामाजिक सन्तुलन से सम्बन्धित होता है,

## अध्याय – 22

### समस्या समाधान कर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बच्चा

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

**समस्या समाधानकर्ता के रूप में बालक को विकसित करने के लिए शिक्षक की भूमिका—**

1. शिक्षक को बालकों के लिए सुविधादाता की भूमिका के रूप में शैक्षिक एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उचित सहायता करनी चाहिए,
2. शिक्षक को छात्रों के कार्य व्यवहार का पर्यवेक्षण करते हुए कठिन एवं आवश्यक परिस्थितियों में दिशा निर्देश प्रदान करने का कार्य करना चाहिए,
3. शिक्षक को छात्रों के बौद्धिक स्तर एवं क्रियाशीलता का परीक्षण करके ही उनके अनुरूप समस्याओं को प्रस्तुत करना चाहिए जिससे बालक समस्या का समाधान करके आत्म गौरवान्वित हो सके,
4. शिक्षक को छात्रों के साथ उचित सम्प्रेषण स्थापित करके उनके भावों एवं विचारों को समझना चाहिए, इसके पश्चात् उनके समक्ष समस्याओं का प्रस्तुतीकरण करना चाहिए,
5. शिक्षक को छात्रों के सार्थक एवं निरर्थक विचारों को सम्मान समान रूप से करते हुए निरर्थकता से सार्थकता की ओर ले जाने का प्रयास करना चाहिए

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. छात्रों के परिकल्पनाओं को शिक्षक द्वारा स्वीकार करना चाहिए तथा परिकल्पनाओं के परीक्षण में छात्रों की सहायता करनी चाहिए तथा सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए।
7. छात्रों में सृजनात्मक का विकास करके उनको मूर्त एवं अमूर्त समस्याओं के समाधान हेतु सक्षम बनाना चाहिए, इसके लिए शिक्षक को बालकों के कार्यों की समीक्षा करनी चाहिए,
8. छात्रों की समय-समय पर शिक्षक द्वारा निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करना चाहिए, जिसके आधार पर छात्र अपनी समस्याओं का भी समाधान कर सकें तथा समस्याओं से भयभीत न हों,
9. अभिप्रेरणा के माध्यम से भी छात्रों को समस्या समाधान के लिए प्रेरित किया जा सकता है, इसके लिए छात्रों को पुरस्कार प्रदान करके उनमें समस्या समाधान सम्बन्धी कार्यों के लिए आत्मविश्वास जाग्रत करना चाहिए,

**समस्या समाधानकर्ता के रूप में बालक के विकास में विद्यालय की भूमिका—**

1. विद्यालय प्रबन्धन द्वारा छात्रों के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे बालकों में समस्या समाधान के प्रति रचनात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो सके,
2. विद्यालय में छात्रों के लिए संसाधनों की व्यवस्था होनी चाहिए जिनके आधार पर छात्र समस्या समाधान के लिए तथा खोज करने के लिए छात्र प्रयोग कर सकें,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. विद्यालय में प्रयोगशाला की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे छात्र प्रयोगशाला में भी प्रयोग कर सकें तथा विद्यालय से बाहर भी प्रयोग कर सकें,
4. विद्यालय प्रबन्धन समिति द्वारा विद्यालय में वैज्ञानिक वातावरण का सृजन करना चाहिए जिससे कि बालक प्रत्येक गतिविधि में वैज्ञानिकता का समावेश कर सकें,
5. विद्यालय में बालकों पर अनावश्यक रूप से नियंत्रण नहीं करना चाहिए वरन् उनको स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे कि छात्र अपने तर्क, चिन्तन एवं कार्यों को प्रस्तुत कर सकें,
6. विद्यालय का वातावरण, सृजनात्मक होना चाहिए शिक्षक को तथा विद्यालय प्रबन्धन को विद्यालय में उन सभी गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए जोकि बालकों का विकास समस्या समाधानकर्ता, रूप, अन्वेषक रूप में तथा वैज्ञानिक के रूप में कर सकें,
7. विद्यालय प्रबन्धन द्वारा मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति करके छात्रों की मनोदशा का ज्ञात करने का प्रयास करना चाहिए तथा उसके अनुरूप गतिविधियाँ छात्रों को उपलब्ध करानी चाहिए,
8. छात्रों को विद्यालया में सामूहिक एवं व्यक्तिगत समस्या समाधान सम्बन्धी कार्य एवं गतिविधियाँ उपलब्ध करानी चाहिए, जिससे छात्रों की रुचि के अनुसार कार्य मिल सके,
9. विद्यालय में शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यक्तिगत भिन्नताओं पर आधारित होना चाहिए तथा विद्यालय का स्वरूप समावेशी रूप में होना चाहिए जिससे प्रत्येक बालक को अपनी क्षमता के प्रदर्शन का यथा योग्य अवसर मिल सके,
10. विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का स्वरूप रुचिपूर्ण एवं सर्वोत्तम होना चाहिए

## छात्रों के समस्या समाधानकर्ता के रूप में विकास के लिए अभिभावकों की भूमिका—

1. बालकों को अभिभावकों द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए जिससे वे अपनी क्षमता एवं योग्यता का प्रदर्शन सर्वोत्तम रूप में कर सकें,
2. अभिभावकों को बालकों के साथ परिचर्चा करके उनकी शैक्षिक एवं अशैक्षिक आवश्यकताओं को समझना चाहिए तथा उनके लिए उचित वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए
3. अभिभावकों को बालकों को पर्याप्त समय देना चाहिए तथा उनकी सफलता एवं अच्छे कार्य की प्रशंसा भी करनी चाहिए,
4. बालकों की रुचि का सम्मान करना चाहिए अपनी रुचि के अनुरूप बालकों का विकास न करके बालकों की रुचि के आधार पर ही विकास करना चाहिए
5. बालकों के विचारों का सम्मान करते हुए उन पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि बालकों की निरर्थक लगने वाली विचारधाराओं में भी सार तत्व छिपा होता है,
6. बालकों के कुतर्क एवं अनुपयोगी चिन्तन करने पर बालकों प्रताडित नहीं करना चाहिए वरन् उनको कुतर्क से तर्क की ओर तथा अनुपयोगी चिन्तन से उपयोगी चिन्तन की ओर ले जाने का प्रयास करना चाहिए।
7. अभिभावकों को बालकों को किसी भी प्रकार की त्रुटी के लिए शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए वरन् त्रुटी के कारण को खोजकर उसका उन्मूलन करना चाहिए।
8. अभिभावकों को अपने बालकों की रुचि, योग्यता एवं मनोदशा के अनुरूप निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करना चाहिए।



बालक को वैज्ञानिक एवं अन्वेषण रूप में विकसित करने में शिक्षक, विद्यालय एवं अभिभावक की संयुक्त भूमिका –

1. छात्रों में तर्क एवं चिन्तन का विकास करना चाहिए जिससे कि बालक प्रत्येक परिवेशीय घटना पर तर्क एवं चिन्तन करके नवीन तथ्यों एवं सिद्धांतों की खोज कर सकें।
2. छात्रों के समझ अंधविश्वास को प्रस्तुत नहीं करना चाहिए वरन वैज्ञानिक तथ्यों को प्रस्तुत करना चाहिए जिससे छात्रों द्वारा अंधविश्वासों का उन्मूलन किया जा सके।
3. छात्रों में संश्लेषण एवं विश्लेषण की योग्यता का विकास करना चाहिए जिससे छात्र सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकें तथा विविध प्रकरणों पर सिद्धांत निर्मित कर सकें।
4. छात्रों के ज्ञान के प्रति रुचि विकसित करनी चाहिए जिससे कि छात्र प्रत्येक घटना एवं प्रकरण के संदर्भ में अधिकतम एवं वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सकें।
5. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए जिससे छात्र प्रत्येक घटना, तथ्य नियम एवं सिद्धांतों को परीक्षण की कसौटी पर परखने की क्षमता विकसित कर सकें।
6. छात्रों की रुचि करके सीखने में विकसित करनी चाहिए जिससे छात्र सर्वाधिक प्रयोग करेंगे तथा सर्वाधिक नियम एवं सिद्धांतों की खोज करेंगे।
7. छात्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना चाहिए तथा उनको अधिक सहायता प्रदान करके अक्रियाशील एवं दूसरों की सहायता पर निर्भर नहीं बनाना चाहिए।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. छात्रों में प्रामाणिक, सार्वभौमिक एवं गहन ज्ञान के प्रति रुचि विकसित करनी चाहिए जिससे छात्र अप्रामाणिक, संकीर्ण ज्ञान, संदेहास्पद ज्ञान एवं अधूरे ज्ञान से दूर रहेंगे तथा निश्चित ज्ञान की खोज कर सकेंगे।
9. छात्रों में स्वाध्याय की रुचि विकसित करनी चाहिए जिससे छात्र अपनी रुचि के प्रकरणों का अध्ययन करके उसके संदर्भ में निश्चित वास्तविक तथ्यों की खोज कर सकेंगे।



## अध्याय 23

**बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएं, बच्चों की त्रुटियों को अधिगम प्रक्रिया में सार्थक कड़ी के रूप में समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक अवधान एवं रुचि**

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है

**बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाओं के स्रोत—**

1. परिवार में होने वाली विविध गतिविधियों एवं क्रियाकलापों से बालक के मन में विविध प्रकार की अवधारणाओं का उदय होता है तथा बालक सीखने का प्रयास करता,
2. सामाजिक रीति-रिवाज भी बालक में अधिगम सम्बन्धी विविध अवधारणाओं को जन्म देता है, रीति रिवाजों को बालक सरल एवं स्वाभाविक रूप में सीखता है,
3. संस्कृति के माध्यम से भी बालकों में अनेक प्रकार की अधिगम सम्बन्धी अवधारणाएँ विकसित होती हैं तथा बालक सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करने का प्रयास करता है,
4. मित्र समूह के द्वारा भी बालक विविध अधिगम एवं अवधारणाओं को आत्मसात करते हुए रुचि पूर्ण ढंग से सीखता है, वह अपने मित्र वर्ग में निः संकोच रूप में संश्लेषण एवं विश्लेषण करता है,
5. तर्क के आधार पर भी बालक अधिगम सम्बन्धी विविध तथ्यों, प्रकरणों एवं परिकल्पनाओं को आत्मसात करता है जिसके आधार पर उसका अधिगम स्तर तीव्र एवं स्थायी होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. चिन्तन की प्रक्रिया में भी बालक विविध प्रकार की घटनाओं पर विविध दृष्टिकोणों से विचार करता है तथा चिन्तन के आधार पर स्थायी एवं शीघ्रता से सीखने का प्रयास करता है
7. प्रतिभाशाली एवं उच्च बौद्धिक स्तर वाले बालक विविध प्रकार के चिन्तन करते हुए अधिगम सम्बन्धी कल्पनाओं को जन्म देते हैं तथा सीखने का प्रयास करते हैं,
8. संश्लेषण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया भी छात्रों में अधिगम सम्बन्धी विविध परिकल्पनाओं को जन्म देती है, इससे छात्रों के सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता एवं स्थायित्व आता है,
9. धार्मिक क्रियाकलापों एवं धार्मिक मान्यताओं के आधार पर भी छात्रों में अधिगम सम्बन्धी विविध कल्पनाओं को जन्म मिलता है तथा धार्मिक गतिविधियों से भी छात्र सीखता है
10. बालकों द्वारा भी विविध अनुभवों के माध्यम से अधिगम सम्बन्धी सम्प्रत्ययों को प्राप्त किया जाता है इसके आधार पर भी छात्रों के सीखने की प्रक्रिया तीव्र होती है
11. मनोदशा के आधार पर भी बालक विविध अधिगम सम्प्रत्ययों का सीखता है, इसके आधार पर ही वह अपने कार्य व्यवहार एवं व्यक्तित्व का निर्धारण करता है
12. बालक में जब स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास होता है तब भी वह स्वाध्याय के माध्यम से विविध अधिगम सम्बन्धी कल्पनाओं को आत्मजात करता है तथा अधिगम करता है

बच्चों की त्रुटियों को अधिगम की सार्थक कड़ी के रूप में समझने की प्रक्रिया—

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. अभिभावकों के सकारात्मक व्यवहार के कारण ही बालक अपनी गतिविधियों को स्वतन्त्र रूप से सम्पन्न कर पाता है तथा अभिभावकों का सकारात्मक व्यवहार ही त्रुटियों को अधिगम से सम्बद्ध करता है
2. शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार ही बालकों की त्रुटियों को सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हुए छात्रों के अधिगम का प्रारम्भ त्रुटियों एवं निरर्थक गतिविधियों से सम्पन्न करता है
3. शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका ही छात्रों को उनकी त्रुटियों एवं निरर्थक गतिविधियों का अनुभव नहीं होने देती है तथा त्रुटियों से प्रारम्भ करके ही अधिगम प्रक्रिया को सम्पन्न करती है
4. शिक्षक की पर्यवेक्षक के रूप में भूमिका ही बालक की त्रुटियों में इस प्रकार सुधार करती है कि बालक का अपनी त्रुटियों का अनुभव नहीं होता है तथा वह अधिगम की ओर अग्रसर होता है
5. विद्यालय का उचित एवं उपयोगी वातावरण ही छात्रों को स्वतन्त्र रूप से गतिविधियों को सम्पन्न करने की प्रेरणा देता है इन गतिविधियों को विद्यालय एवं शिक्षक के सहयोग से अधिगम गतिविधियों में परिवर्तित किया जाता है
6. शिक्षक कौशलों के प्रयोग से ही एक शिक्षक बालक की त्रुटियों एवं निरर्थक गतिविधियों को सार्थक एवं उपयोगी गतिविधि बनाकर बालक के अधिगम स्तर को उच्च करता है
7. उचित सम्प्रेषण के माध्यम से शिक्षक छात्र की त्रुटियों के कारणों को समझता है तथा उसको दूर करते हुए को अधिगम से सम्बद्ध करने का प्रयास करता है,
8. बालक की त्रुटियों को जब स्वीकार किया जाता है तो उसमें आत्मविश्वास का विकास होता है तथा इसके उपरान्त वह सार्थक एवं उपयोगी गतिविधियों को सम्पन्न करने लगता है



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत भी शिक्षक बालक को केन्द्र मानता है तथा उसकी त्रुटियों को भी सार्थक रूप में स्वीकार करते हुए अधिगम से जोड़ता है

### अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक—

1. घर से सम्बन्धित कारकों में परिवार का वातावरण, माता—पिता की शैक्षिक स्थिति, परिवार में रहकर संवेगात्मक नियंत्रण एवं विकास, परिवार में सामाजिक गुणों का विकास एवं परिवार में रहकर सामाजिक रीति—रिवाजों का ज्ञान आदि के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है
2. अधिगमकर्ता का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, अधिगम कर्ता की परिपक्वता, सीखने की तत्परता, अनुभवात्मक पृष्ठभूमि, अभिप्रेरणा का स्तर, अधिगम के पठार, अभिवृत्ति या प्रवृत्ति, अभिक्षमता, बुद्धिमत्ता, सीखने की अवधि, सीखने की विधि एवं अधिगमकर्ता की विविध आदतें अधिगमकर्ता के अधिगम को प्रभावित करती हैं
3. अध्यापक सम्बन्धी दायित्वों एवं कारकों में अध्यापक के व्यक्तित्व द्वारा, अध्यापक के विषय पर अधिकार द्वारा, अध्यापक की सम्प्रेषण योग्यता, अध्यापक के व्यवहार द्वारा, व्यक्तिगत भेदों के ज्ञान द्वारा, शिक्षण विधि द्वारा, मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा, बाल केन्द्रित शिक्षा, समय सारणी एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा अधिगम को प्रभावित किया जाता है
4. विद्यालय सम्बन्धी कारकों में विद्यालय के स्वतन्त्र वातावरण, शैक्षिक वातावरण, विद्यालय के संगठन, प्रशासन एवं संगठन द्वारा तथा विद्यालय के सृजनात्मक वातावरण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित किया जाता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

### अवधान के द्वारा अधिगम को प्रभावित करने की प्रक्रिया—

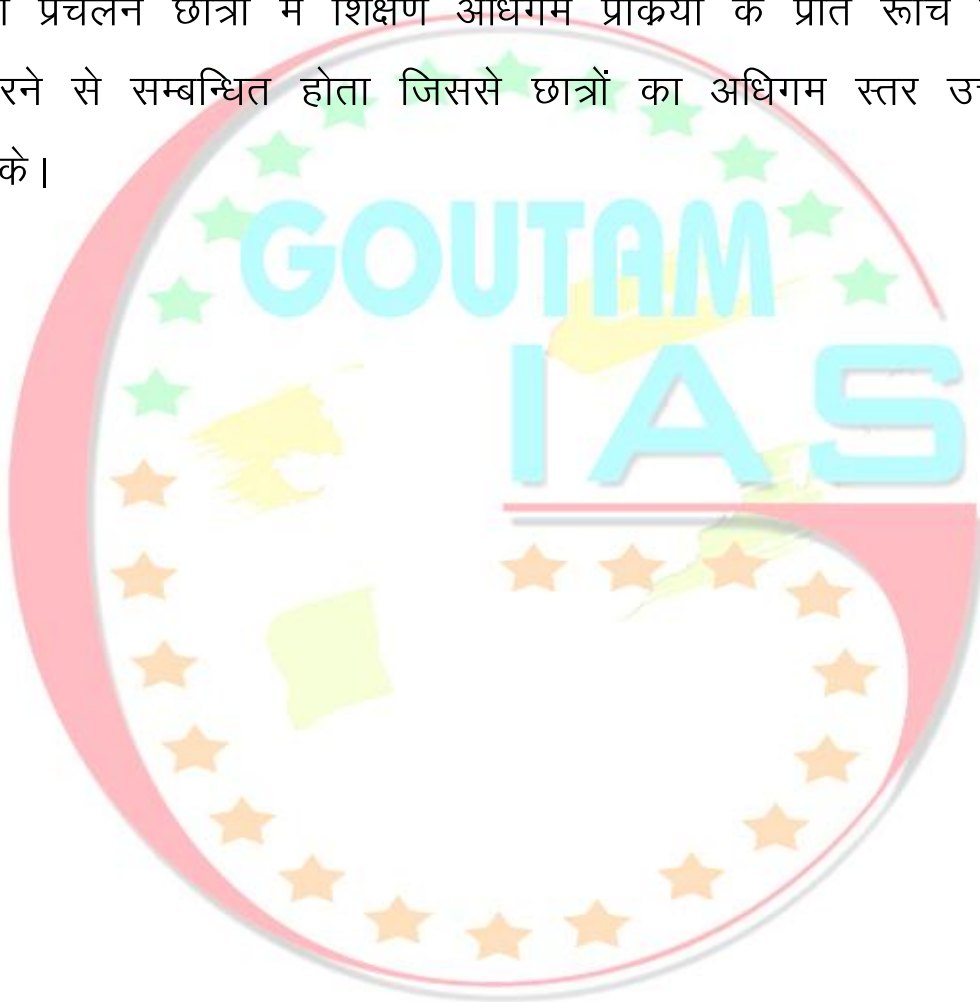
1. अवधान उस अधिगम प्रक्रिया, प्रकरण एवं तथ्य पर केन्द्रित होता है जिससे छात्रों की रुचि होती है, अतः अवधान के मूल में रुचि का समावेश पाया जाता है
2. अवधान के आधार पर ही छात्र प्रकरण, घटना एवं अधिगम प्रक्रिया में पूर्ण सहभागिता का प्रदर्शन करता है जिससे अधिगम स्तर उच्च होता है
3. अवधान में अभिप्रेरणा का समावेश होता है छात्र स्व अभिप्रेरणा एवं बाह्य अभिप्रेरणा से प्रेरित होकर ही अधिगम प्रक्रिया एवं प्रकरण पर अवधान केन्द्रित करता है
4. अवधान उस प्रकरण, तथ्य एवं घटनाओं पर सर्वाधिक केन्द्रित होता है जो हमारे लिए आवश्यक एवं उपयोगी सिद्ध होती है, इस प्रकार अवधान में आवश्यकता का समावेश होता है
5. अवधान उन कुशलताओं गतिविधियों एवं तथ्यों को सीखने पर अधिक केन्द्रित होता है जिनकी समाज में प्रतिष्ठा होती है अतः अवधान में सामाजिक प्रतिष्ठा का समावेश होता है
6. अधिगम स्थल का वातावरण शैक्षिक एवं शान्तिप्रद होता है तो भी अवधान के केन्द्रीकरण सर्वाधिक होता है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है

### रुचि के द्वारा अधिगम को प्रभावित करने की प्रक्रिया—

1. शिक्षक द्वारा छात्रों में अधिगम प्रक्रिया एवं अधिगम गतिविधियों के प्रति रुचि उत्पन्न की जाती है जिससे उनका अधिगम स्तर उच्च हो सके।
2. शिक्षक द्वारा कक्षा-कक्ष के वातावरण को नीरस से रुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाता है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च हो सके।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

3. शिक्षक अधिगम सामग्री का प्रयोग करके शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिपूर्ण बनाया जाता है जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया रूचिपूर्ण होने के अधिगम स्तर उच्च हो सके।
4. विद्यालय प्रबन्धन द्वारा विद्यालय का वातावरण इसलिए रूचिपूर्ण बनाया जाता है जिससे कि बालकों का अधिगम स्तर उच्च हो सकें।
5. व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठ्यक्रम एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रचलन छात्रों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति रूचि उत्पन्न करने से सम्बन्धित होता जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च हो सके।



## अध्याय — 24

### संज्ञान एवं संवेग

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है

#### संज्ञान की विशेषताएँ—

1. संज्ञान एवं व्यापक प्रक्रिया है क्योंकि इसके माध्यम से बालक की सीखने की प्रक्रिया होती है, जिस पर कि उसका सम्पूर्ण भविष्य एवं वर्तमान निर्भर करता है
2. संज्ञान एक मानसिक प्रक्रिया है जोकि इसमें छात्र की बौद्धिक क्षमता एवं विषय विशेष के प्रति रुचिस का होना ही संज्ञानात्मक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है
3. संज्ञान की प्रक्रिया में बालक विविध प्रकार के चिन्तन करते हुए एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता है तथा उसको कार्य व्यवहार का स्थायी अंग बनाता है
4. संज्ञान की प्रक्रिया में बालक विविध प्रकार के तर्कों का सहारा लेकर अपने ज्ञान में अनेक प्रकार के नवीन एवं प्रामाणिक तथ्यों को जोड़ने का प्रयास करता है
5. संज्ञान के प्रक्रिया में बालक जो कुछ भी अनुभव करता है उसको स्थायी रूप से व्यवहार में लाता है क्योंकि वह अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर वर्तमान की व्याख्या करता है
6. संज्ञान के माध्यम से बालक अनेक प्रकार के नियम, सिद्धान्त तर्क एवं तथ्यों को सीखता है तथा उनका प्रयोग व्यवहार में करता है
7. संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया को बाल विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है इस विकास के आधार पर ही अन्य विकासात्मक कार्य निर्भर करते हैं

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. संज्ञान के माध्यम से विविध प्रकार की ज्ञानात्मक संरचनाओं का निर्माण किया जाता है जिनमें से प्रामाणिक संरचनाओं को बालक स्वीकार करता है
9. संज्ञान के माध्यम से बालक अपने पूर्व अनुभवों में सुधार करके नवीन अनुभवों को प्राप्त करता है जिसके आधार पर वह पतंग एवं चिड़िया दोनों में अन्तर करता है
10. संज्ञानात्मक विकास के आधार पर ही बालक का कार्य व्यवहार निर्धारित होता है इसके सर्वोत्तम स्वरूप के आधार पर बालक का व्यावहारिक स्वरूप निर्धारित होता है

### संज्ञान विकास के स्रोत—

1. बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली बालकों का संज्ञानात्मक विकास तीव्रता से होता है इसलिए बौद्धिक क्षमता एवं बौद्धिक कुशलता को संज्ञानात्मक विकास का स्रोत माना जाता है
2. यदि बालक को सृजनात्मक, लोकतान्त्रिक एवं वैज्ञानिक वातावरण प्रदान किया जाता है जो उसका संज्ञानात्मक विकास सर्वोत्तम रूप में होता है अतः वातावरण संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख आधार है
3. दृष्टि संवेदना के आधार पर बालक विविध वस्तुओं को देखता है तथा उसके आधार पर संज्ञानात्मक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है
4. श्रवण संवेदना के आधार पर बालक विविध जानवरों की ध्वनियों में अन्तर कर पाता है तथा माता तथा अन्य परिवारजनों की ध्वनियों में अन्तर कर पाता है इस प्रकार वह संज्ञानात्मक विकास को प्राप्त करता है



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. स्वाद संवेदना के आधार पर वह विविध वस्तुओं के स्वाद को पहचान पाता है तथा उनका वर्णन करता है इसी आधार पर वह अपने संज्ञानात्मक पक्ष में वृद्धि करता है
6. गन्ध के आधार पर वह फूलों की गन्ध से उनके नाम को पहचानता है तथा दुर्गन्ध से गन्दे स्थान को पहचान लेता है इस स्त्रोत से भी वह अपने संज्ञान में विकास करता है
7. स्पर्श करके भी वह वस्तुओं की विविध अवस्थाओं का संज्ञान प्राप्त करता है, ठोस, द्रव एवं गैस का संज्ञान इसके माध्यम से ही करता है
8. आयु वृद्धि के साथ-साथ बालकों की आवश्यकताओं बढ़ती है जिनके परिणामस्वरूप विविध उपयोगी वस्तुओं का संज्ञान प्राप्त करता है तथा उसमें सीखने की तत्परता जाग्रत होने लगती है।
9. बालक समाजिक वातावरण एवं भौतिक वातावरण के साथ जो भी अनुभव प्राप्त करता है उससे उसके संज्ञान में स्थायी रूप से इन अनुभवों को समावेश होता है

### संवेग की विशेषताएँ—

1. संवेगात्मक विकास महत्वपूर्ण विकास की प्रक्रिया है क्योंकि इसके आधार पर ही बालक के व्यक्तित्व का निर्माण निर्भर करता है
2. संवेगों का सम्बन्ध मानसिक गतिविधियों से होता है जैसे दूसरों के संवेगों का समझना तथा अपने संवेगों पर नियंत्रण करना आदि,
3. संवेगों के आधार पर बालक का व्यवहार निर्भर करता है संवेगात्मक स्थिरता बालक के व्यवहार को मर्यादित एवं उपयोगी बनाती है जबकि संवेगात्मक अस्थिरता व्यवहार को अमर्यादित बनाती है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

4. संवेगों का सम्बन्ध मूल प्रवृत्ति से होता है मूल प्रवृत्ति की संख्या मैक्डूगल न चौदह बताई है तथा उसके आधार पर ही संवेगों का निर्धारण होता है
5. संवेगों के उत्पन्न होने पर शारीरिक अवस्थास में व्यापक परिवर्तन हो जाते हैं, जैसे क्रोध में चेहरे का लाल हो जाना तथा डर से बालक का काँपने लग जाना आदि
6. संवेगों के विकास को प्रभावित करने वाले कारक संवेगात्मक विकास को सर्वोत्तम बनाने के उपाय एवं इसका मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण होना इसे व्यापक प्रक्रिया के रूप में सिद्ध करते हैं
7. संवेगात्मक विकास की प्रक्रिया प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व का निर्धारण करती है क्योंकि इसके माध्यम से बालक का कार्य व्यवहार प्रभावित होता है
8. संवेग कल्पना एवं तर्क की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किए जाते हैं, इसके विकास एवं व्यावहारिक स्वरूप में बालक अनेक तर्क एवं चिन्तन सम्बन्धी कार्य करता है
9. संवेगों के उत्पन्न होते ही बालक के शरीर में उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप बालक को संवेगानुसार व्यवहार करने का पुनर्बलन प्राप्त होता है
10. संवेगात्मक स्थिरता के विकास से बालक में समायोजन का गुण उत्पन्न होता है तथा संवेगात्मक अस्थिरता से कुसमायोजन उत्पन्न होता है

### बालकों में संवेगात्मक विकास की स्थिति—

1. शैशवावस्था में बालक का संवेगात्मक विकास जन्म से ही आरम्भ हो जाता है इसमें विविध प्रकार की उत्तेजना जन्म से 24 माह तक अनवरत् रूप से चलती रहती है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. बाल्यावस्था में बालकों के संवेगात्मक विकास की तीव्रता उत्पन्न हो जाती है इस काल की अन्तिम अवस्था में बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है
3. किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास की स्थिति परिपक्वता की स्थिति में आ जाती है इसमें बालकों में काम भावना का विकास सामाजिक सम्मान के प्रति लालसा, चेतनता एवं जागरूकता का विकास एवं व्यावहारिक अस्थिरता देखी जाती है

### संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक—

1. बालकों का शारीरिक स्वास्थ्य प्रत्यक्ष रूप से संवेगात्मक विकास को प्रभावित करता है शारीरिक स्वास्थ्य की सर्वोत्तमता संवेगात्मक विकास को सर्वोत्तम बनाती है
2. बालक के परिवार का सर्वोत्तम वातावरण बालक में संवेगात्मक विकास में सर्वोत्तम बनाते हैं तथा विपरीत स्थिति संवेगात्मक विकास का अवरुद्ध करते हैं
3. माता—पिता का सकारात्मक व्यवहार बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को स्थिर बनाता है तथा नकारात्मक व्यवहार बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को अस्थिर बनाता है
4. शिक्षक का सकारात्मक एवं सुविधादातापूर्ण व्यवहार बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को सर्वोत्तम बनाता है इसके विपरीत स्थिति में संवेगात्मक व्यवहार निम्न बनता है
5. विद्यालय का लोकतान्त्रिक एवं सृजनात्मक वातावरण बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को सर्वोत्तम बनाता है जबकि नियंत्रण का वातावरण संवेगात्मक व्यवहार को अस्थिर बनाता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. परिवार की निर्धनता भी बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को अस्थिर बनाती है तथा परिवार की उच्च आर्थिक स्थिति संवेगात्मक व्यवहार को स्थिर बनाती है



## अध्याय 25

### अभिप्रेरणा एवं अधिगम

प्रस्तुत अध्याय क महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

#### अभिप्रेरणा की विशेषताएँ—

1. अभिप्रेरणा का सम्बन्ध आन्तरिक विचारों से होता है क्योंकि अनेक अवसरों पर आन्तरिक भाव एवं विचार ही प्रेरणा स्रोत बनते हैं,
2. अभिप्रेरणा के आधार पर बालक का कार्य व्यवहार निर्धारित होता है, जिस प्रकार की क्रियाओं के लिए उसे अभिप्रेरित किया जाएगा ठीक उसी प्रकार की क्रियाओं के लिए उसे अभिप्रेरित किया जाएगा ठीक उसी प्रकार की क्रियाओं के लिए उसे अभिप्रेरित किया जाएगा ठीक उसी प्रकार की क्रियाएँ वह सम्पन्न करेगा,
3. अभिप्रेरणा का अधिगम से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है क्योंकि अभिप्रेरणा जितनी अधिक बलवती होगी अधिगम प्रक्रिया भी उतनी ही शीघ्रता एवं स्थायित्व के साथ सम्पन्न होगी,
4. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालकाओं में विविध प्रकार की व्यावहारिक गतिविधियों का उद्भव होता है जैसे दूध के लिए बालक का रोना तथा नैतिक गतिविधियों को सम्पन्न करना,
5. अभिप्रेरित व्यवहार में निरन्तरता बनी रहती है, जैसे भोजन करना, प्यास के लिए पानी पीना तथा नौकरी के लिए आजीवन पढ़ाई के लिए वचनबद्ध होना आदि,
6. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालक एक निश्चित दिशा में अधिगम करता है जैसे सैनिक बनने की अभिप्रेरणा एवं शिक्षक बनने की अभिप्रेरणा में पृथक्-पृथक् गतिविधियों को सम्पन्न करने का प्रयास करेगा,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. जैविक प्रेरकों के कारण बालक का व्यवहार शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के किया होता है तथा मानसिक संतुष्टि के लिए बालक का व्यवहार मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला होता है,
8. अभिप्रेरणा का प्रभाव उद्देश्य पूर्ति के बाद समाप्त हो जाता है, जैसे एक बालक क्रिकेट का कुशल खिलाड़ी बनने के बाद उसके द्वारा उस क्षेत्र में रुचि का कम प्रदर्शन किया जाता है,
9. बालक द्वारा जब किसी क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में अभिप्रेरणा प्राप्त की जाती है तो उसका अधिगम क्षेत्र एवं व्यवहार उस क्षेत्र से ही सम्बन्धित होता है,

#### अभिप्रेरणा एवं अधिगम का सम्बन्ध—

1. एण्डरसन के अनुसार सीखने की गति में श्रेष्ठता उस समय आती है। जब उसमें अभिप्रेरणा का समावेश हो,
2. प्रो.एस.के.दुबे के अनुसार आन्तरिक अभिप्रेरणा अदृश्य अधिगम शक्ति के रूप में तथा बाह्य अभिप्रेरणा प्रकट अधिगम शक्ति के रूप में कार्य करती है,
3. मेल्टन के अनुसार अभिप्रेरणा सीखने के लिए अनिवार्य होती है, अभिप्रेरणा के अभाव में अधिगम सम्भव नहीं है,
4. वर्नार्ड के अनुसार, अभिप्रेरणा के माध्यम से उन उपायों को खोजा जाता है जिनका प्रयोग करके शिक्षक बालकों में विद्यालय की सभी गतिविधियों के प्रति इच्छा उत्पन्न करता है, ये इच्छा एवं रुचि ही विद्यालयी छात्रों में अधिगम के स्तर को उच्च बनाती है,
5. मर्सेल के अनुसार प्रेरणा के आधार पर ही बालक के सीखने की दिशा स्तर तथा समय निर्धारित होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. केली के अनुसार सीखने की कुशल कला में प्रेरणा एक केन्द्रीय तत्व है इसलिए सीखने की प्रक्रिया में किसी-न-किसी रूप में अभिप्रेरणा का होना आवश्यक होता है,

### सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का कार्य, आवश्यकता एवं महत्व—

1. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालक में सक्रियता उत्पन्न होती है तथा वह कार्य विशेष को करने के लिए उत्तेजित हरे जाता है,
2. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालक उसी सकार्य या गतिविधि का अधिगम करता है जिसके लिए उसे अभिप्रेरित किया जाता हैं, अतः इसके द्वारा चयनात्मक कार्य सीखे जाते हैं,
3. अभिप्रेरणा बालक को एक निश्चित दिशा की ओर कार्य करने की तथा आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रयास करने की ओर ले जाती है,
4. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालकों में सीखने की गति में वृद्धि होती है, जब किसी कौशल या गतिविधि की सीखने के लिए अभिप्रेरक निश्चित किया जाता है तो बालक शीघ्रता से सीखता है,
5. अभिप्रेरणा के माध्यम से बालक के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन के प्रयास किए जाते हैं, ठीक इसी प्रकार का उद्देश्य अधिगम प्रक्रिया को होता है,
6. अभिप्रेरणा के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया में रुचि का विकास यह होता है, जब बालक की रुचि किसी क्रिया की सीखने में विकसित होती है तो बालक उसको सरलता से सीख जाता है,
7. जब किसी कार्य को सीखने के लिए छात्रों को अभिप्रेरित किया जाता है तो छात्रों में उस गतिविधि के प्रति अवधान केन्द्रित करने की शक्ति विकसित होती है जिससे उस छात्र द्वारा उस गतिविधि को सरलता से सीखा जाता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. अभिप्रेरणा के माध्यम से छात्रों द्वारा मूर्त क्रियाओं को अर्थात् भौतिक गतिविधियों को सरलता से सीखा जाता है, इसके साथ-साथ अमूर्त क्रियाओं को सीखने के लिए भी छात्रों को अभिप्रेरित करना आवश्यक माना जाता है,
9. अभिप्रेरणा के आधार पर ही लक्ष्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि अभिप्रेरणा लक्ष्यार्थ गतिविधियों को सीखने में सहायक होती है,
10. जब अभिप्रेरणा चारित्रिक, गतिविधियों के सन्दर्भ में प्रदान की जाती है तो छात्रों का चारित्रिक विकास सम्भव होता है, जिसके आधार पर छात्र अनेक चारित्रिक गतिविधियाँ सरलता से सीखता है,
11. अभिप्रेरणा के आधार पर बालक अनुशासनात्मक गतिविधियों को सरलता से सीखता है क्योंकि अनुशासित छात्रों की शिक्षक द्वारा तथा अभिभावक द्वारा प्रशंसा की जाती है,
12. छात्रों की रुचियों से सम्बन्धित पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं एवं गतिविधियों को जब पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है तो वह पाठ्यक्रम अभिप्रेरित पाठ्यक्रम बन जाता है,
13. शिक्षक द्वारा अभिप्रेरणा के आधार पर ही छात्रों की रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप अधिगम गतिविधियों के सृजन से अधिगम प्रक्रिया सरल रूप में सम्पन्न होती है,

### छात्रों को अभिप्रेरित करने की प्रविधियाँ—

1. पुरस्कार के माध्यम से छात्रों को अच्छे कार्यों के लिए अभिप्रेरित किया जाता है, पुरस्कार प्राप्त करना सभी छात्रों को अच्छा लगता है,
2. दण्ड को नकारात्मक अभिप्रेरक माना जाता है, दुराचरण के लिए दण्ड का प्रयोग किया जाता है, वर्तमान समय में दण्ड के प्रयोग को वर्जित

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

माना जाता है वरन् शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह छात्रों को नैतिकता द्वारा प्रेरित करके सदाचारी बनाए,

3. प्रशंसा एवं निन्दा करके क्रमशः अच्छे व्यवहार को सीखने के लिए तथा बुरे व्यवहार एवं गतिविधियों को त्यागने के लिए प्रेरित किया जाता है,
4. सफलता एवं असफलता दोनों ही छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करती हैं सफलता से और अधिक सीखने के लिए तथा असफलता से सफलता प्राप्त करने के लिए छात्र प्रेरित होता है,
5. प्रतियोगिता के रचनात्मक रूप का प्रयोग करके छात्रों को सीखने के लिए अभिप्रेरित किया जा सकता है, सहयोग की भावना भी सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का कार्य करती है,
6. परिणाम का ज्ञान भले ही सकारात्मक रूप में हो या नकारात्मक रूप में हो अधिगम करने के प्रेरणा देता है, अतः छात्रों को परिणाम अवश्य बताए जाने चाहिए,
7. आकांक्षा का स्तर अधिक उच्च होगा तो सीखने के लिए छात्रों को प्रेरणा अधिक प्राप्त होगी अतः आकांक्षा के विविध रूप अधिगम के लिए विविध अभिप्रेरकों के रूप में कार्य करते हैं,
8. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा उत्पन्न की जाने वाली नवीनता अभिप्रेरक का कार्य करती है, इससे छात्रों को ऊब नहीं होती है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में रुचि बनी रहती है,
9. शिक्षक द्वारा छात्रों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति रुचि उत्पन्न कर दी जाती है तो छात्र शीघ्रता से सीखते हैं क्योंकि रुचि को सर्वोत्तम अभिप्रेरक के रूप में स्वीकार किया जाता है,



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं, आदर्शों, मूल्यों, रुचियों आकांक्षाओं एवं अभिक्षमता का ज्ञान प्राप्त करते हुए उनकी पूर्ति की व्यवस्था करके छात्रों को अधिगम के लिए अभिप्रेरित होंगे तथा उनका अधिगम स्तर उच्च होगा,



# GOUTAM IAS ACADEMY

www.goutamias.com

*An ISO 9001:2015 Certified Institute*

## UPSC MPPSC SSC BANK VYAPAM

**Our Success Story..**



**SIDDHARTH GOUTAM SIR**  
- Mentor & Motivator  
- Chairman



**ANIL GOUTAM SIR**  
MPPSC 2017

**2016**



Pankaj Patel  
Asst. Director



Isha Garg  
DSP



Dolly Raikwar  
CDPO

**2014**



Nidhi  
Deputy Collector



Deepshikha  
Deputy Collector



Ankita  
Deputy Collector

**2015**



Kamini  
Deputy Collector



Lalit Kashyap  
DSP



Shivani  
Asst. Director

**2013**



**RANK 1**  
Ashish Pandey  
Deputy Collector



**RANK 3**  
Govind Dubey  
Deputy Collector



**RANK 4**  
Ashish Sharma  
CMO

**2017**



Shrishti  
Deputy collector



Pooja Pandey  
DSP



Jyoti Pandey  
Asst. Director



Sonam Mourya  
Nayab Tehsildar



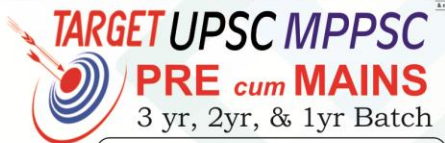
Anam Mishra  
Nayab Tehsildar



Prashant Gaur  
CMO



Rishi Khan  
Nayab Tehsildar



**Admission Open**

Watch us on YouTube

f@goutamias








हमारे साथ अध्ययन कर निम्न संस्थानों में नौकरी पाने की ओर कदम बढ़ाएं

## GOUTAM CIVIL SERVICE SCHOOL

*Start Preparing for IAS after 12<sup>th</sup>* **UPSC : 3 Year Batch**

**CALL : 0761-4031947, 9300030305, 9300080006**

Address : Infront of Ranital Petrol Pump, Wright Town, Jabalpur (M.P.)

Add. 2 : Gate No. 4, Sneh Nagar, Jabalpur (M.P.)



## अध्याय 26

### अधिगम में योगदान देने वाले कारक : व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है

#### अधिगम में योगदान देने वाले अधिगमकर्ता सम्बन्धी कारक—

1. छात्र का सर्वोत्तम मानसिक स्वास्थ्य छात्रों को उच्च अधिगम स्तर एवं स्थायी अधिगम का मार्ग प्रशस्त करता है, इससे छात्र की अधिगम में पूर्ण सहभागिता होती है
2. उच्च शारीरिक स्वास्थ्य के आधार पर छात्र सभी प्रकार की पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं एवं अधिगम गतिविधियों में भाग ले सकता है, जिससे उसका अधिगम स्तर प्रत्येक क्षेत्र में उच्च होता है
3. अधिगमकर्ता में सीखने की तत्परता उसके अधिगम स्तर को उच्च बनाती है प्रायः जब बालक को किसी अभिप्रेरक द्वारा सीखने का अवसर मिलता है तो उसमें तत्परता का समावेश हो जाता है
4. जिन अधिगमकर्ताओं में अपने कौशल एवं गतिविधियों के अभ्यास एवं पुनरावृत्ति की प्रवृत्ति होती है उनका अधिगम स्तर उच्च एवं स्थायी रूप में होता है
5. अधिगमकर्ता जब किसी प्रकरण को उपयोगी समझता है या उसकी दृष्टि में किसी प्रकरण विशेष को सत्य सिद्ध करते हुए उपयोगी बनाया जाता है तो उसका अधिगम स्तर उच्च होता है
6. छात्र का प्रकरण के प्रति, दृष्टिकोण उपयोगी सुखद एवं अत्यानन्द से सम्बन्धित होता है इस प्रकरण को छात्र पूर्ण अवधान से सीखता है तथा उसका अधिगम स्तर उच्च होता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. छात्र को किसी अधिगम गतिविधि के लिए प्रेरित कर दिया जाए तो निश्चित रूप से उसके अधिगम स्तर में वृद्धि हो सकेगी, क्योंकि अभिप्रेरणा से उसकी अधिगम रुचि उत्पन्न होगी,
8. छात्रों की बुद्धि लब्धि उच्च होती है तो उनके अवधान केन्द्रीकरण एवं सीखने की गति दोनों में ही उच्च स्थिति दृष्टिगोचर होती है ऐसे बालक प्रतिभाशाली होते हैं
9. जो छात्र अधिक क्रियाशील होते हैं उनके द्वारा प्रत्येक कार्य को सीखने के लिए तत्परता प्रकट की जाती है तथा वे करके सीखने में अधिक विश्वास रखते हैं ऐसे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च एवं स्थायी होता है
10. छात्र का व्यक्तित्व भी अधिगम स्तर में योगदान देता है व्यक्तित्व के आधार पर ही छात्र समूह अधिगम एवं सहयोगी अधिगम सम्पन्न करने में सफल हो जाता है
11. छात्रों में संवेगात्मक विकास के आधार पर उनको मानसिक तनाव एवं मानसिक संघर्ष की स्थिति कम अनुभव होती है जिससे अधिगम प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती है
12. छात्र का आत्मविश्वास भी प्रत्येक असफलता के बाद उसे सफलता की ओर अग्रसर करता है इस प्रकार छात्र अपने अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है
13. छात्रों में तर्क एवं चिन्तन का विकास छात्रों को अधिगम कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, इस आधार पर छात्र तर्क एवं चिन्तन करके शिक्षक एवं अभिभावकों के सहयोग से अधिगम करते हैं
14. छात्र की अधिगम योजना में छात्र अपने अधिगम क्रम को सरल से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर रखता है तो उसका अधिगम स्तर उच्च एवं स्थायी होता है

### अधिगम में योगदान देने वाले शिक्षक सम्बन्धी कारक—

1. शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार बालकों में अधिगम में होने वाली त्रुटियों के प्रति हीन भावना उत्पन्न नहीं होने देता है जिससे उनका अधिगम स्तर उच्च होता है
2. शिक्षक शारीरिक रूप से स्वास्थ्य होने पर बालकों के समक्ष पाठ्यक्रम सहयोगी क्रियाओं एवं प्रयोग प्रदर्शन में अपनी क्षमता का प्रयोग करता है, इससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है क्योंकि शिक्षक के प्रदर्शन से छात्र सीखते हैं,
3. शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य सही होने पर शिक्षक अपने संवेगों पर नियंत्रण रखता है तथा उत्तेजित न होते हुए छात्रों की अधिगम प्रक्रिया में सहयोग करता है
4. शिक्षक की सहयोगी के रूप में तथा सुविधादाता के रूप में प्रस्तुत की जाने वाली भूमिका छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च बनाती है
5. शिक्षक द्वारा जब नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है तो छात्रों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पूर्ण सहभागिता प्राप्त होती है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है
6. शिक्षक को जब कर्तव्य बोध होता है तो शिक्षक अपना सम्पूर्ण प्रयास बालकों की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए करता है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है
7. शिक्षक का विषय पर अधिकार होने से शिक्षक उस विषय से सम्बन्धित सभी प्रकार की जिज्ञासाओं को शान्त करता है तथा अन्य विषयों से सह सम्बन्ध स्थापित करता है
8. शिक्षक का दार्शनिक दृष्टिकोण आदर्शवादिता एवं नैतिकता के आधार पर उसको समर्पण भाव से छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करता है

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

9. शिक्षक का व्यापक दृष्टिकोण छात्रों को सभी प्रकार के क्षेत्रों से सम्बन्धित अधिगम कराने के लिए प्रेरित करता है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है
10. शिक्षक द्वारा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर छात्रों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उपलब्ध करायी जाती है इससे छात्रों की इसमें संलग्नता एवं सहभागिता होती है
11. शिक्षक द्वारा छात्रों को व्यक्तिगत भिन्नता योग्यता एवं स्तर का ध्यान रखते हुए प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है
12. शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी रूप में सम्पन्न करने के लिए तथा रुचिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाता है
13. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए सर्वप्रथम प्रकरण का चयन करते हुए पाठ योजना तैयार की जाती है इससे क्रमबद्ध एवं सुसंगठित रूप में अधिगम सम्पन्न होता है
14. शिक्षक द्वारा उचित सम्प्रेषण के माध्यम से छात्रों के भावों एवं विचारों को जानते हुए उसके अनुरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उपलब्ध करायी जाती है इससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है

### **पर्यावरण सम्बन्धी कारकों का अधिगम में योगदान—**

1. परिवार का वातावरण यदि शान्त एवं सहयोगी रूप में होता है तो बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास सर्वोत्तम रूप में होता है जिससे छात्रों को अधिगम स्तर उच्च होता है

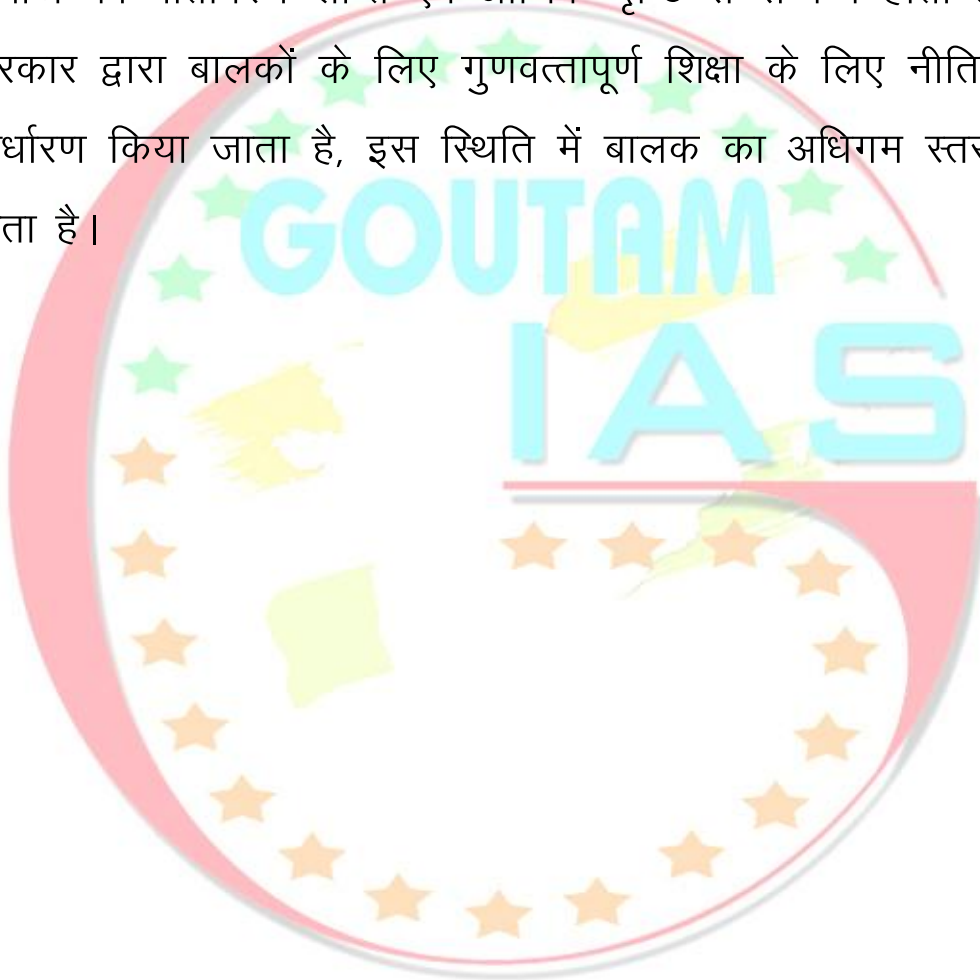
download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. अभिभावक अपने बालक की स्वतन्त्रता एवं सृजनात्मक वातावरण प्रदान करते हैं इसके साथ-साथ उनकी त्रुटियाँ को सकारात्मक रूप से स्वीकार करते हैं तो अधिगम स्तर उच्च होता है
3. समाज का वातावरण शिक्षित एवं शान्तिपूर्ण ढंग का होता है तो समाज में सहयोग, प्रेम एवं सहभागिता की भावना होती है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है।
4. छात्र परिवार से निकलकर पड़ोस में अपनी गतिविधियों को सम्पन्न करता है पड़ोस का अधिगम युक्त एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त वातावरण छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च बनाता है
5. कक्षा-कक्ष का वातावरण स्वतन्त्रपूर्ण एवं शैक्षिक रूप में होता है तो छात्रों द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पूर्ण सहभागिता का प्रदर्शन किया जाता है
6. विद्यालय का वातावरण यदि गुणवत्तापूर्ण एवं शिक्षा व्यवस्था से सम्पन्न है तथा छात्रों के विचारों एवं भावों का स्वागत किया जाता है तो छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होगा
7. छात्रों को जब घर-परिवार कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय में स्वतन्त्र वातावरण प्राप्त होता है तथा उनके विचारों का स्वागत किया जाता है तो उनकी अधिगम में रुचि उत्पन्न होती है
8. विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष का वातावरण सृजनात्मक होता है छात्रों की सार्थक निरर्थक कल्पनाओं को स्वीकार करते हुए उन पर परिचर्चा की जाती है तब छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होता है
9. कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय में प्रवेश करते ही छात्रों की शैक्षिक वातावरण का अनुभव होता है तो छात्रों की अधिगम प्रक्रिया सफलता के साथ सम्पन्न होती है



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

10. कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय का वातावरण वैज्ञानिक रूप में होता है, विद्यालय में प्रयोगशाला होती है तथा प्रयोग सम्पन्न कराए जाते हैं तब छात्रों का अधिगम स्तर उच्च होते हैं
11. विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष का वातावरण यदि तर्क एवं चिन्तन का विकास करने वाला होता है तब भी बालक का अधिगम स्तर उच्च होता है
12. समाज का वातावरण शान्त एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है तथा सरकार द्वारा बालकों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नीतियों का निर्धारण किया जाता है, इस स्थिति में बालक का अधिगम स्तर उच्च होता है।



## अध्याय 27

### निर्देशन एवं परामर्श

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,

1. निर्देशन एक अनवरत् प्रक्रिया के रूप में चलता रहता है, क्योंकि समय—समय पर शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों को भी निर्देशन की आवश्यकता होती है, अतः यह जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है,
2. वर्तमान समय में छात्रों के लिए सर्वांगीण विकास के लिए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनको निर्देशन प्रदान किया जाता है, जिसके आधार पर इसको विकास की प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है,
3. निर्देशन के माध्यम से छात्रों में निर्णयन की क्षमता का विकास किया जाता है, निर्देशन के आधार पर लिया जाने वाला निर्णय छात्र के लिए सर्वोत्तम रूप में स्वीकार किया जाता है,
4. निर्देशन समायोजन की प्रक्रिया के रूप में माना जाता है क्योंकि निर्देशन के माध्यम से छात्रों को परिवार में, विद्यालय में, कक्षा—कक्ष में तथा व्यावसायिक क्षेत्र में समायोजन करना सिखाया जाता है,
5. निर्देशन सहायता की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि इसमें शिक्षक द्वारा छात्र के लिए मार्ग तैयार किया जाता है, मार्ग पर चलने का कार्य छात्र द्वारा किया जाता है,
6. निर्देशन के माध्यम से छात्रों की शैक्षिक एवं अशैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाता है, इसलिए छात्रों में इससे समस्या समाधान की योग्यता विकसित हो जाती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

7. निर्देशन प्रदान करने की प्रक्रिया में छात्रों द्वारा स्वयं के लिए निर्धारित उद्देश्यों को तथा शिक्षक द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है, इसके माध्यम से उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है,
8. निर्देशन में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया एवं प्रक्रिया का स्वरूप क्रमबद्ध एवं सृसंगठित रूप में होता है जिससे छात्रों को यह अनुभव होता है कि वे उद्देश्य को सरलता से प्राप्त कर सकेंगे,
9. निर्देशन की व्यापक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि वर्तमान समय में निर्देशन का क्षेत्र परिवार, समाज, विद्यालय एवं व्यावसायिक संस्थाओं को भी माना जाता है,

### व्यक्ति दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व—

1. निर्देशन की प्रक्रिया से छात्रों को उन सभी गुणों से सम्पन्न बनाया जाता है जिससे कि वे समाज के लिए तथा स्वयं के लिए अपनी उपयोगी भूमिका सिद्ध कर सकें,
2. निर्देशन के माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है क्योंकि छात्रों को प्रत्येक क्षेत्र में निर्देशन प्रदान करके समन्वयन का कार्य किया जाता है,
3. छात्रों की संवेगात्मक अस्थिरता को दूर करके उनमें संवेगात्मक स्थिरता का विकास करने में निर्देशन प्रक्रिया महत्वपूर्ण सिद्ध होती है, निर्देशन से संवेगात्मक विकास स्वरूप निश्चित होता है,
4. निर्देशन के माध्यम से छात्रों में व्यापक दृष्टिकोण का समावेश किया जाता है तथा संकीर्णता की भावना का उन्मूलन किया जाता है, इससे छात्रों की सोच व्यापक होती है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. निर्देशन की प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों में समायोजन की शक्ति का विकास किया जाता है, जिससे छात्र घर-परिवार एवं समाज में तथा विद्यालय में सरलता से समायोजित हो जाते हैं,
6. निर्देशन के माध्यम से छात्रों को स्वयं की निर्बलताओं एवं क्षमताओं का ज्ञान कराया जाता है, जिससे उसकी निर्बलताएँ दूर होती हैं तथा क्षमताएँ विकसित होती हैं,

### शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व—

1. वर्तमान समय में विद्यालयों में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या व्यापक रूप से देखी जाती है, छात्रों एवं अभिभावकों को निर्देशन प्रदान करके इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है,
2. शत प्रतिशत नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भी छात्रों को एवं अभिभावकों को निर्देशन प्रदान किया जाता है, जिससे छात्र विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तथा अभिभावक छात्रों को विद्यालय में भेजना चाहते हैं,
3. पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में विविधता होने के कारण यह देखा जाता है कि छात्रों को निर्देशन द्वारा ही रुचि एवं अपनी योग्यता के अनुरूप विषयों का चयन करने में सहायता मिलती है,
4. व्यावसायिक विषयों के चयन में तथा अपनी योग्यता तब रुचि के अनुरूप व्यवसाय के चयन में निर्देशन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
5. छात्रों में अनुशासनहीनता की स्थिति को दूर करने के लिए उनको निर्देशन प्रदान किया जाता है, जिसके आधार छात्रों का व्यवहार मर्यादित एवं स्वानुशासित होता है,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में निर्देशन आवश्यक हो गया है क्योंकि इसके माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग छात्र शैक्षिक एवं अशैक्षिक समस्याओं के समाधान में कर सकता है।

### सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व—

1. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है व्यक्ति स्वार्थवाद एवं भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे में छात्रों को निर्देशन प्रदान करके उसे समाज का उत्तरदायी सदस्य बनाना आवश्यक है।
2. सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के पतन होने की स्थिति में निर्देशन द्वारा इन मूल्यों एवं आदर्शों को छात्रों में जाग्रत किया जाता है।
3. वर्तमान समय में छात्रों द्वारा अन्य पाश्चात्य संस्कृतियों को ग्रहण करने से रोकने के लिए तथा अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए निर्देशन आवश्यक माना जाता है।
4. जातिवाद के जहर से छात्रों को मुक्त करने के लिए तथा जातीय विद्वेष को समप्त करने के लिए छात्रों को निर्देशन प्रदान करना आवश्यक है।
5. परिवार एवं समाज में बालक—बालिकाओं एवं स्त्री—पुरुषों के मध्य जो भी विभेद देखा जाता है उसे समाप्त करने के लिए निर्देशन आवश्यक माना जाता है।
6. धर्म के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए तथा धर्म का जीवन में महत्व बताने के लिए छात्रों को निर्देशन देना आवश्यक है जिससे धार्मिक समरसता उत्पन्न हो सके,

### मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व—



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. छात्रों से विद्यालय में तथा कक्षा-कक्ष में समायोजित करने के लिए निर्देशन प्रदान किया जाता है।
2. छात्रों के व्यक्तित्व से नकारात्मक एवं आदर्शवादी मूल्यों को विकसित करने के लिए निर्देशन आवश्यक है।
3. संवेगात्मक विकास की प्रक्रिया पर ही निर्भर करती है इसमें अभिभावकों एवं छात्रों को निर्देशन प्रदान करके छात्रों का सर्वोत्तम संवेगात्मक विकास किया जाता है।
4. बालापराध को रोकने के लिए छात्रों के बालापराध सम्बन्धी कारणों को जाना जाता है तथा उसको निर्देशन प्रदान करके स्वानुशासित किया जाता है।
5. वर्तमान में शिक्षक द्वारा छात्रों पर मनोवैज्ञानि सिद्धांतों एवं परीक्षण का उपयोग करने के लिए छात्रों का निर्देशन प्रदान करना आवश्यक माना जाता है।

#### **भारतीय विद्यालयों में निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व—**

1. छात्रों में वैयक्तिक भिन्नता के कारण विद्यालयों में प्रत्येक छात्र को पृथक रूप से निर्देशन की आवश्यकता है,
2. शिक्षा के उद्देश्यों में व्यापकता का समावेश होने के कारण निर्देशन आवश्यक है।
3. विषयों एवं पाठ्यक्रम के विविध स्वरूपों से उत्पन्न भ्रम को दूर करने के लिए निर्देशन प्रदान करना छात्रों के लिए आवश्यक है।
4. विद्यालयों के नवीन स्वरूप एवं उद्देश्यों पर आधारित विद्यालयों की स्थापना के कारण निर्देशन प्रदान करना छात्रों के लिए आवश्यक माना जाता है।

### परामर्श की विशेषताएँ—

1. परामर्श दो व्यक्तियों का सम्पर्क होता है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को सहायता प्रदान करके समस्या समाधान करता है।
2. परामर्श सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप में देखा जाता है।
3. व्यक्तिगत परामर्श में छात्र की व्यक्तिगत शैक्षिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है, इसमें अधिक समय लगता है।
4. छात्र की संख्या अधिक होने पर सभी छात्रों को उनकी योग्यता, रुचि एवं क्षमता के आधार पर विभाजित करके निर्देशन प्रदान किया जाता है,
5. परामर्श की प्रक्रिया को निर्देशन की विधि के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि परामर्श द्वारा भी लगभग वही कार्य किए जाते हैं जो निर्देशन द्वारा किए जाते हैं।

### परामर्श की प्रक्रिया को सोपान—

1. सर्वप्रथम परामर्श प्रार्थी की समस्या का ज्ञाप परामर्शदाता को करना चाहिए जिससे वह उसके अनुरूप परामर्श प्रक्रिया निर्धारित कर सके।
2. परामर्श प्रार्थी की योग्यता के स्वरूप का ज्ञान भली प्रकार करके ही परामर्शदाता को परामर्श की प्रक्रिया का स्वरूप निर्धारित करना चाहिए।
3. परामर्श प्रार्थियों की योग्यता स्तर एवं उनकी आवश्यकता के आधार पर समूह विभाजन करके परामर्श की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी चाहिए।
4. परामर्श प्रार्थी की परिवार, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों का ज्ञान करके ही परामर्श प्रारम्भ करना चाहिए।
5. परामर्श प्रारम्भ करने से पूर्व उपलब्ध संसाधनों पर भी विचार करना चाहिए क्योंकि संसाधनों के आधार पर परामर्श का स्वरूप निर्धारित होता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

6. परामर्श की प्रक्रिया का उद्देश्य सरल से कठिन की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर सहोना चाहिए जिससे छात्रों को अरुचि न हो सके।
7. परामर्श के पश्चात् मूल्यांकन की प्रक्रिया का प्रारम्भ होना चाहिए जिसमें जो भी त्रुटियाँ परामर्शदाता द्वारा की गई हैं उनकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए,



## अध्याय 28

### अभिक्षमता एवं उसका मापन

प्रस्तुत अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

#### अभिक्षमता की विशेषताएँ—

1. अभिक्षमता का सम्बन्ध शारीरिक प्रक्रिया से भी होती है। कुछ छात्रों में शारीरिक अभिक्षमता सामान्य से अधिक होती है।
2. अभिक्षमता का सम्बन्ध मानसिक शक्तियों से होता है, चिन्तन, तर्क एवं विश्लेषण आदि प्रक्रिया मानसिक अभिक्षमता को प्रदर्शित करती हैं।
3. अभिक्षमता का प्रदर्शन सीखने की तैयारी के रूप में छात्रों को उत्सुकता एवं जिज्ञासा सम्बन्धी गतिविधियों से प्रदर्शित होता है।
4. अभिक्षमता प्रशिक्षण प्रदान करने के पश्चात् छात्रों की उस क्षेत्र में योग्यता प्रदर्शन के आधार पर ज्ञात की जाती है।
5. अभिक्षमता जन्मजात या अर्जित रूप में देखी जाती है। इसके दोनों ही रूप छात्रों में देखे जाते हैं।
6. अभिक्षमता में विविध प्रकार की योग्यताओं का समूह होता है।
7. अभिक्षमता की स्थिति भिन्नता पर निर्भर करती है।
8. अभिक्षमता को विविध गुणों एवं योग्यता के समन्वयन की प्रक्रिया माना जाता है।

#### सामान्य या विभेद अभिक्षमता वाले परीक्षण—

1. **यांत्रिक अभियोग्यता वाले परीक्षण—** मिनेसोटा यांत्रिक असेम्बली, मिनेसोटा स्थानगत सम्बन्धी परीक्षण, संशोधित मिनेसोटा पेपर फार्म बोर्ड, यांत्रिक समबोध परीक्षण, यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण आदि,

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. **लिपिक अभियोग्यता परीक्षण**— थर्स्टन का मानसिक अभियोग्यता परीक्षण, मिनेसोटा लिपिक अभिक्षमता परीक्षण, कॉर्पोरेशन विभेद अभिक्षमता परीक्षण, सामान्य अभिक्षमता बैटरी परीक्षण, सामान्य लिपिक अभिक्षमता परीक्षण तथा फ्लेनागन अभिक्षमता परीक्षण आदि,

### विशिष्ट क्षेत्रों के अभिक्षमता परीक्षण—

1. सीशोर परीक्षण, विच की विभेदता, तीव्रता की विभेदता, समय अन्तर की विभेदता, लय का निर्माण, ध्वनि का निर्माण तथा संयुक्त स्मृति आदि ।
2. **कला**— ग्रेव डिजाइन निर्णय परीक्षण, मायर कला निर्माण परीक्षण, नोवर कला योग्यता परीक्षण आदि,
3. **अन्य परीक्षण**— चिकित्सा अभियोग्यता परीक्षण, कानून अभियोग्यता परीक्षण, अध्यापक अभियोग्यता परीक्षण,
4. **विज्ञान तथा तकनीक**— स्टेण्डर्ड विज्ञान अभिक्षमता परीक्षण, इंजीनियरिंग अभिक्षमता परीक्षण एवं मिनेसोटा इंजीनियरिंग अभिक्षमता परीक्षण आदि ।

### अभिक्षमता परीक्षण एवं मापन के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व—

छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए उपयोगी, निर्देशन एवं परामर्श कार्य में आवश्यकता, अभिभावकों के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण, शिक्षक के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण, विद्यालयी व्यवस्था के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण, छात्रों के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण समस्या समाधान की योग्यता का छात्रों के विकास, सामाजिक विकास का उद्देश्य एवं व्यावसायिक विकास का उद्देश्य आदि ।



## अध्याय 29

### स्मृति एवं विस्मृति

#### स्मृति की विशेषताएँ—

1. स्मृति के अन्तर्गत पहले से सीखी हुई एवं संग्रहीत की गई घटनाओं को प्रत्यास्मरण की प्रक्रिया द्वारा याद किया जाता है,
2. स्मृति एक ज्ञानात्मक अनुभूतिपूर्ण घटनाएँ होती है जिसको पुनः स्मरण करके उससे सम्बन्धित तथ्यों एवं अन्य घटनाओं को सरलता से याद किया जा सकता है।
3. स्मृति को एक स्मरण करने वाली शक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है जोकि संचित अनुभवों एवं सूचनाओं को आवश्यकता के अनुरूप याद किया जाता है तथा अधिगम प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है।
4. स्मृति एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है। जिसके अन्तर्गत आत्म का एवं सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में याद किया जाता है।
5. स्मृति एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है। जिसके अन्तर्गत आत्म का एवं सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में याद किया जाता है,
6. स्मृति मानसिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है क्योंकि उच्च बौद्धिक क्षमता वाले तथा प्रखर बुद्धि छात्रों में स्मृति की प्रक्रिया तीव्र पाई जाती है।
7. स्मृति के माध्यम से व्यक्ति अतीत की घटनाओं एवं अनुभवों का उपयोग वर्तमान की समस्याओं के समाधान एवं वर्तमान विकास में करता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

8. स्मृति को विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि स्मृति के आधार पर ही शैक्षिक, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक गतिविधियों का सृजन एवं विकास सम्भव होता है।

### स्मृति की अवस्थाएँ—

1. अधिगम स्मृति की प्रमुख अवस्था है, अधिगम की गई समस्त सूचनाएँ संग्रहीत होती हैं जिन्हें आवश्यकता के अनुरूप स्मृति द्वारा पुनः प्राप्त किया जाता है।
2. स्मृति की प्रक्रिया में धारणा शक्ति का प्रमुख स्थान है, धारणा शक्ति से सूचनाओं का संग्रहण स्थायी रूप में होता है। जिसे आवश्यकता के अनुरूप स्मृति के माध्यम से ज्ञान किया जा सकता है, धारण शक्ति प्रत्येक छात्र में पृथक्-पृथक् होती है।
3. प्रत्यास्मरण की प्रक्रिया में जो भी संचित सूचनाएँ हैं उनको पुनः स्मरण किया जाता है। जिसकी प्रत्यास्मरण की प्रक्रिया सर्वोत्तम है उसकी स्मृति को भी उत्तम माना जाता है।
4. संज्ञान या पहचान के अन्तर्गत किसी घटना, व्यक्ति या तथ्य को देखकर हमकी पुनः उससे सम्बन्धित गतिविधियों का ज्ञान होता है। यह स्मृति की चतुर्थ अवस्था है।

### स्मृति के प्रकार—

1. आदत जन्य स्मृति में रटने की प्रवृत्ति की अधिकता पायी जाती है। इसे स्टेन स्मृति के नाम से जाना जाता है, इसमें अंकगणित एवं पहाड़े याद करने से सम्बन्धित स्मृति को सम्मिलित किया जाता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. प्रतिभा संयुक्त स्मृति में रुचि का महत्वपूर्ण स्थान होता है, इससे स्मृति चिह्नों का समावेश होता है, इसका शिक्षा में स्थानान्तरण सम्भव नहीं होता है तथा इसमें यांत्रिकता का समावेश नहीं होता है।
3. सक्रिय स्मृति में पूर्व की विविध प्रकार की घटनाओं को याद किया जाता है, जैसे परीक्षा समय में बालक अपनी सक्रिय स्मृति के माध्यम से प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करता है।
4. निष्क्रिय स्मृति के अन्तर्गत बिना किसी प्रयास के तथा आवश्यकता के बिना भी पूर्व सुखद एवं दुःखद अनुभव याद आते रहते हैं।
5. तात्कालिक स्मृति के अन्तर्गत छात्र याद किए गए तथ्यों एवं नियमों को एक निश्चित समय के बाद याद कर लेते हैं। परन्तु दीर्घ समय होने पर उसको याद नहीं कर पाते हैं।
6. तार्किक स्मृति के अन्तर्गत विविध प्रकार की संचित सूचनाओं को विविध क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है, जैसे गणितीय क्रियाओं को विज्ञान में प्रयोग किया जाना इस स्मृति का कार्य है।
7. स्थायी स्मृति में छात्रों की धारणा शक्ति अधिक पाई जाती है, इसमें संचित सूचनाओं को अधिक समय तक याद रख जाता है तथा आवश्यकता के अनुरूप प्रत्यास्मरण किया जाता है,
8. यांत्रिक स्मृति में सीखे हुए ज्ञान को बिना किसी प्रयास के सूचनाओं एवं गतिविधियों का स्मरण किया जाता है तथा उसका कार्य व्यवहार में प्रयोग किया जाता है।

### अच्छी स्मृति की विशेषताएँ—

1. अच्छी स्मृति उसे माना जाता है जोकि किसी प्रकरण के अधिगम में तथा कौशल अधिगम में सहयोग प्रदान करती है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. अच्छी स्मृति में धारणा का स्थायित्व होता है, जिसके आधार पर उसका उपयोग आवश्यकता के अनुरूप किया जाता है, यह स्थायी रूप में होती है।
3. अच्छी स्मृति उसे माना जाता है जोकि प्रत्यास्मरण करने पर पूर्णतः क्रमबद्ध, सुसंगठित एवं पूर्ण रूप से प्राप्त होती है तथा उपयोगी सिद्ध होती है।
4. अच्छी स्मृति उसे माना जाता है जोकि ज्ञान के विस्तार में, अधिगम प्रक्रिया में तथा कौशल विकास की प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होती है।
5. अच्छी स्मृति का निर्माण उस स्थिति में ही सम्भव होता है जिसमें निरर्थक तथ्यों को भुला दिया जाता है तथा सार्थक एवं उपयोगी तथ्यों का समावेश किया जाता है।

### स्मृति को प्रभावित करने वाले तथ्य—

1. जिन छात्रों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सर्वोत्तम होता है उन छात्रों की स्मृति अच्छी होती है, विपरीत स्थिति में स्मृति पर विपरीत प्रभाव होता है।
2. किसी भी तथ्य को सीखने पर सूचनाओं के संग्रहीत करने में प्रेरणा प्रदान की जाती है, तब वे स्थायी रूप में स्मृति तत्वों में समावेशित होते हैं, इसके विपरीत स्थिति में स्मृति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
3. जिस प्रकरण, तथ्य एवं सूचना को ग्रहण करने में छात्रों की रुचि होती है, उस प्रकरण को स्थायी रूप को धारण किया जाता है, रुचि विहीन सूचनाओं को प्रायः विस्मृत कर दिया जाता है।
4. उपयोगी विषयों का अधिगम स्थायी रूप से किया जाता है तथा उनको स्मरण भी सरलता से किया जा सकता है, अनुपयोगी विषयों को अस्वीकार या विस्मृत कर दिया जाता है।

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

5. शिक्षक द्वारा सार्थक वैज्ञानिक एवं उचित अधिगम गतिविधियों का उपयोग करके अधिगम कराया जाता है तब स्मृति सर्वोत्तम होती है, इसके विपरीत स्थिति में अधिगम एवं स्मृति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
6. साहचर्य या अनुबंधन नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर पूर्व अनुभवों को नवीन अनुभवों से जोड़ने पर स्मृति श्रेष्ठ होती है, विपरीत स्थिति में स्मृति पर कुप्रभाव पड़ता है।
7. कक्षा—कक्ष के सृजनात्मक, प्रजातान्त्रिक एवं शैक्षिक वातावरण में स्मृति श्रेष्ठ बनती है, इसके विपरीत स्थिति में स्मृति निम्न स्तरीय बन जाती है।
8. परिवार एवं समाज का वातावरण सृजनात्मक, लोकतान्त्रिक एवं आदर्शों पर आधारित होता है तब छात्रों का शारीरिक एवं मानसिक विकास सर्वोत्तम रूप में सम्पन्न होता है जिससे छात्रों को स्मृति श्रेष्ठ बनती है इसके विपरीत स्थिति में स्मृति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
9. अभ्यास के माध्यम से स्मृति स्थायी रूप प्राप्त करती है, अभ्यास के अभाव में स्मृति प्रत्यास्मरण के समय तथ्यों को स्मरण कराने में असमर्थ होती है।
10. सीखने में यदि छात्रों द्वारा तत्परता का प्रदर्शन किया जाता है तो उससे जो सूचनाएँ एवं तथ्य संग्रहीत होते हैं वे स्थायी रूप में होते हैं, इसके विपरीत स्थिति में स्मृति पर विपरीत प्रभाव देखा जाता है।

### विस्मृति की विशेषताएँ—

1. विस्मृति को मानसिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, मानसिक अस्वस्थता विस्मृति सम्बन्धी दोषों को जन्म देती है।



download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

2. विस्मृति के माध्यम से छात्रों द्वारा दुःखद अनुभवों को भूला जाता है जिससे ये वरदान के रूप में मानी जाती है।
3. जब किसी छात्र को उसके उद्देश्य प्राप्ति में विस्मृति बाधा के रूप में उपस्थित होती है तब इसे अभिशाप माना जाता है।
4. विस्मृति को रोग के रूप में स्वीकार किया जाता है, जब वह छात्र के कार्य व्यवहार एवं उपयोगी गतिविधियों में बाधा उत्पन्न करती है।
5. विस्मृति का ज्ञान उस समय होता है जब प्रत्यास्मरण के समय या उपयोग के समय आधी अधूरी सूचनाएँ स्मरण में आती हैं।
6. विस्मृति एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में होती है क्योंकि सूचनाओं के संग्रहण एवं प्रत्यास्मरण की प्रक्रिया के बाद ही विस्मृति के स्तर का ज्ञान होता है।
7. विस्मृति बाधक प्रक्रिया के रूप में मानी जाती है क्योंकि जब आवश्यक तथ्यों एवं सूचनाओं का विस्मरण होता है तब छात्र का विकास अवरुद्ध हो जाता है।
8. विस्मृति की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, अनुपयोगी एवं अनावश्यक तथ्यों का विस्मरण होता है तथा नवीन तथ्यों एवं सूचनाओं का समावेश होता है।
9. विस्मृति की प्रक्रिया संवेगात्मक अस्थिरता में अधिक दृष्टिगोचर होती है तथा संवेगात्मक स्थिरता में विस्मृति की स्थिति कम दृष्टिगोचर होती है।
10. विस्मृति की स्थिति शारीरिक अवस्था एवं कुपोषण आदि की स्थिति में सर्वाधिक रूप में उत्पन्न होती है जबकि स्वस्थ शरीर में विस्मृति की स्थिति कम देखी जाती है।

**विस्मृति के कारण—**

download more : [http://t.me/Edu\\_Books](http://t.me/Edu_Books)

1. मानसिक मंदता के कारण ही विस्मृति की स्थिति उत्पन्न होती है, मानसिक मंद छात्रों में भूलने की आदत होती है तथा सीखने की क्षमता कम होती है।
2. शारीरिक चोट यदि गहरी है तो भी छात्रों में विस्मृति के दोष उत्पन्न हो जाते हैं, इस प्रकार के विस्मृति दोषों को चिकित्सा के माध्यम से दूर किया जा सकता है।
3. संवेगात्मक अस्थिरता में विस्मृति दोष अधिक उत्पन्न होते हैं, जबकि संवेगात्मक स्थिरता के उत्पन्न होने पर विस्मृति दोष उत्पन्न नहीं होता है।
4. कुपोषण के कारण छात्रों का शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है जिससे उनमें विस्मृति दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जबकि इसके विपरीत स्थिति में विस्मृति दोष उत्पन्न नहीं होते हैं।
5. अभ्यास के अभाव में विस्मृति दोष उत्पन्न होते हैं, जबकि निरन्तर अभ्यास करने पर विस्मृति दोष उत्पन्न नहीं होता है।
6. उपयोगिता के अभाव में भी छात्रों द्वारा सीखे गए ज्ञान को विस्मृत कर दिया जाता है जबकि उपयोगी ज्ञान को छात्रों द्वारा प्रत्यास्मरण के समय स्मरण कर लिया जाता है।
7. रुचि का अभाव भी छात्रों को सूचनाओं को भूलने के लिए विवश करता है जबकि रुचिपूर्ण सूचनाओं एवं तथ्यों को छात्र अधिक समय तक याद रखते हैं।
8. उचित वातावरण में कराया गया अधिगत दीर्घ समय तक धारण किया जाता है उसे विस्मृत नहीं किया जाता है जब कि विपरीत स्थितियों में विस्मृति उत्पन्न होती है।

# Free Download All Subject PDF

आप नीचे दिये Link से संबंधित Subject की सभी PDF को Download कर सकते हैं



## Nitin Gupta Notes



## Current Affairs PDF



## Maths PDF



## Reasoning PDF



## History PDF



# Gepgraphy PDF



# Economics PDF



# Polity PDF



# Science PDF



# Computer PDF



# Environment PDF



# General Hindi PDF



# General English PDF



# Child Development and Pedagogy PDF



# MP GK PDF



# UP GK PDF



# Rajasthan GK PDF